

आर.एन.आई. नं. 3653/57 शक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17  
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 मार्च, 2015  
वर्ष : 73 ★ अंक : 03 ★ मूल्य : 10 रु.  
डाक प्रेषण तिथि 10 मार्च, 2015 ★ चैत्र, 2071

ISSN  
2249-2011

हिन्दी मासिक

# जिनवाणी



मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।  
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग  
के साधन भी मनुष्य की इच्छा  
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने  
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन  
को बिगाड़ने वाली है,  
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,  
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :  
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

Jai Guru Heera

Jai Guru Hasti

Jai Guru Maan

॥ जैनं जयति शासनम् ॥

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है ।  
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ॥

*DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.*

*timeless jewels  
unmatched quality  
flawless craftsmanship*



**Dharamchand Paraschand Exports**

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.

t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000

f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

॥ महावीराया नमः ॥

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा

जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

With Best Compliments From : -आचार्य श्री हीरा



## S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,

Bandra (E), MUMBAI-400051 (MAH.)

Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429

Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872

E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera

Jai Guru Hasti

Jai Guru Maan

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

**Basant Jain & Associates, Chartered Accountants**

**BKJ & Associates, Chartered Accountants**

**BKJ Consulting Private Limited**

**Megha Properties Private Limited**

**Ambition Properties Private Limited**

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

**बसंत के. जैन**

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई

ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

# जिनवाणी हिन्दी-मासिक

- ✚ संरक्षक  
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ  
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763
- ✚ संस्थापक  
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़
- ✚ प्रकाशक  
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल  
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,  
जयपुर-302003(राज.)  
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753
- ✚ प्रधान सम्पादक  
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन  
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,  
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)  
फोन : 0291-2626279  
E-mail : jinvani@yahoo.co.in  
E-mail : editorjinvani@gmail.com
- ✚ सह-सम्पादक  
नौरतन मेहता, जोधपुर  
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर
- ✚ भारत सरकार द्वारा प्रदत्त  
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57  
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17  
ISSN 2249-2011



दुपरिच्छवा इमे कामा,  
नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं।  
अह संति सुखवा साहू,  
जो तरंति अतरं वणिवा व।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.6

दुस्त्यज हैं ये काम-भोग जो,  
न सहज त्याज्य कायरजन से।  
पोतवणिकसम साधु सुव्रत जो,  
तरते दुस्तर भवसागर से।।

मार्च, 2015

वीर निर्वाण संवत्, 2541

चैत्र, 2071

वर्ष 73

अंक 3

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986

IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापत्री (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता

'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

# विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	अपरिग्रह का प्रयोजन	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	11
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
प्रवचन-	महावीर पर सच्ची आस्था	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
	संघर्ष से होता है उत्कर्ष	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	16
शोध-चिन्तन-	सेवा : एक सदगुण	-उपाध्याय श्री अमरमुनिजी	20
प्रासङ्गिक -	भगवान महावीर की साधना	-श्री दुलीचन्द जैन	28
	महावीर और अनेकान्त	-प्रो. सुमेरचन्द जैन	37
	जीवन नैया के माँझी हो आप	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	45
अध्यात्म-	दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	35
अंग्रेजी-स्तम्भ-	ŚRĀVAKĀCĀRA AND PANCĀCĀRA (2) -Dr. H. Kushal Chand		40
	Acharya Shree : The Driving Change.....-Sh. Devendra Nath Modi		91
संवाद-	जिनशासन की दीक्षा (3)	-आचार्य विजय योगतिलकसूरिजी म.सा.	48
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (92)	-श्री धर्मचन्द जैन	54
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (8)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	58
युवा-स्तम्भ-	दान देने का मैथ्स और केमेस्ट्री	-संकलित	64
धारावाहिक-	लग्न की वेला (11)	-आचार्य उमेशमुनिजी म.सा.	71
नाटी-स्तम्भ-	मर्यादा तोड़ न देना	-सुश्री पूजा जैन	76
स्वास्थ्य-विज्ञान-	महावीर का स्वास्थ्य चिन्तन	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	78
बाल-स्तम्भ -	मीठी वाणी बोलिए	-प्रवर्तक श्री गणेशमुनिजी शास्त्री	88
चिन्तन/विचार-	संतोषी ही सबसे बड़ा धनी	-श्री रमेशचन्द कनेरिया	66
	पता नहीं कब सौ दिन पूरे हो जायें	-श्री राजकुमार नवलखा	65
	क्रोध के हैं अनेक कारण	-श्री जसराज देवडा धोका	70
	सामायिक : समर्पण : समभाव	-डॉ. लक्ष्मीचन्द जैन	87
	तीन आँसू	-श्री अरविन्द जैन	119
कविता/गीत-	चिन्ता, चिता से सीख	-श्री महावीर प्रसाद जैन	19
	जीवन बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	47
	आत्मिक सुख मिलता है	-श्री योगेशबाबू जैन	57
	कहाँ से उनके गौरव का गान करना करूँ शुरु	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	67
	मनःशुद्धि से समता पाएँ, समता से निर्वाण	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	77
	जिनवाणी पत्रिका	-श्रीमती पूजा जैन	90
	दिल से दुआ दो, सदा खुश रहें बेटियाँ	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	92
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	96
परिणाम-	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड	-संकलित	99
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	103
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	120

## अपरिग्रह का प्रयोजन

❖ डॉ. धर्मचन्द्र जौन

पर पदार्थों के प्रति आसक्ति एवं ममत्व न हो- यही भगवान् महावीर के अपरिग्रह सिद्धान्त का मूल लक्ष्य है। इस सिद्धान्त को जीवन में आत्मसात् करने पर शान्ति, समता एवं प्रसन्नता प्राप्त होती है। निराशा, असंतोष, एवं नीरसता के बादल छूट जाते हैं। सदैव प्रेम, दया एवं करुणा की अजस्रधारा प्रवाहित होने लगती है। धन-सम्पत्ति, भूमि-भवन, वस्तु-व्यक्तियों आदि के प्रति अपने स्वार्थ हेतु जो रागात्मक लगाव होता है वह आसक्ति है। जिससे आसक्ति होती है, उसका वियोग हमें असह्य होता है। जिसके प्रति आसक्ति है, उसके प्रति अपना स्वामित्व मानना ममत्व है। यह मेरा भवन है, यह मेरी भूमि है, यह मेरा बैंक-बैलेंस है, यह मेरा नौकर है, यह मेरा भव्य कार्यालय है आदि ममत्वबुद्धि के सूचक वाक्य हैं। मेरेपन की बुद्धि छूटने पर ममत्व छूटता है, अतः आचारांग में कहा गया है- 'जे म्माइय-मतिं जहाति, से जहाति म्माइयं।' (आचारांगसूत्र, 1.2.6, सूत्र 156) अर्थात् जो ममत्व या परिग्रह की बुद्धि का त्याग करता है वह परिग्रह का त्याग करता है। जब तक ममत्वबुद्धि रहती है तब तक व्यक्ति के चित्त में संसार रहता है तथा वह उसके चिपकाव एवं बन्धन से रहित नहीं हो पाता है।

‘ईशावास्योपनिषद्’ (मंत्र 1) में भी आसक्ति को छोड़ने हेतु प्रेरित करते हुए कहा है-

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः, मा गृह्यः कस्यस्विद्धनम्॥

अर्थात् इस संसार के पदार्थों का त्याग भाव से भोग करो तथा किसी के धन के प्रति आसक्ति मत बनो। त्याग भाव से भोग करने का अर्थ है- आसक्ति त्याग अथवा अपरिग्रह। त्यागभाव के कारण भोग्य पदार्थों के साथ सम्बन्ध स्थापित नहीं होता, फलस्वरूप परिग्रह नहीं होता। यही भाव 'भगवद्गीता' में भी है। श्रीकृष्ण फल की कामना से रहित होकर कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। फल की कामना ही आसक्ति को जन्म देती है और उससे रहित होने पर जो कार्य किया जाता है वह बाँधता अथवा जकड़ता नहीं है। प्राणी तनावग्रस्त नहीं होता, वह परिग्रह से परे रहता है। डॉ. दयानन्द भार्गव ने अपरिग्रह का अर्थ करते हुए कहा है- "अपरिग्रह का एक अर्थ यह है कि मनुष्य अपने आपको भोग्य पदार्थों का स्वामी न समझे। स्वामित्व का अर्थ है- दूसरे को अपना दास बनाने की इच्छा कि वह हमारे अनुकूल चले। यदि वह वैसा नहीं करता है तो हमें दुःख होता है। अपरिग्रह का दूसरा अर्थ है- हम

परिग्रह के गुलाम न हो जाएं। परिग्रह की गुलामी का अर्थ है- पराधीनता। अपरिग्रह का अर्थ है स्वतन्त्रता। पदार्थों का उपयोग करें, क्योंकि पदार्थों के बिना जीवनयात्रा सम्भव नहीं है, किन्तु पदार्थों के गुलाम न बनें।” (श्रीमद्भगवद्गीता विपुलभाष्य) डॉ. सागरमल जैन भी यही बात कहते हैं कि हमें वस्तुओं के प्रयोग का अधिकार है, उनके स्वामित्व का नहीं।

‘कठोपनिषद्’ में एक कथा आती है, जिसमें यम से नचिकेता आत्मा की अमरता के विषय में जिज्ञासा प्रकट करता है और जानना चाहता है कि आत्मा क्या है? यम नचिकेता की परीक्षा लेने हेतु उत्तर को टालते हुए धन-सम्पत्ति, भौतिक सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य का प्रलोभन देता है। वह कहता है- “हे नचिकेता! तुम सौ-सौ वर्षों तक जीने वाले पुत्र और पौत्रों को मांग लो। गाय, भेड़, हाथी, स्वर्ण, घोड़े और विशाल भू-मण्डल के साम्राज्य को मांग लो तथा इन सबको भोगने के लिए सैकड़ों वर्षों तक जीवित रहो।” (कठोपनिषद्, 1.1.13) किन्तु नचिकेता इनकी यथार्थता को जानता है और कहता है- ‘न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।’ (कठोपनिषद्, अध्याय 1, वल्ली 1, मंत्र-26) अर्थात् मनुष्य कभी भी धनादि द्वारा तृप्त नहीं किया जा सकता। वह कहता है मुझे आत्मा की अमरता के रहस्य को जानना है। ये सब धनादि तो विनश्वर हैं।

धन एवं पदार्थों के संग्रह में लगे रहने में एक दोष यह है कि व्यक्ति की अन्य मनुष्यों एवं प्राणियों के प्रति संवेदनशीलता प्रायः समाप्त हो जाती है। वह लोभ की मूर्च्छा के कारण अपनी कामनाओं की पूर्ति को ही सर्वोच्च मानता है तथा अन्य प्राणियों के सुख-दुःख की परवाह नहीं करता। वह दूसरों का शोषण करके भी धनवानों की श्रेणी में उच्चतर स्थान प्राप्त करना चाहता है। इस मनोवृत्ति के कारण दूसरों की तो हानि होती ही है, किन्तु स्वयं में भी क्रूरता एवं हृदयहीनता का प्रभाव बढ़ता जाता है। क्रूर एवं हृदयहीन व्यक्ति दूसरों के दुःख में दुःखी नहीं होता तथा वह सबके प्रेम से वंचित होता है। वह सम्पत्तिशाली होकर भी दूसरों से प्रेम पाने में विपन्न हो जाता है। मानवीय प्रेम सम्बन्ध त्याग एवं समर्पण पर जीवित रहते हैं। क्रूर एवं हृदयहीन व्यक्ति स्वयं की सुख-लोलुपता एवं परिग्रह भावना में इतना अन्धा होता है कि वह मानवीय प्रेम भावना का आदर नहीं कर पाता है। वह मौज-मस्ती के लिए तो बड़ी होटलों और क्लबों में जाता है तथा विवाह आदि समारोह में धन का प्रदर्शन कर रुतबा जमाना चाहता है, किन्तु दूसरे की पीड़ा को दूर करने में वह संवेदना शून्य दिखाई देता है। धन की लालसा वाले परिवार प्रायः कलह में जीते हैं, क्योंकि उनमें धन का अभिमान और सुविधा की लिप्सा का स्वार्थ सर्वोपरि होता है।

धनिक व्यक्ति को धन अपनी सुरक्षा का एवं खुशहाली का हेतु दिखाई देता है। वह समझता है कि मुझे दुनिया में जो कुछ मिलना है इसी धन-सम्पदा से मिलेगा, इस तरह का

भ्रम भी वह पाल लेता है। यह भ्रम उसे भटकाता है तथा कदाचित् ऐसी दुःखद परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं कि वह धन से उन पर विजय प्राप्त नहीं कर पाता है। उसे हताशा एवं निराशा का अनुभव होता है। उदार व्यक्ति प्रायः डिप्रेशन का शिकार नहीं होता। वह बुद्धि का उपयोग धन के अर्जन एवं रक्षण में करके भी पीड़ितों एवं जरूरतमन्दों की मदद के लिए तत्पर रहता है, इससे उसे भीतरी सुख का अनुभव होता है। उस सुख का रस उसे डिप्रेशन से बचाये रखता है। भावों के स्तर पर मनुष्य की स्वस्थता अनिवार्य है और वह स्वस्थता, उदारता, प्रेम, सहानुभूति, त्याग आदि सकारात्मक भावों से सम्भव है।

मनुष्य यह जाने कि उसको जीने के लिए कितनी एवं किन वस्तुओं की आवश्यकता है। इसका ठीक से मूल्यांकन कर वह अपनी इच्छाओं को सीमित कर सकता है। जिस प्रकार वर्तमान काल में कम सन्तान को सुख का एक आधार माना गया है उसी प्रकार इच्छाओं की सीमा भी जीवन की यात्रा को अपेक्षाकृत सुखी बना देती है। अधिक इच्छाएँ मनुष्य को अशान्त बनाती हैं। इच्छाओं पर नियन्त्रण भी ज्ञानपूर्वक होना चाहिए। यह जीवन सीमित है, असीमित भोगेच्छाओं को पालना दुःख को आमन्त्रण देना है। इच्छा की पूर्ति के पश्चात् मनुष्य को जो सुख की प्रतीति होती है, वस्तुतः वह इच्छा या कामना का अभाव होने से होती है। जिन सन्त-महात्माओं को पदार्थ संग्रह की कामना नहीं है, वे उस गृहस्थ की अपेक्षा सुखी देखे जाते हैं, जो कामनाओं के जंजाल में फंसा हुआ है। अतः सुख से जीने के लिए इच्छाओं का परिमाण करना आवश्यक है। अधिक इच्छाओं वाले (महेच्छ) एवं अल्प इच्छा वाले (अल्पेच्छ) मनुष्य में भी महद् अन्तर होता है। यहाँ उनके जीवन के कतिपय अन्तर प्रस्तुत हैं-

### अधिक इच्छाओं वाले या परिग्रही मानव का जीवन

1. तनावग्रस्त एवं अशान्त
2. अपने समकक्ष जनों के प्रति ईर्ष्या-द्वेष से युक्त
3. प्राप्त सुख-साधनों से असन्तुष्ट, अतः उनसे भी सुखी नहीं
4. रक्तदाब (Blood Pressure) मधुमेह (Diabetes) आदि रोगों से आक्रान्त
5. पारिवारिक कलह एवं अशान्ति
6. दूसरों को कष्ट देकर जीवनयापन
7. आर्थिक असन्तुलन
8. अनैतिकता पूर्वक अर्जन को प्रोत्साहन
9. निष्ठुरता एवं संवेदनहीनता में वृद्धि
10. पर्यावरण-प्रदूषण को बढ़ावा
11. अपराध में वृद्धि

## अल्प इच्छाओं वाले या परिग्रह-परिमाणकर्ता मानव का जीवन

1. अपेक्षाकृत तनावरहित एवं शान्त
2. अपने समकक्षों के प्रति प्रेमभाव, महेच्छों के प्रति भी ईर्ष्या-द्वेष नहीं
3. प्राप्त सुख-साधनों से सन्तुष्ट
4. अनेकविध रोगों से मुक्त
5. परिवार में अपेक्षाकृत शान्ति एवं सौहार्द का वातावरण
6. दूसरों को कम से कम कष्ट देते हुए जीवन-यापन
7. आर्थिक अभाव की अनुभूति न्यून
8. नैतिकतापूर्वक अर्जन सम्भव
9. करुणा एवं संवेदनशीलता
10. पर्यावरण संरक्षण
11. अपराध में न्यूनता

निर्धनता एवं अपरिग्रह का सम्बन्ध वस्तुओं के संग्रह या असंग्रह से नहीं है। अपरिग्रही होने का तात्पर्य निर्धन या दरिद्र होना नहीं है। यदि ऐसा हो तो सभी पेड़-पौधे, कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी आदि निर्धन होने से अपरिग्रही कहे जायेंगे। (दुःखरहित सुख, पृ.172) सभी भिखारी निर्धन होने से अपरिग्रही की श्रेणि में आ जायेंगे। वस्तुतः जिसने समझ बूझकर पर-पदार्थों के प्रति आसक्ति एवं ममत्व का त्याग किया है वह ही अपरिग्रही की श्रेणि में आता है। गृहस्थ जीवन में निर्धन होना जीवन को संकट में डालना है। यथोचित धन या आजीविका का साधन भी आवश्यक है, किन्तु धन एवं पदार्थों के प्रति जो ममत्व एवं आसक्ति है उसे त्यागने की आवश्यकता है। अपरिग्रह का सिद्धान्त वैभव सम्पन्न व्यक्तियों के लिए जितना हितकर है उतना ही वैभवहीन व्यक्तियों के लिए भी है। एक के पास धन है, दूसरे के पास नहीं है, किन्तु मूर्च्छा या ममत्व दोनों में है। अतः उस मूर्च्छा की विमुक्ति के लिए अपरिग्रह धर्म का उपदेश दोनों व्यक्तियों के लिए समानरूप से उपादेय है। (आंचारांगभाष्यम्, सूत्र-174, पृष्ठ 150)

संक्षेप में यदि कहा जाए तो पर पदार्थों से मानसिक सम्बन्ध जोड़ लेना ही उनका परिग्रह है। पदार्थ, मनुष्य से, उसकी आत्मा से बाहर रहते हैं, किन्तु मनुष्य उनमें अपनी आसक्ति एवं अधिकार स्थापित कर दुःखी होता रहता है, उनमें ही अपनी आत्मा को समझने लगता है। यह भ्रम (मिथ्यात्व) है और यह भ्रम अविवेकपूर्ण है। विवेक की बात तो यह है कि पर-पदार्थों से मानसिक सम्बन्ध केवल माना हुआ होता है। प्राणी चाहे तो उनमें सम्बन्ध न माने। सम्बन्ध न मानते ही वह अपरिग्रही हो जाता है। अपरिग्रही होने के पश्चात् दुःख से मुक्ति मिल जाती है।



## आगम-वाणी

(प्रश्न) अणुप्पेहाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

(उत्तर) अणुप्पेहाए णं आउय-वज्जाओ संतकम्मप्पगडीओ घणियबंधण-बद्धाओ सिद्धिलबंधणबद्धाओ पकरेइ।

दीह-कालदिठइयाओ हस्सकालदिठइयाओ पकरेइ। तिब्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ। बहुपलसग्गाओ अप्पपलसग्गाओ पकरेइ। आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ।

असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ।

अणाइयं च अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं खिप्पामेव वीइवयइ।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, उनतीसवाँ अध्ययन, सम्यक्त्व पराक्रम, 22

अर्थ- प्रश्न- अनुप्रेक्षा से भगवन् जीव को क्या उपलब्धि होती है।

उत्तर- अनुप्रेक्षा से जीव आयुष्य कर्म को छोड़कर गाढ़ बंधनों से युक्त सात कर्म प्रकृतियों को शिथिल बंध वाला करता है, दीर्घ काल की स्थिति वाली कर्म प्रकृतियों को ह्रस्वकाल की स्थिति वाली करता है, तीव्र अनुभाव वाली कर्म प्रकृतियों को मंद अनुभाव वाली तथा बहुप्रदेश वाली कर्म प्रकृतियों को अल्प प्रदेश वाली करता है। आयुष्य कर्म को कदाचित् बांधता है कदाचित् नहीं बांधता। असातावेदनीय कर्म का बार-बार उपचय नहीं करता। अनादि, अनन्त, दीर्घ मार्ग वाले चार गति रूप संसार रूपी कान्तार को शीघ्र ही पार कर लेता है।

विवेचन- स्वाध्याय का एक भेद है- अनुप्रेक्षा। अनुप्रेक्षा का तात्पर्य है 'चिन्तन।' जो स्वाध्याय द्वारा बोध हुआ है उसका अध्यात्म-भावनापूर्वक चिन्तन करना अनुप्रेक्षा है। अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व आदि भावनाओं को भी अनुप्रेक्षा कहा गया है। क्योंकि इन भावनाओं से वैराग्य पुष्ट होता है तथा जीवन में वीतरागता का प्रभाव दृग्गोचर होता है। स्वाध्याय से ज्ञानावरण कर्म का क्षय होता है, ऐसा कहा गया है, किन्तु स्वाध्याय के भेद रूप अनुप्रेक्षा से मात्र ज्ञानावरण ही नहीं आयुष्य कर्म को छोड़कर शेष सभी सातों कर्म प्रकृतियों का प्रगाढ बंधन शिथिल होता है। यह महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि स्वाध्याय का यह भेद कर्म-निर्जरा की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है। इस अनुप्रेक्षा के द्वारा सभी कर्मों की दीर्घ स्थिति ह्रस्व काल की स्थिति में परिणत हो जाती है। (शेषांश पृष्ठ 63 पर)

## विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- मनुष्य को मधुमक्खी की तरह बनना चाहिए न कि मल-ग्रहण करने वाली मक्खी के समान।
- पुत्र की अपेक्षा पुत्रियों में सुशिक्षा और सुसंस्कार इसलिए आवश्यक हैं कि उन्हें अपरिचित घरों में जाना तथा जीवनपर्यन्त वहीं रहना है।
- लड़की यदि सुशीला और संस्कारवती होगी तो परिवार को प्रेम के बल पर अविभक्त और अखण्ड रख सकेगी।
- जो विरोधाग्नि का मुकाबला शान्ति के शीतल जल से करते हैं, वे विरोधी को भी जीत लेते हैं।
- जो ज्ञानी होकर स्वयं जागृत हैं, जड़ पदार्थ उसे अपनी धारा में नहीं बहा सकते हैं।
- ये भौतिक तुच्छ वस्तुएँ साधारण मनुष्य के मन को हिलाकर अशान्त कर देती हैं किन्तु ज्ञानी पर इनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता, उल्टे वह इन्हीं पर अपना प्रभाव जमा लेता है।
- वस्त्राभूषणों की तरह सादगी का भी असर कुछ कम महत्त्व वाला नहीं होता।
- राजमहल का विराट वैभव-प्रदर्शन यदि दर्शकों को अपनी ओर आकृष्ट करता है तो एक सादी पावन कुटिया भी चित्त को आकर्षित किये बिना नहीं रहती।
- व्यक्ति-जागरण के बिना समाज-धर्म पुष्ट नहीं होता, कारण कि व्यक्तियों का समूह ही तो समाज है।
- पर्व के द्वारा सामूहिक साधना का पथ प्रशस्त होता है एवं इससे समुदाय को साधना करने की प्रेरणा मिलती है, जिससे राष्ट्रीय-जीवन का संतुलन बना रहता है।
- मनुष्य यदि अपनी वृत्ति, विवेकपूर्ण नहीं रखे तो वह दूसरों के लिए घातक भी बन सकता है।
- असंयत मानवता पशुता और दानवता से भी बढ़कर बर्बर मानी जाती है तथा 'स्व-पर' के लिए कषाय का कारण हो जाती है।
- साधना के मार्ग में लगकर यदि साधक प्रमाद में पड़ जाए तो कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।
- उपासना में तन्मयता अपेक्षित है, अन्यथा "माया मिली न राम" की स्थिति होगी।
- श्रद्धा की दृढ़ता न होने से मनुष्य अनेक देव-देवी, जादू-टोना और अंधविश्वास के फेर में भटकते रहते हैं।

## महावीर पर सच्ची आस्था

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म. सा.

पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा 3 नवम्बर 1994 को जोधपुर में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतनजी मेहता, सह-सम्पादक-जिनवाणी द्वारा किया गया है।-सम्पादक

### निर्भय एवं समभावी : महावीर

तीर्थंकर महावीर का जीवन एवं दर्शन आज भी हमारी श्रद्धा और आस्था का केन्द्र है। महावीर तीर्थंकर कैसे बने? इसका वर्णन आचारांग सूत्र में उपलब्ध है। प्रव्रजित होने के पश्चात् महावीर ने कैसे-कैसे परीषह किस तरह सहे, किस प्रकार तीर्थंकर, मनुष्य और देवों के द्वारा उपसर्ग दिए गए और 'महावीर' ने महावीर बनकर उन्हें किस प्रकार सहन किया? इन सबका उल्लेख आचारांग सूत्र के नवम अध्ययन में मिलता है। महावीर की सहनशक्ति अद्भुत थी।

महावीर इधर प्रव्रजित हुए और उधर उपसर्ग प्रारम्भ हो गए। महावीर की दीक्षा में चौसठ इन्द्र सम्मिलित हुए, किन्तु इधर इन्द्रादिक देव गए और उसी दिन ग्वाले का उपसर्ग शुरू हो गया। बैल को बाँधने की डोरी से जानवर की भाँति ग्वाले ने महावीर को चोट मारना चालू कर दिया। महावीर कच्चे मन वाले होते तो प्रव्रज्या को खराब समझकर छोड़ देते। आप अपना मन टटोलिए, आप क्या सोचते? अगर माला फेरने, सामायिक करने आदि के समय कोई आर्थिक हानि हो जाये तो आप माला एवं सामायिक के उपकरणों को एक ओर रख देने का मानस भी बना सकते हैं। यह कहने वाले भी मिल जाते हैं- "बाबजी! मुझसे सामायिक सधी नहीं, मेरे लिए सामायिक लाभकारी नहीं। धर्म अच्छा है, पर मेरे से नहीं होगा।" इस प्रकार की कचावट वाले एक दो नहीं अनेक हैं। उपसर्ग और परीषह को सहन करने एवं समभाव में रहने की उनमें क्षमता नहीं। अच्छे-अच्छे साधु भी कष्ट के समय घबरा जाते हैं। किन्तु महावीर अडिग थे, उनके समक्ष लक्ष्य स्पष्ट था।

### आस्था की दृढ़ता हो

हमारी आस्था कमजोर है, अज्ञान का हमारे पर अधिक जोर है। सच्चाई यह है कि धर्म करने से, सामायिक आदि का अभ्यास करने से कभी किसी का कोई नुकसान नहीं होता। क्या मिश्री खाने से किसी का मुँह कड़वा होता है? मिश्री मीठी होती है, अतः उससे मुख कड़वा नहीं होता। इसी प्रकार धर्म करने से समभाव प्राप्त होता है, उससे किसी का कभी नुकसान हुआ नहीं और होगा नहीं।

यदि हम महावीर बनना चाहते हैं तो हमें भी उनकी भाँति दृढ़ मनोबली बनकर चारित्र

में चरण बढ़ाने होंगे। हम यदि परिषह एवं उपसर्गों से घबराकर तथा किसी कर्म-परिणाम के घटना-क्रम को दुःख देने वाला मानकर धर्म के प्रति अनास्थावान बन गए तो महावीर नहीं बन सकते। महावीर बनने के लिए सत्य धर्म पर श्रद्धा अनिवार्य है। श्रद्धा के बाद ही ज्ञानपूर्वक चारित्र में चरण बढ़ेंगे।

प्रभु महावीर को ग्वाले ने कष्ट दिया। पहले उन्हें पीटा, फिर पैरों पर खीर पकाई, कानों में कीले ठोके, परन्तु प्रभु अविचल रहे। संगमदेव ने छह माह तक कष्ट दिया। किन्तु यह महावीर के समभाव की साधना एवं कर्म-निर्जरा का कारण बना। कर्म-निर्जरा के पश्चात् मोहकर्म का क्षय हो गया। यही धर्म का वास्तविक फल है। हमारी दृष्टि कर्मक्षय पर है, समत्व की साधना पर है, तो धर्म के फल से हम कभी वंचित नहीं हो सकते।

हमारी कितनी दृढ़ता है? महावीर की सेवा में देव और इन्द्र उपस्थित थे, किन्तु कर्म-क्षय महावीर को करना था। हम देवों से याचना करते हैं। घर-घर, द्वार-द्वार एवं तीर्थ-तीर्थ भटकते हैं। जिनकी सहायता के लिए साक्षात् इन्द्र उपस्थित थे, वे सहायता नहीं ले रहे हैं और आप उसके लिए तरस रहे हैं, लालायित हैं। फिर आप महावीर कैसे बनेंगे? आपके स्वप्न में भी यह दिखाई दे जाये कि अमुक स्थान पर जाने से, अर्चना करने से या बोलवा बोलने से बाधा हट जायेगी तो आप वह सब करने के लिए तैयार हैं। कहाँ है फिर धर्म पर दृढ़ता?

### उपदेशों पर चलना होगा

महावीर ने बताया कि मनुष्य को दुःख देने वाले उसके कर्म हैं। धर्म दुःख नहीं देता। धर्म तो दुःख से राहत पहुँचाता है, कर्मों का क्षय करता है। आप दुःख का कारण किसी अन्य को नहीं अपने कर्मों को समझें। दुःखों से किनारा करना है तो कर्मों को काटना जरूरी है। कर्म काटने में किसी देवता की फोटो की आवश्यकता नहीं है। देवता इसमें क्या करेगा? कर्म आपको काटने हैं। महावीर का आदर्श आपके सामने है।

आप तीर्थंकर महावीर के दर्शन करना चाहते हैं, किन्तु उनकी आकृति के दर्शनों से काम नहीं चलेगा। आपका उद्देश्य पूर्ण होगा उनके उपदेशों पर चलने से, उन्हें जीवन में अपनाने से। भगवान महावीर ने भी आकृति के दर्शन का सिद्धान्त नहीं अपनाया और न ही धर्म-परिषद् में ऐसा कहा। आकृति या प्रतिमा के दर्शन के बाद भी पुरुषार्थ आपको ही करना है। ताबीज, ताँती आदि को बाँधने से क्या होना है। कर्म तो आपके ही फल देने वाले हैं। यदि फोटो और आकृति रखने वाले को दुःख नहीं हो तो देवों में तो किसी को भी दुःख नहीं हो। देव तो तीर्थंकर की अस्थियाँ ले जाते हैं, उन्हें पूजते हैं, फिर भी उन्हें दुःख होता है।

यदि महावीर से मिलना है, महावीर बनना है, कर्मशत्रुओं को नष्ट करना है तो धर्म को श्रद्धापूर्वक अपनाना होगा। महावीर के दर्शन करना चाहते हो, उनके चरणों में समर्पण

करना चाहते हो तो आकृति के दर्शन करने की बजाय सिद्धान्तों पर चरण बढ़ाओ। साक्षात् जब भगवान विद्यमान थे तब आगमों में महावीर की एक भी आकृति का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। उस समय मूर्ति नहीं थी, मन्दिर नहीं था, यदि होता तो भगवान को प्याऊ में ठहरने की जरूरत नहीं पड़ती।

मान लो आकृति भी सहायक है, आगम भी सहायक हैं, संतसमागम भी सहायक है, किन्तु सम्यक्त्व के बिना, श्रद्धा और चारित्र के बिना सब व्यर्थ है। यदि आकृति से ज्ञान प्राप्त होता तो जिनके पास रात-दिन आकृतियाँ हैं वे मिथ्यादृष्टि नहीं रह सकते थे। जीवन में वीतरागता आनी चाहिए। महावीर क्षमाशील एवं वीतरागी थे। उनके गुण अपनाने पर ही जीवन निर्मल एवं सफल बनेगा।

ईधन वहाँ सहायक होता है, जहाँ चिनगारी है। आपमें सम्यक्त्व की चिनगारी लग जाये तो समस्त उपाय कारगर हो सकते हैं। फिर तप-त्याग भी सही दिशा में होंगे।

आज का दिन चिन्तन करने का है। आज का दिन चारित्र में चरण बढ़ाने का दिन है, आस्थाएँ सुदृढ़ करने का दिन है। यह अच्छा है, यह खराब है, यह स्थानकवासी है, यह मन्दिरमार्गी है, इस तरह भेद नहीं करके आपको-हमको सबको विकारों पर विजय प्राप्त करने का पुरुषार्थ करना है। भगवान महावीर की वाणी स्वलिङ्गी, अन्यलिङ्गी, गृहस्थलिङ्गी आदि सबके लिए है। इसलिए झगड़ने की बजाय एक होने एवं दृष्टि सम्यक् रखने की आवश्यकता है।

उत्तराध्ययन सूत्र यह संकेत कर रहा है कि जो विनयी है, व्रती है तथा कषाय जीतने का पुरुषार्थ कर रहा है वह किसी भी आकृति में हो, किसी भी क्षेत्र में हो, किसी भी लिङ्ग में हो, वह ज्ञानी बन सकता है। सामान्यज्ञानी ही नहीं केवलज्ञानी बन सकता है और मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

इसलिए हमें श्रद्धा एवं आचरण में दृढ़ बनना है। एक दिन का आचरण भी पार पहुँचाने वाला बन सकता है। एक क्षण के चिन्तन से गणधर गौतम को केवलज्ञान हो गया। जो ज्ञान तीस साल तक भगवान महावीर के चरणों में रहकर प्राप्त नहीं कर पाये, वह उन्होंने अन्तर्मुहूर्त में प्राप्त कर लिया। अतः मिथ्यात्व एवं मोह हटाइए और ज्ञान का प्रकाश पाइए।

सम्यक्त्व, व्रत, अप्रमत्तता और वीतरागता ये गुण हमें महावीर बनाने वाले हैं। सुन लेना और बात है तथा सुनकर प्रमाद हटाना और बात है। आप तीर्थंकर महावीर के इस पावन दिवस पर ज्ञान-दर्शन-चारित्र के साथ साधना-आराधना में आगे बढ़ें तो महावीर बन सकेंगे। आप महावीर एवं उनके दर्शन पर दृढ़ आस्थावान बनकर प्रमाद घटायेंगे तो निश्चित ही महावीर बन जायेंगे। ■

## संघर्ष से होता है उत्कर्ष

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के शिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. द्वारा कोटा में 03 अगस्त 2014 को फरमाए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमार जी जैन, वन भवन, जयपुर द्वारा किया गया है।-सम्पादक

### धर्मानुरागी बन्धुओं!

हमने अत्यन्त कीमती, अत्यन्त दुर्लभ और अति महत्वपूर्ण मानव भव को प्राप्त किया है। भगवान फरमाते हैं कि मानव जीवन पाना अति दुर्लभ है। फिर भी इस मानव जन्म को पाकर प्राणी संसार की भौतिक वस्तुओं के भोग-उपभोग को, जन्म-मरण को अधिक बढ़ाता रहा है। यही आश्चर्य है। इसी जन्म-मरण के चक्र को समाप्त करने के लिये यह दुर्लभ मानव भव मिला है। यह मानव जन्म बेशकीमती है। हमने भी पुण्यवानी से इस मानव जन्म को प्राप्त किया है, किन्तु हम मानव जन्म का मूल्य नहीं समझ रहे हैं, बिना मूल्य का समझ कर इसका दुरुपयोग कर रहे हैं, अथवा कहें कि जैसा उपयोग करना चाहिए वैसा उपयोग नहीं कर रहे हैं।

आज का प्राणी आराम तलब हो गया है। वह आराम करता हुआ सफलता पाना चाहता है, कर्म तोड़ना चाहता है, लक्ष्य को पाना चाहता है। किन्तु कहा है- “जहाँ आराम है वहाँ सफलता नहीं।” लक्ष्य प्राप्त होने के पश्चात् ही पूर्ण आराम है। अतः हमेशा के लिये आराम चाहते हो, तो आचार्य देव फरमाते हैं कि पूर्ण आराम तो राम (सिद्ध) बनने पर ही मिलेगा। किन्तु वर्तमान में पुरुषार्थ किए बिना कोई वर्धमान नहीं बन सकता। मानव जन्म मिला है, संघर्ष करने के लिये। “जहाँ संघर्ष है, वहाँ उत्कर्ष है।” संघर्ष यानी विपरीत परिस्थिति के पार जाना। संघर्षशील व्यक्ति ही विकासशील बनते हैं। शिखर को छूने के लिये चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, वरना तलहटी में ही जिन्दगी पूरी हो जाती है। जिन्दगी की सफलता संघर्ष की कसौटी पर खरे उतरने में ही है। सोना कसौटी पर खरा उतरकर ही कुंदन बनता है, आग में तपकर शुद्ध बनता है। संघर्ष की आग में मानव पुरुषार्थी बन जाता है। हर स्थान पर चुनौतियाँ हैं। चाहे गृहस्थ जीवन हो या श्रमण जीवन। मार्केट में ही नहीं, मंदिर-मस्जिद में भी सहिष्णु होना चाहिए। जीवन के प्रारम्भ से पूर्णाहुति तक कुछ करने के लिये, पाने के लिये व्यक्ति को चुनौतियों को झेलना होता है। क्योंकि चुनौतियों से चेतना जागृत

होती है। जन्म से लेकर विदाई (मरण) तक व्यक्ति को संसार क्षेत्र में अपने प्रबल पुरुषार्थ का परिचय देना होता है। हार जाने वाला बाहर हो जाता है। आप जानते हैं कि आज का युग प्रतियोगिता का युग है। यहाँ हर तरफ संघर्ष है। डिग्री पाने में भी संघर्ष है तो रोजगार पाने में भी संघर्ष, यानी रोजी-रोटी के लिये उद्यम करना ही पड़ता है। अतः कुछ विशिष्ट करने के लिये कितना संघर्ष करना होगा, आप अनुमान लगा सकते हैं। आप व्यापारिक एवं उद्योग जगत की किसी भी हस्ती के जीवन को देखें संघर्ष से उत्कर्ष होता है। आप सफल राजनेता के जीवन को देखेंगे तो भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे। अंबानी हो या अडानी, लिंकन हो या मोदी सबका उत्कर्ष संघर्ष से हुआ है। चाहे सीता सती हो या सुभद्रा सती, सभी शून्य से शिखर पर जीरो से हीरो बने, संघर्ष से। कोयले की खान में हीरा भी संघर्ष कर विशिष्ट बनता है। हीरा कैसे बनता है? दबाब और गर्मी से यानी जिसने विपरीत परिस्थिति में अपने आपको मजबूत और स्थिर बनाए रखा, वह हीरा जैसा बहुमूल्य बन गया।

आपके जीवन में ही नहीं, संत जीवन में भी पुरुषार्थ अनिवार्य है। आप कहेंगे, महाराज आप क्या श्रम करते हो? आराम से रहते हैं, खाली पात्र ले जाते हैं और भरे पात्र लाते हैं। दिनभर कोई कमाने की चिंता नहीं, फिर कहाँ श्रम? अरे भाई! संत का एक नाम है- श्रमण। श्रमण यानी जो मुक्ति के मार्ग पर निरन्तर श्रम करता है। कर्मों से संघर्ष करता है। परीषहों की चुनौती को झेलता है। विरोध को अवरोध नहीं बनने देता, अपितु बोध का निमित्त बनाता है। हर स्थान पर, हर स्थिति से संघर्ष करना होता है। आप याद रखना- “विपत्ति ही सच्ची सम्पत्ति है”। अनुस्रोत में तो हर कोई बह जाता है, प्रतिश्रोत में नहीं बहने वाला ही हिम्मत वाला है। किन्तु हर व्यक्ति संघर्ष के पार तक नहीं पहुँच पाता। कुछ थोड़ा संघर्ष झेलकर हार जाते हैं। इसलिये श्रद्धेय महाराज साहब फरमाते हैं- निराशा रूपी पिशाचनी का जीवन में कोई स्थान नहीं। आशा आर-पार ले जाती है, पर कई परिणाम आने के पहले ही यमधाम पहुँच जाते हैं। इसलिये कहते हैं- “संकट मनुष्य को या तो तोड़ देते हैं या बेजोड़ बना देते हैं।” संकट जिन्हें कंटक के समान लगते हैं, वे पीछे रह जाते हैं और संकट जिन्हें केवट (नाविक) के समान लगते हैं, वे पार पहुँच जाते हैं। जहाँ संघर्ष है वहाँ जीवन है, बिना संघर्ष का जीवन भौंटी सुई के समान है जो न सिलने के काम आती है न कुरेदने के काम।

एक किसान था। किसान कौन? जिसका जीवन प्रकृति पर निर्भर होता है। हाँ तो! वह किसान बड़ा परेशान था। कभी मूसलाधार वर्षा होती तो कभी पानी की एक बूंद भी नहीं पड़ती, कभी आंधी-तूफान आ जाते तो कभी टिड्डीदल आ जाता और फसल चौपट हो जाती। एक बार किसान ने दुःखी होकर देव से प्रार्थना की। प्रार्थना से द्रवित होकर देव

बोले- 'बोल, क्या चाहिये?' किसान बोला- आप खेती करना नहीं जानते। कभी तेज बारिश, कभी सूखा कर देते हैं। एक वर्ष मेरी मर्जी के अनुसार कीजिए। देव बोला- 'तथास्तु।' अब किसान प्रसन्न। सोचने लगा, सालों की कसर निकाल लूँगा, इतना धान पैदा कर लूँगा। ऐसा ही हुआ, समय पर पानी आया, धूप भी समय पर निकली और फसल लहलहाती खड़ी हो गई। उस फसल में पीले फूल रूपी सोने को देखकर वह खुश हो रहा था कि मैंने अपनी किसानी से इतना धान पैदा कर लिया। जब फसल पककर तैयार हो गई और वह अपने परिवार वालों के साथ फसल की कटाई करने पहुँचा तो वह हक्का-बक्का रह गया कि फसल तो कमर तक आ गई, पर उसकी बालियाँ पोली हैं, उनमें धान नहीं है। अनाज का दाना नहीं है। वह बोला- "हे देव! मेरे साथ ऐसा क्रूर मजाक किया तूने।" देव ने कहा- "किसान! बिना तकलीफ झेले धान नहीं होता, कष्ट में जान है। इन फसलों ने तूफान, ओले, बारिश से संघर्ष नहीं किया, इसलिये इनमें बीज नहीं हुए।" संघर्ष से ही जीवन आता है, बीज आता है। रोने वाला रुक जाता है आगे नहीं बढ़ पाता। इसलिये वे संघर्ष से डरें नहीं। 'डरे सो मरे' हमारा तो विचार होना चाहिए कि डर के आगे जीत है। इस देव दुर्लभ मनुष्य भव को पाकर कई फांसी के फंदों पर लटक जाते हैं, ज़हर खा लेते हैं, क्यों? क्योंकि वे संघर्ष को, कठिनाइयों को सहन नहीं कर पाए। आचार्य भगवन्त फरमाते हैं- "सहन करने वाले जीव सिद्ध हो जाते हैं।" निगोद से निरंजन की यात्रा करनी है तो डटकर मुकाबला करो। जिंदगी हार के लिये नहीं, उपकार एवं उपहार के लिये है। यहाँ फंदातीत, छंदातीत एवं द्वन्द्वतीत बनना है। व्यक्ति समझता है कि आत्मघात से सब झंझट समाप्त हो जाते हैं, पर भगवान कहते हैं कि जो आत्मघाती है वह महापापी है। वह अपना जन्म-मरण और अधिक बढ़ाता है। हमें यहाँ आकर अपनी इच्छा को कम करना है और इच्छा शक्ति को बढ़ाना है।

तेरे बिना गुरुवर हमारा नहीं कोई रे.....।

संसार में सब सहारे अधूरे हैं। अरे! और तो और अंतिम यात्रा में भी लोग कंधे बदलते रहते हैं। इस जीवन में सच्चा आलम्बन एक मात्र धर्म और धर्मगुरु का है। ऐसे धर्मगुरु को पाकर हम भी शिक्षा लें कि इन्होंने अपने जीवन को संघर्ष से उत्कर्ष पर पहुँचाया है। आपको लगता होगा कि गुरुदेव तो सिंहासन पर विराजमान हैं। अरे भाई! यह तो कांटों का ताज है, सरल नहीं नेतृत्व करना। इस जिनशासन में कई आचार्यों ने अपने सम्पूर्ण जीवन को होम कर कष्टों को झेल कर आज यहाँ तक पहुँचाया है और आप कष्ट से डर कर सुविधा की ओर जाना चाहते हैं। ऐसे महापुरुष हमें फरमा रहे हैं कि संघर्ष में भी, तनाव में नहीं रहकर उसके पार जाना है। तनाव क्या? तन और मन का भिन्न दिशा में होना। जब

दोनों एक दिशा में एक लक्ष्य पर स्थित हों तो वहाँ तनाव नहीं, जब अलग होते हैं तब तनाव होता है। तनावयुक्त संघर्ष से नहीं पुरुषार्थयुक्त संघर्ष से जीवन निखरता है। संघर्ष की चोट खाकर ही जीव चोटी पर पहुँचता है। चोट खाकर पत्थर प्रतिमा बन जाती है, नहीं तो वह पत्थर चटनी पीसने वाला सिलबट्टा ही रह जाता है। आज घर-परिवार में तनाव वाला संघर्ष है। क्यों? क्योंकि व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता।

जब तक कर्तव्य का पालन नहीं होगा, संघर्ष नहीं होगा, तब तक जीवन उत्कर्ष पर नहीं पहुँच सकता। कपड़े को मैल मुक्त करने के लिए साबुन का घर्षण करना होता है। उसी प्रकार कर्म मुक्त करने के लिये आत्मा को प्रबल पुरुषार्थ युक्त संघर्ष करना ही होता है। सुखे-सुखे कर्मों से मुक्ति के बिना मोक्ष नहीं है। सामाजिक जीवन में जहाँ बाह्य परिस्थितियों से संघर्ष किया जाता है वहाँ आध्यात्मिक साधना में स्वयं के विकारों से संघर्ष होता है। इसलिये हमें धर्म का पक्ष लेकर कर्म को प्रक्षालित करना है। हम आपदा को संपदा समझें, इन्हीं शुभ भावों के साथ अपनी वाणी को विराम देता हूँ। ■

### चिन्ता

चिन्ता जिस किसी को लग जाती,  
उसका सारा सुख समेटती हुई,  
जिन्दगी को वीरान सा बनाकर,  
निर्जीव सा कर देती है मानव को,  
और मानव बेचारा,  
अपने ही भीतर घुटकर,  
खोज नहीं पाता उपयुक्त हल,  
और लकड़ी में घुन की तरह,  
पी जाती है रक्त मानव का,  
यह जीवन घातिनी चिन्ता।।

### चिता से सीख

श्मशान में जलती चिता देखकर  
हो जाते हैं हम गमगीन  
कि इक दिन हमें भी  
होना पड़ेगा मिट्टी में लवलीन  
तो क्यों न हम अपने चित्त को,  
बनालें इतना विशुद्ध  
कि कर्म शृंखला काटकर,  
बन जायें सिद्ध, बुद्ध, मुक्त  
फिर हमारी जलती चिता का अंगारा  
कहेगा कि सुन ओ मनवा प्यारा!  
इस भव्यात्मा को जन्म न लेना  
पड़ेगा दुबारा।  
इस भव्यात्मा को जन्म न लेना  
पड़ेगा दुबारा।।

-श्री महावीर प्रसाद जैन

अध्यापक, 106, मस्जिद रोड़, राजपूत कॉलोनी, केशवपुरा-4, कोटा (राज.)

## सेवा : एक सद्गुण

उपाध्याय श्री अमरमुनिजी

भगवान् महावीर ने जीवन की शान्ति और विकास के लिए अहिंसा को तीन विधेयात्मक रूपों में व्यक्त किया- 1. समता, 2. प्रेम और 3. सेवा। प्रत्येक प्राणी को आत्म-तुल्य समझो, यह समता का पहला उद्घोष था और सामाजिक भावना का मूल आधार। जो व्यक्ति निकट परिचय में आते हैं, उनके साथ विग्रह और विरोध मत करो। प्रत्येक व्यक्ति को अपना बन्धु समझो, और उसके साथ मैत्री-भावना का विकास करो। यह प्रेम का सन्देश था। सेवा का तीसरा उद्घोष सामाजिक सम्बन्धों की मधुरता और आनन्द का मूल स्रोत है। जहाँ दो व्यक्तियों में परस्पर सहयोग नहीं, वहाँ सामाजिक सम्बन्ध कितने दिन टिकेंगे? सेवा के क्षेत्र में महावीर ने जो सबसे बड़ी बात कही, वह यह थी कि- “मेरी उपासना से भी अधिक महान् है- किसी वृद्ध, रुग्ण और असहाय की सेवा। सेवा से व्यक्ति साधना के उच्चतम पद तीर्थकरत्व को भी प्राप्त कर सकता है।”

अहिंसा की यह त्रिवेणी व्यक्ति के अहंकार की कलुषता को धोती है, प्रेम और मैत्री की मधुरता सरसाती है, और सेवा-सहयोग की धरती को उर्वरा बनाकर सर्वतोमुखी विकास की बहुमूल्य फसलें पैदा करती है।

### सेवा: एक महत्त्वपूर्ण सद्गुण

अनेक सद्गुणों के कारण मनुष्य-जीवन की महता मानी गई है। उनमें एक महत्त्वपूर्ण गुण है- सेवा। यह अहिंसा की विधेयात्मक त्रिवेणी का एक अंग है। एक-दूसरे के प्रति सद्भाव, एक-दूसरे व्यक्तित्व का आदर, समस्याओं को सुलझाने में एक-दूसरे का सहयोग, स्नेह और समर्पण- ये सब सेवा के रूप हैं, ये अहिंसा और दया के ही विभिन्न पथ हैं।

गणधर गौतम ने भगवान् महावीर से पूछा- “भगवन्! एक व्यक्ति आपकी सेवा करता है, अपना सर्वस्व आपके चरणों में समर्पित कर देता है, और एक दूसरा व्यक्ति है, जिसे ग्लान, रोगी एवं अन्य पीड़ितों की सेवा करते हुए आपकी सेवा में आने की फुरसत भी नहीं मिलती है- तो इन दोनों में से आप किसको अच्छा मानेंगे, किसको धन्यवाद देंगे?”

भगवान् ने कहा- “गौतम! जो व्यक्ति ग्लान, रोगी एवं पीड़ितों की सेवा करता है, उसे मैं साधुवाद देता हूँ।”

गौतम के मन की गुत्थी नहीं सुलझी, उन्होंने पुनः पूछा- “भगवन्! ऐसा क्यों? कहाँ आपकी पूर्ण विकसित भगवच्चेतना, महान् आत्मा! और कहाँ वह सामान्य प्राणी! आपकी

तुलना में उसकी सेवा का क्या महत्त्व है?”

प्रभु ने कहा— “गौतम! मुझे अपनी देह की पूजा नहीं चाहिए। मैं तो सर्वसाधारण चैतन्य की सेवा को ही अपनी सेवा मानता हूँ। मेरी आज्ञा की आराधना ही मेरी आराधना है, मेरा दर्शन और मेरी सेवा-पूजा है।”

आचार्य हेमचन्द्र ने भी प्रभु महावीर की इस दिव्यवाणी को उन्हीं को सम्बोधित करते हुए वीतरागस्तोत्र में कहा है— “हे वीतराग प्रभो! तुम्हारी पूजा-उपासना से तुम्हारी आज्ञाओं का परिपालन कहीं अधिक श्रेयस्कर है। प्रभु की आज्ञा है— मैत्री और करुणा। इन्हीं का मूर्तरूप है-सेवा।

जैनदर्शन के प्रथम संस्कृत सूत्रकार आचार्य उमास्वाति ने इस संदर्भ में एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण स्थापना की है। उन्होंने कहा है— “एक-दूसरे का सहयोग, सेवा करना चेतन का स्वभाव है, उसका लक्षण है, धर्म है। प्रत्येक जीव एक दूसरे के सहयोग के प्रति सापेक्ष रहता है, एक-दूसरे का आधार चाहता है।”

मानवदेहधारी जीव में यदि परस्पर सहयोग की आकांक्षा नहीं है, तो एक पत्थर में और उसमें क्या अन्तर है? एक पत्थर के टुकड़े को यदि आप तोड़ते हैं, फोड़ते हैं, तो उसके पास में पड़े दूसरे टुकड़े में क्या कोई प्रतिक्रिया होती है? कोई दया या संवेदना की स्फुरण होती है कहीं? किन्तु यदि एक जीवधारी पर आक्रमण होता है तो पड़ोसी जीवधारी की आत्मा अवश्य कंपित होती है, उसके मन में सुरक्षा की अनुभूति जगती है। यदि उसकी चेतना कुछ विकसित है, तो सहानुभूति की स्फुरण भी उसमें होती है, सहयोग की भावना भी उसमें जन्म लेती है।

एक चैतन्य को अपने सामने पिटते देख कर, यदि पड़ोसी चैतन्य में कोई अनुकंपन नहीं होता है, तो मानना पड़ेगा कि उसकी चेतना विकसित नहीं है, यदि वह मानव भी है, तो उसमें चेतना विकसित नहीं हुई है। उसमें प्राणों का परिस्पन्दन भले ही हो, किन्तु मानवीय चेतना का स्पंदन नहीं हुआ है।

जैनदर्शन ने प्रबुद्ध आत्म-चेतना को सम्यग्दर्शन की संज्ञा दी है। उस सम्यग्दर्शन के लक्षण बताये गये हैं— ‘शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और आस्तिक्य।’ मैं आपसे उसके चतुर्थ लक्षण के सम्बन्ध में ही अभी कहूँगा कि जिस आत्मा में अनुकंपा का भाव नहीं है, करुणा की धारा नहीं है, किसी पीड़ित और संतप्त आत्मा को देखकर सहानुभूति की स्फुरण नहीं होती है, तो उसमें सम्यग्दर्शन का प्रादुर्भाव कैसे हो सकता है?

मैंने आपको कुछ दिनों पहले बताया था कि जैनदर्शन में चार भावनाओं में दूसरी भावना है— ‘प्रमोद!’ प्रमोदभावना का अर्थ है— दूसरे में सद्गुणों का विकास होते देखकर

प्रसन्न होना। दूसरे को हँसते देखकर उसकी खुशी में स्वयं भी खुश होना, प्रमोदभावना है। वह मानव क्या, जो दूसरों में सदगुणों के फूल खिलते देखकर कुम्हला जाए? दूसरे का विकास देख कर जिसमें उल्लास नहीं जगे, उस मानव और पशु में अन्तर ही क्या है? हाँ, तो 'प्रमोद-भावना' मानव-चेतना की मुख्यधारा है। और उसके बाद है<sup>5</sup> - दुःखी जीवों के प्रति करुणाभावना। गुणी के प्रति अनुराग, और दुःखी पीड़ित के प्रति करुणा, स्नेह एवं सद्भाव। ये दोनों ही भावनाएँ मानव-चेतना की विराट एवं व्यापक परिणति हैं। धर्म का मूल, जिसे हमें सम्यग्दर्शन कहते हैं, वह चेतना की विराटता में ही है। इसलिए करुणा एवं अनुकंपा को सम्यग्दर्शन का मुख्य लक्षण माना गया है।

### सेवा जीवन को विराट बनाती है

जब अपने पड़ोसी चैतन्य के प्रति हृदय में करुणा एवं अनुकम्पा का भाव जगता है, तभी व्यक्ति सेवा के लिए प्रेरित होता है। इसलिए सेवा को जीवन की विराटता का दर्शन माना गया है। सेवा से जनसम्पर्क विस्तृत होता है। मनुष्य का जीवन क्षुद्र से विराट बनता है।

जीने को तो संसार में कीड़े-मकोड़े भी जीते हैं। वे भी इधर-उधर रेंगते हुए अपने शरीर की आवश्यकतापूर्ति करते हैं, स्वयं को आपत्ति से बचाने की चेष्टा करते हैं, किन्तु उनका जीवन केवल अपने तक ही सीमित है। यदि मनुष्य भी उनकी भाँति अपने सुख-दुःख की क्षुद्र अनुभूति में ही फँसा रहा, शरीर की कैद में ही पड़ा रहा, तो कीड़े के जीवन में और मनुष्य के जीवन में अन्तर क्या रहेगा?

पशु-पक्षियों में भी चेतना का सामान्य विकास होता है। स्वयं के जीवन के भरण-पोषण एवं संरक्षण के साथ अपनी संतान के जीवन, भरण-पोषण एवं संरक्षण की भावना उनमें होती है, किन्तु उस भावना को पारिवारिक एवं सामाजिक भाव नहीं कहा जा सकता। उनमें एक-दूसरे के प्रति स्नेह एवं समर्पण की उदात्त भावना का विकास नहीं है, संकट आ पड़ने पर अपने प्राण लेकर भागने की भावना तो उनमें है, किन्तु संकटग्रस्त के प्रति सहानुभूति जतलाने का सद्भाव कहाँ है? सहयोग का संकल्प उनमें नहीं है। मनुष्य की चेतना भी यदि केवल अपनी ही आपाधापी में लीन रहती है, तो मैं उसे पाशविक चेतना ही कहूँगा, मानवीय चेतना नहीं।

मैंने देखा है, मानव होने से ही किसी में मानवीय चेतना का विकास हो जाता हो, ऐसी बात नहीं है। बहुत से मानव मानव होकर भी इतने क्षुद्र, इतने संवेदनहीन, व इतने क्रूर होते हैं कि पशु को भी मात कर जाते हैं। चेतना को विराट और व्यापक रूप से विकसित करने में संस्कृति एवं वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। जिस संस्कृति में जीवन के जितने विराट संकल्प होंगे, जितने उदात्त आदर्श होंगे, हमारी चेतना को उतनी ही अधिक विराटता की

प्रेरणाएँ मिलेंगी।

भारतीय संस्कृति में सेवा, समर्पण एवं सद्भाव के विराट् आदर्श प्रस्तुत किए गए हैं। यहाँ व्यक्ति का मूल्यांकन ऐश्वर्य एवं सत्ता के आधार पर नहीं, किन्तु सेवा एवं सद्गुणों के आधार पर किया गया है। हमारा तत्त्वचिंतन यह नहीं पूछता कि तुम्हारे पास सोने-चाँदी का कितना ढेर है? किन्तु वह तो पूछता है- “तुमने अपने ऐश्वर्य को जनजीवन के लिए कितना अर्पित किया है? वह तुम्हारे पद और सत्ता को भी इसलिए कोई महत्त्व नहीं देता कि वह अपने आप में कोई बहुत बड़ी शक्ति है? किन्तु पद और सत्ता का महत्त्व भी इसी में माना है कि तुम जनसेवा के लिए उस प्राप्त शक्ति का कितना उपयोग कर सकते हो? एक आचार्य ने तो यहाँ तक कह दिया है- “हाथ का महत्त्व हीरे और पत्त्रे की अंगूठियाँ पहनने में नहीं, किन्तु दान में है। इस हाथ से तुम कितना अर्पण करते हो, जन-सेवा के लिए हाथों से कितना विनियोग करते हो, इसी बात से तुम्हारे हाथ का महत्त्व है।”

मानव शरीर का महत्त्व भी उसकी सुन्दरता एवं सुडोलता में नहीं, किन्तु यह शरीर जन सेवा के लिए कितना उपयोगी होता है, किसी दुःखी के आँसू पोंछने के लिए वह कितना तत्पर रहता है, इसी बात पर शरीर का और समूचे जीवन का महत्त्व है।

मैंने आपसे बताया कि यों तो मानव-जीवन अनेक विशेषताओं का केन्द्र है, किन्तु इस जीवन की जो सबसे बड़ी विशेषता है, जिसके कारण मानव-जीवन अपने आपको कृतार्थ अनुभव कर सकता है, वह है- ‘सेवा’। सेवा हमारे क्षुद्र जीवन को विराट् रूप प्रदान करती है, हमारी सीमित चेतना को विकसित एवं व्यापक बनाती है और सबसे बड़ी बात यह है कि मनुष्य को ईश्वररूप में देखने की दृष्टि मिलती है, सेवा से। आत्मा में परमात्मा का दर्शन होता है-सेवा से।

**तीर्थकर पद की प्राप्ति : सेवा से**

अखिल विश्व में तीर्थकर का पद एक बहुत बड़ा पद है। स्वर्ग के इन्द्र और धरती के चक्रवर्ती तीर्थकर के चरणों में ही नतमस्तक होते हैं। इन्द्र तीर्थकर के चरणस्पर्श कर अपने को धन्य समझते हैं और चक्रवर्ती तो उनके चरणों की धूल मस्तक पर लगाने के लिए लालायित रहते हैं। यह आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही प्रकार के ऐश्वर्य का पूर्ण केन्द्र है; पुण्यप्रकृतियों में यह सबसे महान् पुण्य प्रकृति है। तीर्थकर सम्पूर्ण जगत् की सेवा करते हैं। दुःख से मुक्ति के मार्ग का उपदेश ही उनके द्वारा हुई यह स्वाभाविक सेवा है।

विचारणीय प्रश्न यह है कि तीर्थकर बना कैसे जाता है? वह कौन-सी साधना है, जिसके द्वारा धरती का साधारण मानव तीर्थकर के सर्वोत्कृष्ट पद पर पहुँच जाए? भगवान् महावीर ने कहा है- सेवा और शुश्रूषा (वैयावृत्त्य) के आधार पर तीर्थकरपद भी प्राप्त किया

जा सकता है।<sup>8</sup>

### सेवा : अहं एवं सुख-वृत्ति का विसर्जन

मनुष्य बड़ा से बड़ा तथा कठोर से कठोर तप कर सकता है। एक आसन से बैठकर हजारों मालाएँ फेर सकता है। शरीर एवं इन्द्रियों को निग्रह के नाम पर अपने को ध्वस्त कर सकता है, परन्तु सेवा करना सहज नहीं है। सेवा के लिए अपने अहं को मारना होता है, विनम्र होना होता है, अपनी सुख-सुविधाओं को भी एक ओर ठोकर लगानी होती है। सेवा और बड़प्पन का अहंकार एक साथ नहीं चल सकते। सेवा और अपना वैयक्तिक सुख, अपना खुद का आराम एक साथ नहीं रह सकते। सेवा के लिए अपने को समर्पण करना होता है और समर्पण में अपना जैसा कुछ शेष नहीं रहता है। इसीलिए कहा गया है-  
“सेवादर्म परमगहन है, वह योगियों के लिए भी अगम्य है।”

यदि पिता कहीं बाहर जा रहा है। साथ में नन्हा बालक है, पिता की अंगुली का सहारा लिए है। इस स्थिति में पिता दण्डायमान तनकर सीधा चल सकता है क्या? बालक को अंगुली का अपना सहारा देकर साथ ले चलने के लिए पिता को झुकाकर ही चलना होगा। सेवा भी अहं को झुकाकर ही हो सकती है।

घर में कोई बीमार है, पीड़ा से व्याकुल है, वेदना से कराह रहा है, बार-बार करवट बदलता है। शरीर चाहता है कोई उसे कोमल हाथों से सहलाए। कभी दवा तो कभी पानी अपेक्षित है। कभी मूत्रबाधा तो कभी शौच जाने का चक्कर है। इस स्थिति में रोगी की परिचर्या के लिए जो पास बैठा है, वह क्या करे? खर्टा लेकर सोए? पलंग पर पड़ा-पड़ा आराम करे? नहीं, यह नहीं हो सकता। रात के गहराते सन्नाटे में उसे अकेले बीमार के पास बैठे रहना होता है, जागना होता है, हर मिनट रोगी पर दृष्टि रखनी होती है। समय पर पानी देना, दवा देना, मल-मूत्र कराना, शरीर दबाना, मधुर और स्नेह-स्निग्ध वचनों से बार-बार सान्त्वना देना, धैर्य बँधाये रखना, रोगी का कोई एक काम होता है क्या? रोगी बड़बड़ाता है, कभी-कभी तो इतना उत्तेजित हो जाता है कि परिचर्या करने वाले को ही गंदी गालियाँ तक बकने लगता है। बहुत से विक्षिप्त स्थिति के रोगी तो मारने तक लगते हैं। परन्तु सच्चा परिचारक प्रशान्त महासागर बन जाता है। यदि परिचारक बड़बड़ाने लगे, सेवा को आफत समझने लगे, स्वयं उत्तेजित होने लगे, तो क्या सेवा होगी? सेवा में दूसरे के सुख का ही ध्यान रखना होता है, अपने सुख का नहीं। सेवा के लिए अपनी सुख-वृत्ति को तिलांजलि देनी ही होगी। कभी कहा था किसी ने- “सुखार्थिनः कुतो विद्या।” और मैं इसके बदले कहता हूँ- “सुखार्थिनः कुतः सेवा।”

## सेवा स्वयं तप है

इसीलिए सेवा एक बड़ा तप है। अपनी इच्छाओं का संयमन किये बिना कोई कैसे किसी की सेवा कर सकता है? सेवा में अपने लोभ एवं स्वार्थ को कम करना होता है; वैयक्तिक सुखवृत्ति का परित्याग करना होता है। यह इच्छा का निरोध है। इच्छानिरोध और क्या है? तप ही तो है! 'इच्छानिरोधस्तपः' और यह वैयावृत्य (सेवा) का तप कौन-सा तप है? बाह्यतप नहीं, अन्तरंग तप<sup>10</sup> है। बाहर में परिचर्या के होने से यह बाह्यतप होना चाहिए था; परन्तु अन्तर में इच्छानिरोध, वासनामुक्ति, निरहंकार-भावना आदि कुछ ऐसी परिणतियाँ हैं, सेवा की आन्तरिक चेतना में। फलतः सेवा अन्तरंगतप<sup>11</sup> की भूमिका में पहुँच जाती है।

## भिक्षा में से भी भिक्षा

भगवान् महावीर ने अपने भिक्षुसंघ में यह नियम प्रचलित किया था कि जो भिक्षु नगर में भ्रमण कर भिक्षा लाए, वह अपने स्थान पर आकर उपस्थित साधुओं को विनम्रभाव से साग्रह निमन्त्रण करे कि प्रस्तुत भोजन में से आप यथारुचि ग्रहण कर मुझ पर अनुग्रह करें।<sup>12</sup> आपका यह अनुग्रह मुझे भवसागर से पार उतारने वाला होगा। निमन्त्रण करने पर यदि कोई भोजन करना चाहे तो उसके साथ भोजन करे।<sup>13</sup> उक्त उल्लेख कितना उदात्त है। नगर में घर-घर द्वार-द्वार घूमा है साधु। अपमान मिला है, तिरस्कार मिला है, बड़ी कठिनाई से कुछ मिल पाया है और इधर जोरदार भूख लगी है। सम्भव है दो-चार दिन से कुछ भी नहीं मिला हो, कुछ भी नहीं खाया हो। यदि तपश्चरण रहा, तो महीनों से अन्न-जल ग्रहण न किया हो। फिर भी प्राप्त भोजन में से दूसरों को सादर देना है। लेने वालों के द्वारा लेना अपने ऊपर भार नहीं, अनुग्रह समझना है। और अनुग्रह भी वह अनुग्रह, जो संसार-सागर से पार करने वाला है। बताया गया है कि 'निमंत्रित करते समय साथियों को जब प्राप्त भोजन दिखाए, तो हर अच्छी से अच्छी एक-एक चीज को निर्दिष्ट करके दिखाए, छिपाए नहीं। यदि छिपाता है और बिना निमन्त्रण किए खाता है, तो यह चोरी है। परस्पर के सहयोग एवं सेवाभाव का कितना उच्च आदर्श है। भगवान् महावीर ने तो यहाँ तक कहा है<sup>14</sup> कि जो प्राप्त सामग्री का उचित संविभाग नहीं करता है, साथियों में एवं जरूरतमंदों में समानभाव से वितरण नहीं करता है, वह मुक्ति-लाभ नहीं कर सकेगा।' और यह ध्यान में रखने जैसी बात है कि यह संविभाग है। संविभाग का अर्थ है- अपने प्रिय बन्धु के लिए बराबर का भाग, हिस्सा। यह कृपा नहीं है, जो कभी किसी असहाय बेचारे को सहायता के लिए की जाती है। एक भाई दूसरे भाई को पिता की सम्पत्ति में से जब कुछ देता है तो क्या वह आज

का तथाकथित दान है, दया है, करुणा है? यह सब कुछ नहीं है। यह अधिकार है- अपने भाई का, और यह बराबर के सम्मान से देना होता है। सम्पत्ति भी व्यक्ति की नहीं है, समाज की है। समाज का हर व्यक्ति बन्धु है। फलतः उसे देना दया अथवा करुणा नहीं। वह तो दायभाग है, अधिकार है। यह सिद्धान्त सेवा को सहयोग का रूप देता है, अधिकार की स्थिति में पहुँचाता है। समादर की भावना, जो सेवा का प्राणतत्त्व है, वह इसी भावना में सुरक्षित रहती है।

### सेवा : गंगा की त्रिपथगा धारा

सेवा तप के तीन परिणाम होते हैं। सेवा एक है, किन्तु वह अन्दर में तीन धाराओं में त्रिपथगा गंगा की भाँति प्रवाहित है। अतः वह तीन-तीन काम करती है। अमुक अंश में सेव्य व्यक्ति के प्रति सुख-प्रदानरूप सहानुभूति का अंश होने से यह पुण्यास्रव है। वैयक्तिक सुखाभिलाषा एवं सुखसाधनों की इच्छा का निरोध होने से संवर है।<sup>15</sup> इसी में अधिक भावविशुद्धिरूप आत्मलीनता, आत्मपरिणति होने से पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा है। संवर और निर्जरा मुक्ति के द्वार है।

### सेवा महत्तर है

प्रातःकाल साधक गुरुचरणों में जब प्रत्याख्यान एवं तपश्चरण लेने को उपस्थित होता है, तब गुरुदेव यदि संघ में किसी रोगी आदि की परिचर्या के लिए उसकी आवश्यकता समझे तो उससे तप नहीं कराते हैं, सेवा का कार्य बताते हैं।<sup>16</sup> अनशन आदि तप की अपेक्षा वह सेवा का तप महान् है, अतः शिष्य के लिए भगवान् महावीर का संदेश ही नहीं, आदेश है कि वह तप न करके सेवा का कार्य करे। इतना ही नहीं, सेवा के लिए तो यहाँ तक बताया गया है कि साधक का पहले से उपवास आदि अनशन तप चालू हो, और इसी बीच यदि सेवा का कोई आवश्यक कार्य आ जाए तो तप को छोड़कर सेवा कार्य करना चाहिए। तपोभंग का कोई दोष नहीं होता, लाभ ही होता है।<sup>17</sup> क्योंकि अनशनतप से सेवा का तप महत्तर है, महत्तर के लिए अल्प छूटता ही आया है।

### सेवा : मानव-जीवन की विशेषता

विश्व में अनन्त प्राणी हैं। असंख्य देव हैं, असंख्य नारक हैं, असंख्य पशु-पक्षी हैं। अन्यत्र कहीं भी सेवाधर्म का सौभाग्य प्राप्त नहीं है। नारक एक-दूसरे की क्या सेवा कर सकते हैं? देव भी अधिकतर ऐसी ही स्थिति में हैं। क्योंकि न वहाँ परिवार है, न समाज है। अतः वहाँ दूसरे को सहयोग देने जैसी स्थिति कहाँ है? पशु-पक्षियों की स्थिति भी अज्ञान की काली चादर के नीचे ढँकी है। उन्हें भी क्या पता कि सेवा क्या होती है, और वह कैसे

करनी चाहिए? मानव-जीवन ही सेवा का आधारस्तम्भ है। मानव सामाजिक प्राणी है। वह शरीर के रूप में एक क्षुद्र इकाई अवश्य है, परन्तु भावना की दृष्टि से वह एक विराट रूप का धर्ता है। मानव के आसपास परिवार है, समाज है, राष्ट्र है और हैं धार्मिक परम्परा, संस्कृति एवं सभ्यता। मानव की सद्भावना उक्त विराट जगत् में सर्वत्र व्याप्त है। सबका सुख उसका सुख है, और सबका दुःख उसका दुःख है। वह अपनी उदात्त भावना के माध्यम से अपना सुख दूसरों को बाँटता है, और दूसरों का दुःख स्वयं बाँट लेता है। वह दुःख-सुख को बाँटता ही नहीं, अपितु दूसरों के लिए सुख का सृजन करता है, दुःख का परिहार करता है। दुःखमुक्ति ही भारतीय तत्त्वदर्शन का बीजमंत्र है। दुःख-मुक्ति स्वयं की ही नहीं, सबकी अपेक्षित है।

### संदर्भ-

1. जे गिलाणं पडियरइ, से धन्ने।- आवश्यक हारिभद्रीया टीका
2. "आणाराहणं दसणं खु जिणाणं।" - आवश्यक हारिभद्रीया टीका
3. तव सपर्यास्तवाज्ञा-परिपालनम्।-वीतरागस्तुति
4. परस्परपग्रहो जीवानाम्।- तत्त्वार्थसूत्र, 5.21
5. क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् - सामायिकपाठ
6. दानेन पाणिर्न तु कंकणेन।
7. तीर्थंकरत्वं हि प्रधानभूतं सर्वेषु शुभकर्मसु।- तत्त्वार्थ-राजवार्तिक 8.11.44
8. वेयावच्चेण तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबंधइ।- उत्तराध्ययन सूत्र, 29.43
9. सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः - नीतिकार
10. प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरम्।-तत्त्वार्थसूत्र, 9.20
11. 'अन्तःकरणव्यापारात्'- तत्त्वार्थराजवार्तिक, 9.20.2
12. 'जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू हुज्जामि तारिओ।' -दशवैकालिक, 5.1.94
13. 'जे इ तत्थ केई इच्छिज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुंजए।' - दशवैकालिक, 5.2.95
14. 'असंविभागी न हु तस्स मोक्खो' - दशवैकालिक, 9.2.22
15. आस्रवनिरोधः संवरः। -तत्त्वार्थसूत्र, 9.1
16. महतां- प्रत्याख्यानपालनवशाल्लभ्यनिर्जरापेक्षया बृहत्तरनिर्जरात्वाभावेतुभूतम्.....।  
-प्रवचनसारोद्धारवृत्ति
17. महत्तरकादेशेन भुंजानस्य न भंगः।-आचार्यनमिकृत प्रतिक्रमणवृत्ति

### शुभकामनाएँ

विक्रम संवत् 2072 चैत्र शुक्ला प्रतिपदा 21 मार्च, 2015 को भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। पाठकों एवं लेखकों को हार्दिक मंगल कामनाएँ।-सम्पादक

## भगवान महावीर की साधना

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्य रत्न'

श्रमण भगवान महावीर ने साढ़े बारह वर्षों तक आत्मा की दिव्य साधना की। सुख, समृद्धि व वैभवगत आसक्तियों को त्याग कर अकिंचन बन वे सत्य की साधना में निरन्तर लीन रहे। उनका दिव्य एवं भव्य संयमी जीवन उत्कृष्ट साधना का उदाहरण है। उनके जीवन का प्रत्येक पृष्ठ समता, सहिष्णुता, परदुःखकातरता, त्याग, तपस्या, ध्यान और अभय की भावना से ओतप्रोत था। उन्होंने दीर्घ साधना-काल मौन, आत्म-चिंतन, आत्म-पर्यालोचन, उग्र ध्यान एवं उत्कट संयम की आराधना में व्यतीत किया।

इस साधना-काल में उन पर अनेक विपत्तियाँ एवं उपसर्ग आये। प्राकृतिक, मानवीय एवं दैविक संकटों के प्राणघातक तूफान प्रलयकाल की तरह घिर-घिर कर आये, पर वर्द्धमान ने अदम्य साहस, अपराजेय संकल्प व आत्म-बल के सहारे उनका डट कर मुकाबला किया। उन्होंने अपूर्व कष्ट-सहिष्णुता, क्षमा और तितिक्षा का आदर्श उपस्थित किया।

त्याग और तपस्या की साधना का इस प्रकार का आदर्श मानव-समाज में मिलना दुर्लभ है। उनके संबंध में शास्त्रों में कहा है- “उगं च तवोकम्मं विसेसओ वद्धमाणस्स” (आ. नि. 240) अर्थात् अन्य तीर्थंकरों की अपेक्षा वर्द्धमान का तप विशेष उग्र था।

उनके साधनाकाल का रोमांचकारी वर्णन आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध के नवम अध्ययन में मिलता है। गणधर सुधर्मा स्वामी ने उनकी साढ़े बारह वर्ष की साधनाचर्या का बड़ा सजीव, रसप्रद और हृदयस्पर्शी वर्णन प्रस्तुत किया है। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर उनकी कष्ट-सहिष्णुता, अडिग ब्रह्मचर्य-साधना, अहिंसा और त्याग के कठिन नियमों का परिपालन, अनुकूल-प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में समभाव, निःस्पृहता, शारीरिक अनासक्ति, अविचल ध्यान योग और अन्तर्लीनता मुखरित है। उस साधनाचर्या का कुछ अंश यहाँ पर प्रस्तुत है।

### अचेलक अणगार

दीक्षा लेने के समय महावीर के शरीर पर एक श्वेत वस्त्र (देव दूष्य) था। तेरह महीनों के बाद अचेल परीषह के आमन्त्रण रूप में उन्होंने उसे भी त्याग दिया। सर्दी, गर्मी एवं वर्षा के सभी कष्टों को उन्होंने सहन किया। भयंकर सर्दी में भी वे खुले में ही ध्यान करते थे।

## अनिकेत चर्या

महावीर कभी निर्जन झोंपड़ी, धर्मशाला, प्याऊ, लुहार की कार्यशाला में, कभी कुम्हार की कार्यशाला में, कभी शहर में, कभी श्मशान में तो कभी उद्यान या सूने घर में या वृक्ष के नीचे रात्रि बिताते। ऐसे स्थानों पर रहते हुए वर्द्धमान को नाना प्रकार के उपसर्गों का सामना करना पड़ा। सर्प आदि जीव-जन्तु उन्हें डस जाते, गिद्ध जैसे पक्षी उन्हें काट खाते। दुराचारी मनुष्य उन्हें यातना देते, दुराचारिणी स्त्रियाँ उन्हें काम-भोगों के लिए सताती। जार पुरुष उन्हें मारते, पीटते, पर वे समाधि में ही तल्लीन रहते तथा वहाँ से चले जाने का कहने पर अन्यत्र चले जाते।

## साधना काल का आहार

उनके आहार के नियम बड़े कठोर थे। नीरोग होते हुए भी वे मिताहारी तथा खानपान में संयमी थे। मान-अपमान में समभाव रखते हुए वे भिक्षाचर्या करते थे तथा कभी दीनभाव नहीं दिखाते थे। भिक्षा में रूखा-सूखा, ठंडा-बासी व नीरस जो भी आहार मिलता, वे शांतभाव से संतोष के साथ ग्रहण करते। मात्र शरीर निर्वाह के लिए सूखे भात, मूंग, उड़द का आहार करते। एक बार निरन्तर आठ मास तक वे इसी प्रकार का नीरस आहार करते रहे। रसों में उन्होंने कभी आसक्ति नहीं दिखाई।

## देहासक्ति का त्याग

शरीर के प्रति वर्द्धमान की अनासक्तता रोमांचकारी थी। रोग उत्पन्न होने पर भी वे औषधि-सेवन की इच्छा नहीं करते थे। उन्होंने शरीर के विश्राम की कभी आकांक्षा नहीं की। वे दैहिक वासना से सर्वथा मुक्त थे।

## निद्रा-विजय

श्रमण वर्द्धमान ने कभी पूरी नींद नहीं ली। जब अधिक नींद आती तो वे शीत में बाहर निकल थोड़ा घूमकर निद्रा दूर करते। हमेशा सजग-जागृत रहने की चेष्टा करते। वे प्रहर-प्रहर किसी लक्ष्य पर आँखें टिका कर ध्यान करते थे।

## अनासक्ति

वे गृहस्थों के साथ कोई संसर्ग नहीं रखते थे, न ही गृहस्थों के कार्यों में, गान, नृत्य या संगीत आदि में कोई रुचि रखते थे। ध्यानावस्था में कुछ पूछने पर भी उत्तर नहीं देते थे। वे स्त्री-कथा, भक्त-कथा, राज-कथा तथा देश-कथा में कोई रुचि नहीं लेते थे। यदि शून्य स्थानों में कोई उनसे पूछता कि आप कौन हैं तो वे संक्षिप्त उत्तर देते-“अहमंसि ति भिक्खू” अर्थात् मैं भिक्षु हूँ। न सहन किये जा सके, ऐसे कटु व्यंग्य वचन, निन्दा व तिरस्कार का भी उत्तर नहीं देते थे तथा मौन रहते थे। वे हमेशा निर्विकार, कषाय-रहित,

निर्मल ध्यान और आत्म-चिंतन में समय बिताते थे।

### अहिंसा एवं तितिक्षा

भगवान ने पल-पल अनुपम अहिंसा और तितिक्षा की साधना की। भिक्षा में जाते हुए अगर कबूतर आदि पक्षी अनाज चुगते दिखाई देते तो वर्द्धमान दूर हट जाते ताकि उनको विघ्न न पहुँचे। यदि वे किसी घर के बाहर किसी ब्राह्मण, श्रमण या भिक्षुक को याचना करते देखते, तो उस घर में नहीं जाते थे ताकि उनकी आजीविका में बाधा नहीं पहुँचे। किसी के मन में द्वेष-भाव उत्पन्न होने का वे अवसर ही नहीं देते थे।

### दुर्गम विहार-चर्या

भगवान ने दुर्गम लाढ़ देश की वज्रभूमि और शुभ भूमि दोनों में विहार किया। वहाँ उन पर अनेक विपदाएँ आईं। वहाँ के लोग उन्हें ताड़ित करते-पीटते। उन्हें खाने को रूखा-सूखा आहार मिलता। कुत्ते उन्हें चारों ओर से घेर लेते तथा कष्ट देते। उन अवसरों पर ऐसे लोग विरले ही होते, जो कुत्तों से उनकी रक्षा करते। अधिकांश तो उलटे भगवान को ही पीटते तथा ऊपर से कुत्ते लगा देते। ऐसे अवसरों पर भी अन्य साधुओं की तरह उन्होंने दंड-प्रयोग नहीं किया। दुष्ट लोगों के दुर्वचनों को उन्होंने क्षमा भाव से सहन किया।

अनुपम चिंतन, अनुपम तप, अनुपम ध्यान, तितिक्षा, धैर्य आदि के साथ महावीर ने अपना साढ़े बाहर वर्षों का साधनाकाल व्यतीत किया। इस उग्र तपस्या तथा कष्ट-सहिष्णुता के कारण उनका श्रमण महावीर नाम सार्थक हो गया।

### साधना काल के उपसर्ग

श्रमण वर्द्धमान ने अपने दीर्घ साधना-काल का सारा समय आत्म-चिंतन तथा आत्म-साक्षात्कार के उद्यम में बिताया। उन्होंने इस साधनाकाल में उपदेश नहीं दिया, धर्म-प्रचार नहीं किया, न शिष्य मुंडित किये तथा न ही उपासक बनाये। उन्होंने ध्यान की अतल गहराइयों में डूबकर जगत और जीवन के प्रत्येक प्रश्न पर गंभीरता से चिंतन किया।

वर्द्धमान अपने युग के सर्वोत्कृष्ट प्रतिभाशाली एवं मेधावी पुरुष थे। यह उनकी दीर्घ साधना का ही फल था। शास्त्रों में उन्हें मेधावी (मेहावी), आशुप्रज्ञ (आसुपन्ने) तथा दीर्घप्रज्ञ (दीहपन्ने) बार-बार कहा गया है। उनके नाम के साथ निम्न विशेषण भी मिलते हैं-  
दक्खे- वे बड़े दक्ष व व्यवहार कुशल थे।

दक्खपइण्णे- वे संकल्प एवं प्रतिज्ञा में दृढ़ थे।

भद्दे- वे सरल-भद्र प्रकृति वाले थे।

विणीये- वे विनीत थे।

तीर्थंकर स्वयंसम्बुद्ध होते हैं। वे अपने स्वयं के पुरुषार्थ से आत्म-ज्ञान प्राप्त करते हैं।

वर्द्धमान को कभी-कभी किन्हीं स्थानों पर ठहरने की व ध्यान करने की भी अनुमति नहीं मिलती थी, किन्हीं-किन्हीं गाँवों में वे जाते तो उन्हें तुरन्त वापस जाने को कह दिया जाता था। अतः उन्होंने निम्नलिखित नियम लिये- 1. भविष्य में अप्रीतिकारक स्थान पर नहीं रहूँगा। 2. ध्यान में सतत लीन रहूँगा। 3. सदा मौन रखूँगा। 4. हाथ से ग्रहण करके भोजन करूँगा। 5. गृहस्थ का विनय नहीं करूँगा।

साधना काल में उनके जीवन में जो उपसर्ग आए, उनका कुछ विवरण यहाँ प्रस्तुत है-  
**अभय की उत्कृष्ट साधना**

श्रमण वर्द्धमान विहार करते हुए एक छोटे से गाँव 'अस्थिक ग्राम' में आये। वहाँ आसपास का वातावरण बड़ा ही भयावह एवं हृदय को कंपा देने वाला था। गाँव के बाहर शूलपाणि यक्ष का मंदिर था। एकांत स्थान देखकर भगवान ने गाँव वालों से वहाँ ठहरने की अनुमति माँगी। महावीर की दिव्य, सौम्य आकृति को देखकर लोगों के हृदय द्रवित हो गए। उन्होंने कहा- "देव! आप अन्यत्र ठहर जायें। यहाँ एक यक्ष रहता है जो बड़ा क्रूर है। रात में किसी को यहाँ ठहरने नहीं देता। उसे भयंकर यातना देकर मार डालता है।" महावीर यह सुनकर भी डरे नहीं और उन्होंने वहीं ठहरने का संकल्प किया तथा पुनः आज्ञा माँगी।

तब ग्रामवासियों ने महावीर को यक्ष से संबन्धित निम्नांकित घटना सुनाई- "देव! कुछ वर्षों पूर्व की घटना है। यहाँ से धनदत्त नामक व्यापारी पाँच सौ गाड़ियों में सामान लेकर गुजर रहा था। वर्षा के कारण उसकी गाड़ियाँ यहाँ पर कीचड़ में फँस गईं। बैल उनको खींच नहीं सके। पर उसके पास सफेद हाथी की तरह बड़ा ही बलवान एवं पुष्ट कंधों वाला एक बैल था। उस एक ही बैल ने धीरे-धीरे पाँच सौ गाड़ियों को कीचड़ से निकाल कर बाहर कर दिया। पर अत्यधिक परिश्रम के कारण वह बैल थक कर चूर हो गया तथा भूमि पर गिर पड़ा। व्यापारी ने अनेक प्रयत्न किये पर बैल खड़ा नहीं हो सका। तब व्यापारी ने गाँव वालों को एक बड़ी धनराशि दी तथा बैल की सेवा-परिचर्या का भार उन्हें सौंपकर वह आगे रवाना हो गया। गाँव वाले उस व्यापारी का सारा धन हजम कर गये तथा उन्होंने बैल की कोई सेवा-शुश्रूषा नहीं की, न ही उसे खाने को कुछ दिया। भूखे-प्यासे संतप्त बैल ने एक दिन अपने प्राण छोड़ दिये। वही बैल मरकर शूलपाणि यक्ष बना। अब गाँव वालों से अपने प्रति किये गए दुर्व्यवहार का बदला ले रहा है। उसने घर-घर में पीड़ा, त्रास तथा भय का आतंक फैला दिया है तथा सैकड़ों लोगों को मौत के घाट उतार दिया है।

महावीर उनकी कथा सुनकर भी निर्भय बने रहे तथा गाँव वालों से अनुमति लेकर वहीं एकांत स्थान देखकर ध्यानमग्न हो गए। अर्द्धरात्रि को यक्ष उस स्थान पर आया तथा एक मनुष्य को निर्भय खड़ा देखकर आग बबूला हो गया। उसने भयंकर अट्टहास किया,

लेकिन महावीर जरा भी विचलित नहीं हुए। वह यक्ष प्रलयकाल के तूफान की तरह हुंकार कर के रौद्र नृत्य करने लगा। लेकिन महावीर फिर भी स्थिर रहे। उसे उन पर अत्यधिक रोष आया। वह उनको तरह-तरह से यातना देने लगा। कभी मदोन्मत्त हाथी की तरह पैरों से रौंदता, कभी गेंद की तरह आकाश में उछालता, कभी बिच्छू की तरह जहरीले डंक मारता तो कभी शिकारी कुत्तों की तरह उनका मांस नोंच डालता। लेकिन महावीर फिर भी स्थिर और अडोल रहे। आखिर उसकी धृष्टता दूर हुई। उसकी दुष्टता महावीर की साधुता से भिड़कर, टकराकर निस्तेज हो गई। वह हतप्रभ हो गया तथा उसे अपने आप से घृणा हो गई। उसने प्रभु महावीर के समक्ष क्षमा मांगी। महावीर ने उसे अभय-दान दिया। प्रातःकाल जब ग्रामवासी आए तो वहाँ पर बड़ा शांत वातावरण था। यक्ष श्रमण महावीर की उपासना में निमग्न था। पूरा गाँव हर्ष से श्रमण महावीर की विजय-गाथा गाने लगा। (त्रिषष्टि शलाकापुरुषचरित, 10.3)

### अहिंसा की अमृत वर्षा

श्रमण महावीर सुवर्णबालुका नदी के पास कनखल नामक आश्रम पाद से गुजर रहे थे। उन्होंने पीछे से आते हुए कुछ ग्वालों की भयाक्रांत पुकार सुनी। उन्होंने कहा- “देव! आप रुक जायें, आगे न बढ़ें, इस रास्ते पर एक भयावह काला नाग रहता है, जिसने अपनी विष-ज्वाला से अगणित राहगीरों को भस्मसात् कर डाला है। हजारों पशु-पक्षी व पेड़-पौधे उसकी विषाम्नि से जलकर राख हो गए हैं।” महावीर दो क्षण रुक गए। उन्होंने अपना अभयसूचक हाथ ऊपर उठाया, जैसे संकेत दे रहे हों कि तुम घबराओ नहीं। गाँववालों ने उन्हें पुनः समझाया, पर महावीर धीर-गंभीर गति से आगे बढ़ते गये। उस नाग की बांबी के पास एक प्राचीन देवालय था, वे वहीं पहुँचकर ध्यान मग्न हो गए।

जंगल में घूमता हुआ वह सर्प अपनी बांबी के पास पहुँचा तथा वहाँ देवालय में एक मनुष्य को निश्चल खड़ा देख आश्चर्यचकित हो गया। साथ ही उसे भयंकर क्रोध भी आया। उसने अपनी विषमयी तीव्र दृष्टि से महावीर की ओर देखा, अग्निपिण्ड से जैसे ज्वालालाएँ निकलती हैं वैसे ही उसकी आँखों से तीव्र विषमयी ज्वालालाएँ निकलने लगीं। साधारण मनुष्य तो उनसे जलकर खाक हो जाता, पर महावीर पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने बार-बार उन पर प्रहार किया, पर महावीर अविचल ध्यान में निमग्न रहे। आखिर उसने एक तीव्र दंश उनके अंगूठे पर मारा। लेकिन यह भी निष्फल गया। उल्टे वहाँ से दूध की धारा बहने लगी।

महावीर का अब ध्यान पूर्ण हुआ। उन्होंने चंडकौशिक को उद्बोधन देते हुए कहा- “चंडकौशिक समझो! समझो! अब शांत हो जाओ। अपना क्रोध शान्त करो।” महावीर

के अमृत वचन सुनकर नागराज का क्रोध पानी-पानी हो गया। वह विचारों में गहरा उतरा तो उसे जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त हो गया। तीव्र क्रोध के कारण उसने पूर्व जन्मों में कितने-कितने कष्ट उठाये, वह उसे स्मरण हो आया। वह शांत होकर बार-बार उनके चरणों में लिपटकर क्षमा माँगने लगा। प्रातःकाल गाँव वालों ने यह दृश्य देखा तो वे आश्चर्यचकित हो उठे तथा प्रभु का गुणगान करने लगे। अहिंसा, अभय और मैत्री का यह एक ज्वलंत उदाहरण है। (त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, 10.3)

### साधना की अग्नि परीक्षा

साधना का ग्यारहवाँ वर्ष प्रारम्भ हुआ। श्रमण महावीर ने श्रावस्ती में वर्षावास किया। यहाँ पर ध्यान एवं योग की अनेक प्रक्रियाओं के द्वारा उन्होंने साधना को और भी प्रखर बनाया। तीन दिन का उपवास करके श्रमण महावीर पेड़ाल उद्यान में कायोत्सर्ग कर खड़े थे तथा उत्कृष्ट ध्यान-प्रतिमा में लीन थे। उनके तन-मन व प्राण अकंप तथा स्थिर थे। उसी समय एक देव संगम उनकी अग्नि-परीक्षा लेने आ पहुँचा। एक ही रात्रि में उस देव ने श्रमण महावीर को इतनी यातनाएँ दीं; इतने प्राणघातक कष्ट दिये कि वज्र-हृदय भी दहल जाये, किन्तु परमयोगी महावीर का एक रोम भी प्रकम्पित नहीं हुआ।

महावीर ध्यान की सर्वतोभद्र प्रतिमा में लीन थे। अचानक सांय-सांय की आवाज से दिशाएँ काँप उठीं। भयंकर धूल भरी आँधी से महावीर के शरीर पर मिट्टी के ढेर जम गए। पर महावीर ने अपने निश्चय के अनुसार आँखों की पलकें भी बंद नहीं की।

आँधी शांत हुई कि तीक्ष्ण मुख वाली चींटियाँ चारों ओर से महावीर के शरीर को काटने लगीं। तन छलनी सा हो गया, पर मन वज्र सा दृढ़ रहा।

तभी मच्छरों का समूह महावीर के शरीर को काट-काटकर उनका रक्त चूसने लगा। फिर दीमकें महावीर के पूरे शरीर पर लिपट गईं तथा भयंकर दंश मारकर काटने लगीं। पर महावीर विचलित नहीं हुए।

फिर बिच्छुओं द्वारा तीव्र दंश का प्रहार किया गया, नेवलों द्वारा मांस नोंचा गया, विषधर सर्पों ने स्थान-स्थान पर डसा तथा तीखे दाँत वाले चूहों द्वारा उनके शरीर को काटा गया, पर वे सर्वथा अकंपित, अवचलित बने रहे।

इसी प्रकार के घोर बीस उपसर्ग महावीर पर आये, पर संकल्प के धनी महावीर अपनी स्थिति से, अपनी नासाग्र दृष्टि से तिल भर भी डिगे नहीं। आखिर दुष्ट संगम का अहंकार चूर-चूर हुआ और उसने महावीर से क्षमा मांगी। प्रातःकाल महावीर की ध्यान साधना पूर्ण हुई और वे प्रसन्न-मन आगे विहार को बढ़े। (आवश्यक निर्युक्ति गाथा, 392)

## कानों में कील

साधना-काल के तेरहवें वर्ष में श्रमण महावीर छम्माणि गाँव के बाहर कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े थे। उसी समय एक ग्वाला वहाँ अपने बैल लेकर आया। श्रमण को देखकर बोला- “देव! जरा मेरे बैलों की देखभाल करना, मैं थोड़ी देर में आता हूँ।” यह कहकर वह वहाँ से गाँव चला गया।

थोड़ी देर में वह वापस आया तो उसे बैल नहीं मिले। वे चरते-चरते कहीं दूर निकल गए थे। उसने महावीर से पूछा- “देव! मेरे बैल कहाँ गये?” महावीर तो मौन-ध्यान में तल्लीन थे। उत्तर कहाँ से देते। इस पर वह ग्वाला आगबबूला हो गया। उसने फिर पूछा- “ऐ ढोंगी बाबा! तुझे कुछ सुनाई देता है या नहीं?” महावीर ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने कहा- “अच्छा, मैं तेरे कानों की चिकित्सा करता हूँ।” आवेश में मूढ़ ग्वाला जंगल में गया और वहाँ से किसी वृक्ष की दो पैनी लकड़ियाँ ली और महावीर के कानों में ठोक दी। उन्हें असह्य मारणान्तिक वेदना हुई, पर उन्होंने उफ तक नहीं किया। वे महाश्रमण तब भी ध्यान से तनिक भी विचलित नहीं हुए।

कायोत्सर्ग पूर्ण होने पर वे मध्यमा नगरी पधारे तथा सिद्धार्थ वणिक् के घर गोचरी ली। वणिक् ने उनके कानों में कीलों को देखा तो वह दुःख से काँप उठा। उसने तुरन्त खरक नामक वैद्य को बुलाया। उसने कानों से कीलें निकाली। भगवान को असह्य वेदना हुई। उनके मुख से एक भयंकर चीख निकल गई। खरक ने कानों में औषधि एवं तेल का मर्दन किया, जिससे उनके घाव कुछ दिनों में भर गए।

मानों साधक जीवन की यह अन्तिम वेदना थी, अन्तिम कड़ी थी, जो अब समाप्त हो गई। (त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, 20.4)

-70, टी.टी.के. रोड, अलवारपेट, चेन्नई-600018 (तमिलनाडू)

## आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान

श्री अरविन्द जैन

संस्थान एक बहार है, यह जीवन का आधार है,

संस्थान एक खजाना है, यहाँ जीवन को महकाना है।।

यहाँ हर बच्चा भाई-भाई, सब रहते इसमें हमराही,

है बड़े जनों का आदर और, छोटों पर भी है प्यार बहुत।।

-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, बजाज नगर, जयपुर (राज.)

## दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

1. जो नहीं चाहने पर भी आ जाता है वह ही दुःख है।
2. जो चाहते हुए भी नहीं रहता है वह ही सुख है।
3. दुःख को रोकना और सुख को बनाये रखना किसी के लिए भी संभव नहीं है।
4. कामना व संकल्प का अभाव होना सुख है।
5. कामना व संकल्प का होना दुःख है।
6. सुख के भोगी को दुःख भोगना ही पड़ता है।
7. कामनापूर्ति में प्रतीत होने वाला सुख कामना-पूर्ति में नहीं है, कामना के अभाव में है।
8. कामनापूर्ति में सुख मानना भ्रान्ति है, भूल है। 'सुख' कामना के अभाव में है, यह सम्यक् ज्ञान है।
9. अपने सुख-दुःख का कारण अन्य या पर को मानना पराधीन होना है। पराधीनता में दुःख है।
10. सभी कामनाएँ किसी की पूरी नहीं होती। अतः कामना-पूर्ति में सुख मानने वाले को कामना-अपूर्ति का दुःख भोगना ही पड़ता है।
11. सुख उसी का दास है, जो सुख का दास नहीं है।
12. सुख दुःख को दबा देता है, आनन्द दुःख को निगल जाता है।
13. दुःख क्या है? जो चाहते हैं वह मिलता नहीं है। जो मिलता है वह भाता नहीं है। जो भाता है वह रहता नहीं है। ये सब दुःख हैं। इन दुःखों से मुक्त होने का उपाय है चाहना का त्याग करना।
14. अमरत्व, शांति, मुक्ति (स्वाधीनता) और प्रीति के अनुभव में ही वास्तविक सुख है। जो विषय-सुख के त्याग से ही मिलता है।
15. अमरत्व का अनुभव विनाशी वस्तुओं से संबंध-विच्छेद करने पर होता है।
16. विषय-सुख प्रतिक्षण क्षीण होकर नीरसता में परिणत होता है। इसके साथ अभाव, अशांति, पराधीनता, चिन्ता, जड़ता, भय आदि अगणित दुःख लगे रहते हैं।
17. नीरसता की भूमि में कामना की उत्पत्ति होती है जो अभाव, अशांति और चिन्ता की

जनक है।

18. कामना के त्याग से शांति का सुख मिलता है। जिसमें क्षीणता का दोष नहीं है, अक्षय है।
19. स्वाधीनता का सुख ममता के त्याग से मिलता है। जो अक्षय व अखंड है।
20. प्रियता का सुख अहं व तादात्म्य के त्याग से मिलता है। जो अक्षय-अखंड-अनन्त व नित नवीनता युक्त होता है।
21. अपने सुख-दुःख का कारण अन्य को मानना, अपने को पराधीनता के घोर दुःख में आबद्ध करना है।
22. सुख-दुःख का कारण स्वयं को माना दुःख मुक्ति का मूलमंत्र है।
23. दुःख का कारण दोष (पाप) है। दोष वह है जिससे दूसरे को व स्वयं को दुःख मिले।
24. दूसरों के द्वारा हमारे प्रति किए गए जिस व्यवहार से हमें दुःख मिले और उसे हम सब बुरा (दोष) समझें वैसा बुरा (दूषित) व्यवहार हम दूसरों के प्रति करें, वह दोष है। दूसरों के द्वारा हमारे प्रति हिंसा, उत्पीड़न व कष्ट देना, झूठ बोलना, चोरी करना, व्यभिचार करना, शोषण करना, क्रोध करना, अपमान करना, माया-धोखा करना, लोभ से हमें ठगना, द्वेष करना, कलह करना, निंदा करना, पैशुन्य (चुगली) करना हमें बुरा लगता है। इस जानी हुई बुराई (दोष) को दूसरों के प्रति करना, दुःख का जनक है, दोष है, पाप है।
25. अपने को दुःख तब ही होता है जब हम किसी प्रकार का विषय-सुख चाहें और वह न मिले। अतः हमारे दुःख के कारण हैं- विषय-सुख का प्रलोभन, सुखासक्ति, सुख का भोग, सुख की दासता और सुख की आशा। इससे वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति की अनुकूलता (मनोज्ञ) के प्रति राग और प्रतिकूलता के प्रति द्वेष उत्पन्न होता है जो क्रोध (कामना), मान (मद), माया, लोभ आदि कषायों का कारण है। उनसे अभाव, चिन्ता, भय, वियोग, पराधीनता, दीनता, हीनता, तनाव, दबाव आदि दुःखों की आग निरन्तर दग्ध करती रहती है अतः विषय सुख का भोग दुःखों का कारण होने से दोष व पाप है, त्याज्य है।
26. इन्द्रियों के ज्ञान द्वारा विषय-सुखों का भोग करने पर विषय-भोग सुखद, सुन्दर व स्थायी लगते हैं। परन्तु विवेकदृष्टि से देखने पर नश्वर, दुःखद व दोषरूप लगते हैं। इस सत्य को अंगीकार करने पर विषय-सुख में दुःख का दर्शन होता है। फिर विषय-सुख को त्यागते ही सुख-दुःख से अतीत के साम्राज्य में प्रवेश हो जाता है। यह ही दोष और दुःख से मुक्ति की अनुभूति है। राग-द्वेष की आग शान्त हो जाने से निर्वाण हो जाता है। -82/127, नीलगिरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

## महावीर और अनेकान्त

प्रो. सुमेरचन्द जैन

आचार्य हरिभद्रसूरि की प्रसिद्ध उक्ति है- पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेषःकपिलादिषु युक्तिमद्वचनं यस्य, तस्य कार्यःपरिग्रहः। महावीर के प्रति मेरा पक्षपात नहीं है और कपिल आदि ऋषियों के प्रति मेरा द्वेषभाव नहीं है। जिसका वचन युक्तियुक्त है, उसको ग्रहण कर लेना चाहिए। मैं व्यक्ति को प्रधान नहीं मानता, युक्ति को प्रधान मानता हूँ। प्रस्तुत उक्ति के दो आयाम हैं- बुद्धि का समत्व और चिन्तन की स्वतन्त्रता। क्या किसी अनुयायी का चिन्तन स्वतन्त्र हो सकता है? जो दूसरे को मानकर चलता हो, उसका चिन्तन स्वतन्त्र कैसे हो? इसीलिए महावीर ने कहा- “सत्य की दिशा में अनेकान्त का प्रयोग करो। अनेकान्त का आशय है किसी को मानकर मत चलो। किसी वस्तु को एक दृष्टिकोण से मत देखो। अपनी पूर्व धारणा के दृष्टिकोण से मत देखो। वस्तु में जो है, उसे ही देखो और जितने वस्तु धर्म हैं, उतने ही दृष्टिकोणों से देखो।”

समग्र दर्शन जगत को अनेकान्तवाद का सिद्धान्त जैनदर्शन की एक महत्त्वपूर्ण देन है। यह एक वैज्ञानिक, अत्यन्त व्यापक और सार्वभौमिक सिद्धान्त है। अनेकान्त आग्रह मुक्त, उदार विचारधारा का स्रोत है। समन्वयवादी दृष्टिकोण का प्रतीक एवं परिपोषक है। यह खुले दिमाग से हर तथ्य पर चिन्तन-मनन करने का द्वार है और सत्य का सर्वांगीण परिचय पाने का सक्षम माध्यम है। इसके बिना विराट सत्य की उपलब्धि नहीं हो सकती। अनेकान्त दर्शन से चिन्तन पद्धति परिष्कृत बनती है। व्यवहार में मधुरता एवं शुद्धता का विकास होता है। बुद्धि में समत्व विकसित होता है।

महावीर ने अनेकान्त की स्थापना कर सम्प्रदायवाद की जड़ों में काट लगा दी थी। सम्प्रदाय की जड़ तब मजबूत होती है जब सत्य की अपेक्षा मान्यता को प्राथमिकता दी जाती है। साम्प्रदायिकता का सूत्र है- “मान कर चलो। वस्तु को एक दृष्टिकोण से देखो। पूर्व धारणा के दृष्टिकोण से देखो।” अनेकान्त के दर्शन में अनुगमन के लिए कोई अवकाश नहीं है। आचार्य हरिभद्र ने कहा- “महावीर मेरे बन्धु नहीं हैं और दूसरे दार्शनिक मेरे शत्रु नहीं हैं, फिर भी महावीर के पक्ष और दूसरों के विपक्ष में कैसे जाऊँ? महावीर ने जो कहा वह सत्य है।” क्या समग्र सत्य की व्याख्या महावीर ने की है? इस प्रश्न का समाधान यह है कि कोई भी देहधारी मनुष्य उसकी व्याख्या नहीं कर सकता। एक क्षण में वह एक ही शब्द का उच्चारण कर सकता है। यह वाणी की सीमा है। इस सीमा में सत्य के अंश का प्रतिपादन किया जा सकता है, समग्र सत्य का कभी नहीं किया जा सकता।

भगवान महावीर ने भारतीय दर्शन के मौलिक तत्त्व लोक, आत्मा, मुक्ति, शरीर, पदार्थ, पुद्गल और परमाणु आदि सभी का प्ररूपण अनेकान्त की शैली में किया है। पदार्थों के विभिन्न धर्मों पर, गुणों पर भिन्न-भिन्न अपेक्षाओं से दृष्टिपात करते हुए उन्होंने उनके विराट स्वरूप को प्रस्तुत किया है।

भगवान महावीर ने असंदिग्ध तथ्य दिया कि वस्तु का एक धर्म ही सत्य नहीं है, उसके सभी धर्म सत्य हैं। एक दृष्टिकोण से एक धर्म सत्य है तो दूसरे दृष्टिकोण से वस्तु का दूसरा धर्म भी उतना ही सत्य हैं जितना प्रथम। इस प्रकार विभिन्न अपेक्षाओं से वस्तु अनन्त धर्म वाली सिद्ध हो जाती है।

सृष्टि के भौतिक तत्त्वों में सबसे विराट तो यह लोक स्वयं ही है। इसकी नित्यता-अनित्यता के विषय में नाना अभिमत प्रचलित हैं। भगवान महावीर के सम्मुख जब यह प्रश्न आया तो उन्होंने इसका समाधान अनेकान्तवाद के आधार पर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा- “लोक कथंचित् शाश्वत है, ऐसा समय न तो कभी आया है, न वर्तमान में है, न कभी आएगा। लोक अतीत में था, वर्तमान में है और भविष्य में सदा रहेगा। अतः लोक ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अव्यय रूप से अवस्थित है। कथंचित् लोक अशाश्वत भी है, क्योंकि काल का परिवर्तन होता रहता है। अवसर्पिणी के बाद उत्सर्पिणी आती है। इस कालपरिक्रमा के आधार पर लोक की अशाश्वतता भी स्वयंसिद्ध है।”

लोक का विवेचन करते हुए उन्होंने कहा- “द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से लोक चार प्रकार के हैं। द्रव्य की अपेक्षा से लोक सान्त है, क्षेत्र की अपेक्षा से भी लोक सान्त है। काल की दृष्टि से लोक अनन्त है और भाव अर्थात् पर्यायों की दृष्टि से भी अनन्त है।”

लोक के एकत्व, अनेकत्व के प्रश्न पर भी महावीर ने सापेक्ष दृष्टि से प्रकाश डाला है। स्थानांग सूत्र में उन्होंने कहा- ‘एगो लोए’। संग्रहनय की दृष्टि से लोक एक है और व्यवहार नय की दृष्टि से लोक अनेक है। इस प्रकार लोक के नित्यत्व-अनित्यत्व, सान्तता-अनन्तता और एकत्व-अनेकत्व आदि पहलुओं को अपेक्षा के धरातल पर सुलझाया।

इसी प्रकार आत्मा और शरीर की भिन्नता-अभिन्नता विषयक मान्यता को भी अनेकान्त के आलोक में देखा। जब उनके समक्ष सवाल उपस्थित हुआ कि आत्मा शरीर से भिन्न है अथवा अभिन्न है, तो भगवान महावीर ने कहा- “आत्मा शरीर से कथंचित् भिन्न भी है, कथंचित् अभिन्न भी। आत्मा सरूप भी है, अरूप भी है।” आत्मा को यदि शरीर से कथंचित् भिन्न माना जाए तो आत्मवाद का समग्र सिद्धान्त ही विनष्ट हो जाता है। आत्मा और शरीर को एक मान लेने पर शरीर के विनाश के साथ-साथ आत्मा भी नष्ट हो जाएगी तब फिर मुक्ति स्वर्ग, नरक और पुनर्जन्म आदि की समस्त मान्यताएँ व्यर्थ हो जायेंगी।

महावीर ने यह नहीं कहा कि सत्य अनिवर्चनीय है और यह भी नहीं कहा कि आत्मा और पुनर्जन्म अव्याकृत है। उन्होंने कहा- 'सत्य सापेक्ष है। आत्मा, पुनर्जन्म आदि भी सापेक्ष हैं। इनके कुछ पर्यायों का प्रतिपादन किया जा सकता है, इसलिए नहीं कहा जा सकता कि सत्य अनिवर्चनीय और अव्याकृत है। महावीर ने किसी भी तथ्य का प्रतिपादन किया, वह सापेक्ष दृष्टि से किया। इस सापेक्षता का आधार है- पक्षपातशून्यता। एकांगी दृष्टिकोण का आधार है-पक्षपात। वस्तु के किसी एक धर्म के प्रति हमारा झुकाव होता है तब हम उसके शेष धर्मों को अस्वीकार कर उसी का समर्थन करते हैं, किन्तु असमर्थित और अज्ञात को स्वीकृति देने पर ही यह प्रमाणित हो सकता है कि हमारा मन किसी पक्षपात से ग्रस्त और पूर्व मान्यता से पीड़ित नहीं है। नए ज्ञान और नए विकास की सम्भावना अनेकान्त के क्षितिज में ही हो सकती है।

महावीर का सन्देश है- "मध्यस्थ बनो। राग और द्वेष के दोनों तटों के बीच में रहो।" जिसमें राग और द्वेष है, उसमें समभाव नहीं हो सकता। जिसमें समभाव नहीं होता, उसमें न अहिंसा होती है, न सत्य और न अपरिग्रह। उससे सामाजिक न्याय की आशा नहीं की जा सकती। अनेकान्त उनके लिए है जो मध्यस्थ हैं। अनेकान्त का दर्शन केवल तत्त्ववाद का दर्शन नहीं है। वह तत्त्ववाद और आचार शास्त्र दोनों का समन्वित दर्शन है। उसका स्पर्श प्राप्त किए बिना तत्त्व और आचार- दोनों सम्यक् नहीं हो सकते। वही तत्त्व सम्यक् है जो अनेकान्त के आलोक में दृष्ट है। वही आचार सम्यक् है जो अनेकान्त के आलोक में आचरित है।

अनेकान्त के अनुसार स्वीकृत सिद्धान्तों और नीतियों की सच्चाई तभी प्रकट होती है जब वे अपने प्रति सक्रिय और दूसरों के प्रति तटस्थ होते हैं। सम्प्रदाय और राजनीति- ये दोनों जहाँ सत्य को अपनी सीमा में बाँधकर अन्यत्र असत्य की स्थापना करते हैं, वहाँ अनेकान्त सत्य को सीमामुक्त कर अपनी स्वीकृति का प्रतिपादन करते हुए भी दूसरों की स्वीकृतियों का निरसन नहीं करता।

अनेकान्तवाद ने विरोधी प्रतीत होने वाले सत्यों की समन्वित स्वीकृति कर सह अस्तित्ववाद के सिद्धान्त को जन्म दिया। वास्तविकता वही है जो नित्य और अनित्य का समुदाय है। वास्तविकता वही है जो अस्तित्व और नास्तित्व का समुदाय है। वास्तविकता वही है जो निवर्चनीय और अनिवर्चनीय का समुदाय है। सहअस्तित्ववाद बहुत बड़ी सच्चाई है। इस सच्चाई के आलोक में वर्तमान के राजनीतिक वादों, सामाजिक पद्धतियों और संस्कृतियों की व्याख्या कर हम अनेक विरोधी तत्त्वों को समन्वय में बदल सकते हैं, संघर्षों को शांति और मैत्री के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

## ŚRĀVAKĀCĀRA AND PAÑCĀCĀRA(2)

Dr. H. Kushal Chand

### (III) Cāritrācāra

We should escape from the mistakes of *Cāritra* by following the *guṇas*. This includes five *samitis* and three *guptis*, which are termed, as *Aṣṭa-Pravacana-mātā*. The monk has to strive a great deal for the protection and maintenance of Right conduct. Five *samitis* i.e. modes of vigilance means right action, and three *guptis* i.e. mode of self-restraint means act of protecting or the act of controlling are the main rules of conduct which a *śrāvaka* can also follow to some extent.

First is *Īryā samiti* i.e. act of walking cautiously which implies that a monk has to place his feet very carefully. He should walk with an aim in mind to achieve knowledge, intuition and Right conduct and not otherwise. He should walk at day and not at night. He should watch carefully and should look down and watch four steps ahead while walking. He should walk only out of necessity. *Śrāvaka* should avoid travelling and walking unnecessarily.

Second is '*Bhāṣā-samiti*' i.e. rules of right speaking. This rule prescribes that the monk has to speak very carefully. He must not speak angrily, proudly, cunningly, motivated with greed, with verbal tactics out of fear and also he must not brag. Moreover, it is ordained that a monk must never use abusive language. He should address every one with sweet word as '*Mahānubhāva*', '*devānupriya*', '*Śrāvaka*' etc. and a *Śrāvaka* can also follow the same.

Third is '*Eṣāṇā Samiti*' i.e. proper search for food, which implies that, the monk should be very scrupulous to search for food in right manner. He has to avoid forty- two faults in this respect. Moreover, he cannot open and enter the closed door of a householder. He should not move out when it rains. In such state of affairs he would peacefully sit at his place and observe religious rites and penances and a *Śrāvaka* can follow these virtues during *gocari dayā*.

Fourth is *Ādāna-nikṣepaṇā-samiti* consists in receiving and keeping of things necessary for religious exercises, after having carefully examined

them. Fifth is *Utsarga-samiti* which requires performance of the operations of nature (that is nature's calls) in an unfrequented place. Nowadays we waste so much water by flushing the toilet. A new technique of washbasin connected over the flush tank will reduce the wastage of water.

*Gupti* is defined as control, curbing well every kind of activity (*samyag - yoganigraho Guptih*). The *guptis* are three : *mano-gupti*, *vacan-gupti* and *kāya-gupti*.

The first relates to the control of mind by preventing it from wandering into the forest of sensual pleasures. A monk or Śrāvaka ought to restrain his mind and should never entertain thoughts that would bring misfortunes to other beings.

The second *vacan-gupti* requires him to control his speech from lying or telling mixed falsehood. He should not use abusive language or language that is likely to be harmful to others. He should observe silence and not say anything ill about others.

In the use of his body, i.e. *kayā-gupti* he ought to be careful while standing, moving or lying down so that he does not cause misery to or destruction of any creature. There should be no room for evil actions, thoughts or bodily activity, all the activities of a monk or śrāvaka ought to be for the good of him and of others.<sup>11</sup>

#### (IV) Tapācāra

*Nirjarā* means destroying the *karmas* and trying to eradicate them from the soul and trying our best to do so. Just as a mango falls down when it is fully ripe or when it is made ripe, so also the dropping of the roots of karma is called *Nirjarā*. A Sadhu or a Śrāvaka has to follow *Tapācāra* for destroying the *karmas* and eradicate them.

*Akāmanirjarā* means experiencing and bearing with sorrows without violation and the *karmas* losing their roots naturally. *Sakāmanirjarā* means the dropping of the roots of sins by means of our *Tapas* and on account of our desire to destroy *karmas* and bearing with agonies on account of this reason. When their condition is ripe, they emerge to the surface and exhaust themselves. On account of this, karma losing its roots is called self-destruction. The destruction of *karmas* by means of *Tapas* is called *Upayanirjarā* or the destruction of *karmas* by means of endeavours. At present, *karmas* have to be destroyed only by means of *Tapas* or austerities. So they are described below. It must be remembered that if you

are bearing with hunger, thirst, violence involuntarily, *karmas* end by exhausting themselves then it is *Akāmanirjarā*. If we destroy *karmas* by means of willed endurance and by means of endeavours and austerities, with the idea of achieving spiritual purification and development and by enduring the effects of *karmas* and by carrying out austerities like fasting etc. and if we can destroy *karmas* thus, it is called *Sakāmanirjarā*.

*Tapas* or austerities are of 2 kinds: (A) External and (B) Internal. External austerities are those which are visible to the outside world and which cause hardship outwardly. The internal austerities are intended to shake and destroy the internal, impure propensities. The Jain *dharma* expounds six kinds of each of these two; so there are 12 kinds of austerities or *Nirjarās*.<sup>12</sup>

**(A) External:** The six kinds of external austerities: *Anaśana*, *Uṇḍarī*, *Vrittisaṃkṣepa*, *Rasatyāga*, *Kāyaleśa* and *Saṃlīnatā*

**1. Anaśana:** Discarding food. That means performing *Upavāsa*, *Ekāśana*, *Biyāsana*, *Cauvihāra*, *Tivihāra*, *Abhigraha* etc., which a Śrāvaka should take *vrata* and follow it, even a single day should not go without any *vrata*.

**2. Uṇḍarī:** Eating a little less than what one requires so that his austerities may achieve success. This is also a kind of austerity which a Śrāvaka should have the intention to follow.

**3. Vritti Saṃkṣepa:** Limiting the number of items to be eaten out of the items served. Taking a vow that one would not eat certain items other than some, like the limitation of fruit and vegetable to the extent of 100 varieties instead of the total of 24 lakh varieties.

**4. Kāyaleśa:** Bearing with the severities of loch (removing hair with hand), traversing on foot, impediments (*upasarga*) and difficulties. *Upasarga* means the impediments caused by Gods, human beings and animals. Śrāvaka should bear the pain of severities.

**5. Rasatyāga:** Śrāvaka should renounce the attachment for taste in food and drinks.

**6. Saṃlīnatā:** Preventing the body, organs, the voice, the senses and the mind from engaging themselves in evil propensities and restraining them.

**(B) Internal:** The six kinds of internal austerities: *Prāyaścitta*, *Vinaya*, *Vaiyāvaca*, *Svādhyāya*, *Kāyotsarga* and *Dhyāna*. *Prāyaścitta* means atonement for sins.

**1. Prāyaścitta:** Śrāvaka can self-scrutinize relating to spiritual purification; the purification of the *citta* and the destructions of *karmas*. There are 10

kinds of Prāyaścittas.

**(i) Alocanā:** Self-criticism revealing to the Gurumaharaj the propensity that prompted one to commit sins committed by one after thinking about them.

Śrāvaka has to make Āiōchanā.

**(ii) Pratikramaṇa:** Discarding sins by means of genuine repentance (mithyāduṣkṛta) (May my sins be falsified). Śrāvaka can pray for his sins being falsified.

**(iii) Viveka:** Discarding unnecessary and unacceptable food and other substances. Śrāvaka should not purchase unnecessary substances.

**(iv) Vyutsarga:** Carrying out a kāyotsarga to avoid impediments to the study of sutras or pratikramaṇa or the pursuit of knowledge. Śrāvaka can move forward towards pursuit of knowledge.

**(v) Tapā:** The austerities and penances suggested by the Gurumaharaj as atonement for sins. Śrāvaka can also follow austerities.

**(vi) Ched:** In order to purify the breaches reducing Charitrapāryāyā.

**(vii) Mool:** After having acted ignobly eradicating all the Charitrapāryāyās and again taking the great vows.

**(viii) Anavasthāpya:** Discarding all relations, even conversations with a person who has gone wrong or keeping him beyond certain barriers.

**(ix) Pāraṇehit:** Outside the group without the dress of a muni, staying for only a certain time in disguise.<sup>13</sup>

**2. Vinaya (Politeness):** (1) Devotion is the form of service. (2) Internal love and honour. (3) Adoration. (4) Discarding culmination. (5) Discarding unpleasantness and unhappiness.

Thus there are these 5 ordinary kinds of politeness and even these are austerities. The following are the special kinds of politeness which a Śrāvaka should follow:

**(a) Jñānavinaya:**

(1) Treating knowledge and those who have acquired knowledge with devotion.

(2) Honouring them.

(3) A noble contemplation on what the sarvajña has said.

(4) Observing the principles like Yoga, Upadana, one must also acquire knowledge.

(5) Putting the knowledge into practice. These are the 5 kinds of Jñānavinaya.

(b) *Darśana-vinaya* means being polite in rendering service etc. to those who possess the virtues of Samyagdarśan.

(c) *Cāritra-vinaya*: This is of 15 kinds. Having 5 kinds of faith in Cāritra. Acting according to them and stating them.  $5 \times 3 = 15$ . A Śrāvaka should follow the 15 kinds of Cāritra-vinaya.

(d) Mana vinaya, (e) Vachan vinaya and (f) Kāya vinaya - displaying politeness to Gurumaharaj etc. by means of the 3 *yogas* namely the activities of the mind, body and voice. Avoiding inauspicious propensities and engaging in auspicious propensities.

(g) *Lokavyvahāra vinaya*: This is of 7 kinds well-known in the world to be shown to Gurumaharaj etc. (1) staying near him; (2) abiding by his wishes; (3) trying to repay his benefactions with gratitude; (4) showing devotion to him by giving food etc., because of his virtues like Jñāna; (5) taking care of him and helping him in times of sorrow, sickness etc.; (6) thinking of the right time and place to serve him; (7) being obedient and helpful to him in all things.<sup>14</sup>

3) *Vaiyāvṛtya*: rendering service to the Ācārya. The Sthavirs (elders) the tapasvis, the sick *sadhus*, the new *sādhus*, the fellow members of one's faith (*kula, gaṇa, saṃgha*). A Śrāvaka should give them food, dress and utensils whenever they are in need of it.

4) *Svādhyāya*: (scriptural studies): It means pursuing knowledge and meditation. It is of five kinds which should be strictly followed by śrāvaka :

(1) *Vācanā*: Studying and explaining the sutras and their meanings Vachana.

(2) *Pr̥cchanā*: Clarifying doubts regarding one who has not understood it pruchcha.

(3) *Paravartan*: repeating the sutra and the meaning one has learned.

(4) *Anuprekṣā*: contemplating on the *sūtra* and its meaning.

(5) Listening to *Dharmakathas* engaging in spiritual discussions, enquiries, preaching etc. (Continue)

## References

11. Meena Sakariya, A Study of Ratna Traya, Department of Jainology, University of Madras, p. 216-217.
12. Acarya Sri Amolak Rishiji Maharaj, Jain Tattva Prakash. Op.cit, p.120-125.
13. ibid 14. ibid

-Deptt. of Jainology, University of Madra, Chennai  
29/3, Ranganthan Avenue, Kilpauk, Chennai-600010 (T.N.)

प्रासङ्गिक

## जीवन नैया के माँझी हो आप

श्री त्रिलोकचन्द जैन

चैत्रकृष्णा अष्टमी 14 मार्च 2015 को आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 77 वें जन्मदिवस के प्रसंग पर भावाभिव्यक्ति।

भगवन्त का क्या अद्भुत उदार चिन्तन ।

व्यापक सोच से अभिषिक्त है अन्तर्मन ॥

देहयष्टि भी तो गुणों की पुंज ।

समग्र गुणों के बने हो आप निकुंज ॥

आपका चलना 'जयं चरे' का जीवित अहसास ।

बैठना आपका 'जयं आसे' का पूर्ण प्रतिभास ॥

रजोहरण, माला संग सुशोभित कर ।

108 गुणों के मानो आप हो आकर ॥

गज सम गमन करते आपके युगल पाद ।

चरेवैति चरेवैति सिद्धांत का करते जैसे शंखनाद ॥

उर दर्शाता उत्कृष्ट गांभीर्य ।

स्कन्ध बताता श्रेष्ठ पंडित वीर्य ॥

ओष्ठ मिलन से प्रतीत होती प्रभु मिलन की प्यास ।

अभिराम नयन से मुक्तिपथ शीघ्र खोजने का प्रयास ॥

मस्तिष्क संघ की उच्चता का प्रतीक शिखर ।

संघ उन्नति के अनेक विचार समाये हैं प्रखर ॥

सकेशकर्ण चेहरे की शोभा बढ़ाते ।

अडिगता व दृढ़ता को क्या खूब दर्शाते ॥

घ्राण मध्य में संघ धुरी समान ।

संघ का बढ़ा रहे नित सम्मान ॥

मुख से झरता जिनवाणी झरना ।

गाँव-गाँव में समोसरण की रचना ॥

स्मित मोहक मुस्कान ।

वीतरागता की है पहचान ॥

आपाद देह शुभ शुभ्रता की प्रतीक ।

उक्त वचनों में किंचित् नहीं अलीक ॥

पर यह तो शरीर संरचना का कथन ।

भगवन की आत्मा में तो प्रभु का है स्पर्शन ॥

उसको कहने की कहाँ मुझमें क्षमता ।

मैं तो मात्र आपकी पवित्र देह में ही नमता ॥

भगवन् आपकी कृपा से कौन नहीं हुआ निहाल ।

सभी तो निरंतर हो रहे हैं नित मालामाल ॥

भगवन् आप कुछ कहो तो प्रेरणा ।

कुछ न कहो तो भी होती मौन देशना ॥

मैं भी तो आपका एक चरण किंकर ।

कृपा का आशीष रखना करुणाकर ॥

भगवन् के समीप रहने के गत ग्यारह दिन ।

मेरे जीवन की अमूल्य थाती व अनमोल क्षण ॥

नादान, अल्पज्ञ हूँ, नित आशातना होती ।

पर मेरे जीवन दीये की आप ही हो बाती ॥

जो कुछ भूलें हुई मुझसे भगवन् ।

क्षमा का कर देना मुझ पे वर्षण ॥

इस शिष्य की जीवन नैया के माँझी हो आप ।

खैना आपको ही है मुझे ज्ञात नहीं सागर का माप ॥

मेरी क्षमता व संवेग को भी आप लेते हो भाँप ।

संसार पार लगाकर मुझे बनाना है निष्पाप ॥

आपकी आज्ञा मेरे लिए मेरे प्राण होगी ।

आपका आदेश मेरे लिए मेरी जान होगी ॥

पूर्ण रूप से पालन करने का पूर्ण करूँगा प्रथम प्रयास ।

इसमें लग जाए चाहे मेरे जीवन की अंतिम साँस ॥

इस स्वार्थी संसार में एक आपका ही तो है विश्वास ।

इस अनाथ की अशरणता में आपकी ही तो है मात्र एक आस ॥

मैं समर्पित हो जाऊँ सागर में सरिता समान ।  
 अपने आपको को फना कर कुछ भी बढ़ा सकूँ संघ का मान ॥  
 इससे बड़ा सत्कार्य मैं तो नहीं कर सकूँगा भगवान ।  
 आपके चरणों में संघ सेवा करते निकलें मेरे प्राण ॥  
 अल्पज्ञ की अल्पज्ञता का यह एक छोटा-सा प्रमाण ।  
 शब्द तो जोड़ लिये पर भगवन् भावों पे देना ध्यान ॥

धन्य धन्य मेरे भगवान, धन्य धन्य मेरे भगवान---

-37/67, रजत पथ, मान्सरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)

## जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी

### सन्तोष

और चाहिए का भाव संताप लाएगा,  
 संतोषी ही शांति पाएगा॥

### पहचान

भगवान का कहा मान,  
 करले अपनी पहचान।

### स्मृति

याद रख, छोड़ के यह स्थान,  
 करना है एक दिन प्रस्थान।

### भाव

संभाल अपने भाव, मत होने दे,  
 अपने पे पुद्गल का प्रभाव।

### इति

पुद्गल से अप्रीति, प्रभु से प्रीति,  
 अर्थात् संसार की है इति।

### मौका

हे जीव! अब दुर्भावों में मत गिर,  
 स्वभाव में हो जा स्थिर,  
 यह मौका नहीं मिलेगा फिर-फिर।

### जानो-देखो

पाना है पद शाश्वत,  
 तो कर्मोदय को जानो-देखो,  
 पर जुड़ो मत।

### संसार

जिसको है पुद्गल से प्यार,  
 अभी बाकी समझिए उसका संसार।

### जागृति

जो जागृति में जीता है,  
 वह आत्मरस पीता है।

### अपने घर

बहुत भटके दर-दर,  
 अब तो चलो अपने घर।

### योग

हे जीव! प्रभु से करले योग,  
 सहज छूट जायेगा भोग,  
 मिट जायेगा कर्मरोग।

-संकलित

## जिनशासन की दीक्षा (3)

आचार्य विजययोगतिलक सूरिजी म.सा.

गुजराती पुस्तक 'जिनशासन की दीक्षा' का हिन्दी अनुवाद सुज्ञ श्रावकरत्न श्री स्वरूपचन्द जी बाफना 'सी.ए.', सूरत ने किया है। यह संवाद वैराग्य को पुष्ट करने वाला है। जनवरी-2015 से इसका क्रमिक प्रकाशन हो रहा है।- सम्पादक

**विलास-** आप जो मानसिक शान्ति की प्राप्ति और दुर्जनता के नाश होने की बात कहते हैं, उसके अनुसार साधु भगवंतों का महत्त्व बढ़ जाता है, यह बात सत्य है। परन्तु आध्यात्मिक प्रगति के सम्बन्ध में मैं सहमत नहीं हूँ। कारण कि मैं आत्मा को नहीं मानता। मैं जो दिखता है उसे मानता हूँ। आत्मा कहाँ दिखती है? बताओ।

**आचार्यश्री-** अपनी चर्चा का यह दूसरा मोड़ है। अभी तक हमने जो बातें तय की, वे हैं-  
(1) मन को स्वस्थ और शान्त बनाने के लिए साधु बनना पड़ता है। (2) साधु किसी समाज पर भार स्वरूप नहीं, उपकार रूप, आशीर्वाद रूप है।

**विलास-** हाँ जी।

**आचार्यश्री-** अब तीसरी बात आत्मा के अस्तित्व की आती है। तुम आत्मा को मानते हो या नहीं मानते हो, यह बाद की बात है। बुद्धि और बुद्धि की घट-बढ़ इस पदार्थ को तुम मानते हो या नहीं?

**विलास-** किस तरह से नहीं मानें? एक आदमी बुद्धिशाली दिखता है, दूसरा मंदबुद्धि दिखता है, इसीलिए बुद्धि है।

**आचार्यश्री-** बुद्धिशाली दिखता है, परन्तु बुद्धि दिखती है?

**विलास-** बुद्धिशाली को देखते हैं, मतलब बुद्धि न दिखे, फिर भी माननी पड़ती है।

**आचार्यश्री-** तुम्हारे स्वयं की बुद्धि तुम्हें दिखती है?

**विलास-** बुद्धि की उपस्थिति का अनुभव तो होता ही है, अब जिसका अनुभव हो, उसे नहीं मानने का प्रश्न ही नहीं आता है।

**आचार्यश्री-** अच्छा, दिखता है उसे ही मानना, ऐसा नहीं है, अपितु "जिसका अनुभव हो, उसे मानना" ऐसा तुम्हारा मत है। आत्मा को साबित करने के लिए जरा

भी मेहनत करनी पड़े, ऐसा नहीं है। आदमी मर जाता है, फिर क्या होता है? आदमी का शरीर एकबंध (मरने से पूर्व जैसा था वैसा ही) है, किन्तु इसका कार्य बन्द कैसे हुआ? इसमें से क्या चला गया? मानना ही पड़ेगा कि आत्मतत्त्व चला गया। जो तुम यह मानते हो कि 30 तत्त्व इकट्ठे हुए, इसीलिए चेतना शक्ति प्रकट हो जाती है तो मेरा तुम्हारे को इतना ही कहना है कि विश्वभर के वैज्ञानिक इकट्ठे होकर भी एक आदमी तो ऐसा बनावे जो मरे ही नहीं। उन 30 तत्त्वों में से जो तत्त्व कम हो, उसे इंजेक्ट करते रहना। आदमी मरना नहीं चाहिए। यदि इस प्रकार की चुनौती वैज्ञानिक स्वीकार करे तो हमें उनकी सभी बातें स्वीकार हैं।

**विलास-** यह तो संभव ही नहीं। मृत्यु को कोई नहीं रोक सकता। इसीलिए शरीर के सिवाय कोई दूसरा तत्त्व मानना ही पड़ेगा। परन्तु ऐसा नहीं मान सकते हैं कि इस शरीर में जीव उत्पन्न हुआ और मर गया। परलोक जैसी कोई वस्तु किसलिए माननी पड़े?

**आचार्यश्री-** परलोक मानने के भी कारण हैं। बालक जन्म लेता है तो उसे दूध पिलाना कौन सिखाता है? तकलीफ आती है तो रोना और उससे बचने के लिए माता की गोद में रहना- ऐसा किसने सिखाया? चमकती वस्तु या खिलौना दिखे तब दृष्टि उस पर स्थिर करनी, यह किसने सिखाया? और वस्तु हाथ में आए तब मुट्ठी बन्द करनी, ऐसा किसने सिखाया?

एक ही माँ-बाप की दो संतानों में भी स्वभाव, बुद्धि, रुचि-अरुचि के विषय, विचार, मान्यता, लगन आदि में भेद किस कारण से हैं? मानना ही पड़ेगा कि आत्मा जैसा कोई तत्त्व है जो नष्ट नहीं होता और उसने पूर्व भवों में जैसा कार्य करके जैसे संस्कार लिये वे दूसरे भव में साथ में जाते हैं और जन्मते ही ये संस्कार सामान्य रीति से दिखते हैं।

जीव मुख्य रूप से चार विषय (संज्ञाओं) में प्रवृत्ति करता है-

- (1) आहार
- (2) मानी हुई प्रतिकूलता का भय
- (3) इन्द्रियों के विषय में चित्त की प्रवृत्ति
- (4) संग्रह करना।

ये चार संज्ञाएँ जीव के जन्म से लगी हुई हैं। बालक जब जन्म लेता है, तबसे

उसमें चार संज्ञाएँ होती हैं। आहार-संज्ञा में दूध का सेवन, भय संज्ञा में भय से बचने के लिए माँ की गोद, मैथुन संज्ञा में अंगूठे आदि का चूसना तथा परिग्रह संज्ञा में मुट्ठी में जो आवे उसे पकड़ के रखना सम्मिलित किया जाता है। इसमें से कोई चीज दूर हो तो बालक दुःखी होता है, नहीं तो आनन्द और खिलखिलाहट करता है। जैसे-जैसे बालक बड़ा होता है, बुद्धि की शक्ति बढ़ती है, वह चार संज्ञाओं को बढ़ाने का कार्य करता है और उसमें विकास मानता है। उसके कारण ही आहार की विविधता, अनेक प्रकार के टेन्शन, भाँति-भाँति की इच्छा, संग्रह करने की वृत्ति आदि में जिंदगी पूरी कर देता है, परन्तु समझता नहीं कि हकीकत में संज्ञाएँ बढ़ने से दुःख बढ़ता है और इसके कारण ही बचपन से अधिक बुद्धिशाली, शक्तिशाली होने के बावजूद, बालकपन जैसा आनन्द भी अनुभव नहीं कर पाता है। वास्तव में चार संज्ञाओं का त्याग करके, सभी पदार्थों के साथ जुड़ाव तोड़ने से आत्मा सुखी बन जाता है और धर्म आत्मा को सुखी बनाने का ही साधन है। इन सभी बातों के आधार पर आत्मा और परलोक मानना पड़े और सुखी होने के लिए साधु जीवन स्वीकारना ही पड़े, तो इसमें क्या बाधा है।

आइन्सटाइन जैसे बहुत से विचारक वैज्ञानिकों ने यह स्वीकार किया है कि इस सृष्टि पर जीने वाले प्राणी कहाँ से आये? और क्यों आये? इसका संतोषजनक जबाव विज्ञान के पास नहीं है। अब तो पूर्वजन्म अथवा पुनर्जन्म के बारे में बहुत सारे चिन्तक और चिकित्सक सहमत होने लगे हैं और इसीलिए हम बलपूर्वक कहते हैं कि मात्र जिंदगी की चिंता न करो, आने वाली जिंदगी में आत्मा का क्या होगा? यह भी विचार कीजिए।

**विलास-** आपकी बात सुनकर विचार तो जरूर आता है कि साधु-जीवन अच्छा है, परन्तु आपका जीवन तो बहुत कष्टदायी है, अतः इस तरह जीना हमारे लिए संभव नहीं है। इस तरह जीने से मज़ा आता है, यह बात चित्त में ही नहीं उतरती।

**आचार्यश्री-** यह अपनी चर्चा का तीसरा मोड़ है। साधु जीवन में सुख ही है, क्योंकि दुःख का हेतु पदार्थ के साथ चित्त का जुड़ाव है और इसे तोड़ना ही दीक्षा है। इससे पहले तुम्हें समझाया ही है, फिर भी इसे हम दूसरी रीति से समझते हैं। समझो कि तुम कपड़ा बाजार में हो, दोपहर का समय है। तुम पंखे के नीचे

गादी पर बैठे हो। चाय की चुस्की ले रहे हो। तुम्हारे यहाँ एक भी ग्राहक नहीं। तुम्हारे पड़ोस की दुकान में जबरदस्त भीड़ है। उसका मालिक निरन्तर खड़ा ही है, माल बताता है। एक मिनट का भी आराम इसे नहीं। पसीनों की बूंदें टपक रही हैं। तब तुम स्वयं को सुखी मानते हो या उसको? सही बताना।

**विलास-** महाराज साहब! इसमें पूछने की क्या बात है? पड़ोसी ही सुखी लगता है न। कारण कि क्षण-क्षण उसकी इन्कम बढ़ रही है। अभी भले ही थोड़ी तकलीफ पड़ रही है, परन्तु बाद में तो लीला लहर। मुझे अभी भले ही दिखने में मज़ा लगता हो, परन्तु बाद में खाने के ही सांसे पड़ जायेंगे।

**आचार्यश्री-** 'पैसा मिलता है' इस विचार के कारण मानव सभी तकलीफों को सुख के रूप में अनुभव कर "मेरा मन और आत्मा क्षण-क्षण मजबूत बन रही है। व्यसन, रोग, दुःख नष्ट होकर मन स्वस्थ और आत्मा निरोगी बन रहा है", ऐसा अनुभव होता है तो साधु प्रसन्नता पूर्वक जीवन क्यों नहीं जीयें?

**विलास-** आप भले, जैसा पसन्द आये वैसा कहें। एक तरफ एयरकंडीशनर वाली होंडासिटी कार से उतरता सूटेड-बुटेड बिजनेस मैन हो, जिसकी कार का दरवाजा भी एक चौकीदार खोलता हो और दूसरी तरफ जेठ महीने की भरी दोपहरी में तेज गर्मी में साढ़े बारह बजे के समय हाथ में झोली के साथ खुले शरीर और नंगे पाँव पसीने से भरे शरीर के साथ चलते हुए साधु महाराज हो, दोनों में से कौन सुखी है? आप बताइये।

**आचार्यश्री-** एक व्यक्ति को हार्ट अटैक आया, अब दर्द नहीं होता, परन्तु सार संभाल के लिए आ.सी.यू. में वह भर्ती है। आ.सी.यू. में क्या होता है? एयरकंडीशनर, डनलप की गद्दी, सामने टी.वी. सेट, सुमधुर संगीत, मेज पर फल की प्लेट, सेवा में तत्पर नर्स, खबर पूछने आने वालों की लाइन। ऐसी स्थिति में रहने वाला एक आदमी तथा दूसरी ओर मिलने आने वालों की भीड़ में पसीने से तरबतर दूसरा। इन दो में से पहला सुखी या दूसरा? तुम ही कहो।

**विलास-** आपका उदाहरण देने की शैली गज़ब है। आई.सी.यू. वाला सुखी इसीलिए नहीं, क्योंकि वह पराधीन है। उसे बंधन है। वह रोग की पकड़ में जकड़ा हुआ है। जबकि बाहर रहा आदमी स्वस्थ है, इसीलिए वही सुखी माना जायेगा।

**आचार्यश्री-** मैं भी यही कहता हूँ। हॉंडासिटी से उतरता हुआ आदमी कितना अधिक पराधीन है। गाड़ी चली जाये तो भी तकलीफ, संपत्ति चली जाये तो हैरान, अरे! चौकीदार दरवाजा खोलने में देरी करे, तो मन अपसेट। कोई पुरानी बात याद आयी तो मन खिन्न, सब बेकार। साधु की अवस्था ऐसी है कि मन कभी भी पूरी जिंदगी में अपसेट होता ही नहीं, इसीलिए तो हमेशा सुखी है। वह किसी भी वस्तु के पराधीन नहीं।

एक बात तुम्हारी बुद्धि में स्थिर कर लो कि दिखने में कष्ट हो इसलिए कोई दुःखी हो, ऐसा नहीं है, आदमी का मन अपसेट हो तो ही आदमी दुःखी बनता है, इस आई.सी.यू. के बीमार की बात पर विचार करते हैं। वह हॉस्पिटल में इलाज ले रहा है, तब बिल्कुल बेड रेस्ट है। सप्ताह बाद उसे डॉक्टर यह कहे कि अब तुम्हे आई.सी.यू. में रहने की आवश्यकता नहीं, सामान्य वार्ड में जा सकते हो। एयर कंडीशनर गया, टी.वी. सेट गया, सुमधुर संगीत गया, खबर पूछने वाले कम हो गये, सुख के सभी साधन गये, किन्तु आनन्द बढ़ा। बाद में डॉक्टर कहे कि अब तुम बैठ सकते हो। तो बताओ! सोने में कष्ट ज्यादा या बैठने में?

**विलास-** बैठने में।

**आचार्यश्री-** मतलब कि अब कष्ट बढ़ा, इसी के समानान्तर विचार करने पर कहा जा सकता है कि दर्दी (बीमार व्यक्ति) के आनन्द में वृद्धि हुई। डॉक्टर कहे कि अब तुम चलकर टॉयलेट तक जा सकोगे। कष्ट बढ़ा, फिर भी आनन्द घटा नहीं। डॉक्टर फिर सूचना देता है कि तुम कोरीडोर में घूम सकते हो, कष्ट बढ़ा, आनन्द भी बढ़ा। अंत में डॉक्टर रोगी को यह जानकारी देता है कि तुम घर जा सकते हो। शान्ति से विचारना। अभी तक बिस्तर में सोना था, कोई करने को काम भी न था, कोई व्यवहार भी पालन नहीं करना था, धंधे की मगजमारी एवं परिश्रम नहीं था और अब? घर जाना पड़ेगा, ऑफिस संभालनी पड़ेगी, व्यवहार पालन करना पड़ेगा, दौड़भाग करनी पड़ेगी, यह सभी कष्ट बढ़ाता है, फिर भी रोगी हॉस्पिटल से निकलते वक्त कितना खुश मिजाज होता है।

**विलास-** वाह! लगता है कि आप यह साबित करना चाहते हो कि सुख में तो कष्ट ही होता है।

**आचार्यश्री-** पराधीनता ही दुःख है, पराधीनता छोड़ने में कष्ट हो तो भी वह सुख रूप ही

है। देखो, दो भाई हैं। सवेरे पाँच बजे का समय है। एक भाई ए.सी. वाले रूम में मखमल के बिस्तर पर आराम से सोया हुआ है। दूसरा उठकर जिम्नेजियम में जाता है, दंड निकालता है, बैठक करता है, वजन उठाता है, पसीने से लथपथ हो रहा है, हाँफ रहा है। बोलो! दोनों में से सुखी कौन?

**विलास-** दोनों अपनी अपनी रीति से सुखी हैं।

**आचार्यश्री-** विचार करके जबाव देना। तुम्हें कसरत के फायदे और कसरत न करने से शरीर को होने वाली नुकसानों की समझ हो तो समझ सकते हो कि वास्तव में कसरत का मूल्य कितना है? कसरत करने वाला स्वयं के शरीर को ऐसा मजबूत बनाता है। वातावरण बदले फिर भी इन्फेक्शन वगैरह तकलीफ उसे नहीं होती। बिस्तर में सोने वाला आदमी स्वयं के शरीर को इतना कमजोर बना देता है कि वातावरण में थोड़ा सा परिवर्तन आए, अथवा वायरस आये तो उसके शरीर को तुरन्त इन्फेक्शन लग जाता है, फिर वह हैरान परेशान हो जाता है। इसीलिए तो करोड़पति भी भर ठण्डी में मारिनिंग वॉक करता है। इसी से तो कसरत करने वाला समझदार सुखी है और कसरत न करने वाला मूर्ख दुःखी है, तुम्हारे यह बात समझ में आती है।

संयम-जीवन भी एक अद्भुत कसरत है। यह शरीर और मन को तो ठीक करती ही है, आत्मा को भी शक्तिशाली बनाती है, इसीलिए तो ढेर सारी भौतिक सामग्री के बीच में भी तुम चित्त की प्रसन्नता का अनुभव नहीं कर सकते हो, वहीं एक भी भौतिक सुख की सामग्री के बिना साधु चित्त की प्रसन्नता का अनुभव कर सकते हैं, अनुभव करते हैं। कारण कि एक भी सामग्री का बंधन न होने से सामग्री की गैर उपस्थिति में मन अपसेट नहीं होता। मानसिक इन्फेक्शन लगता ही नहीं। (क्रमशः)

### विन्नम अनुरोध

‘जिनवाणी’ हिन्दी मासिक पत्रिका के समस्त सदस्यों को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रमोद हो रहा है कि ‘जिनवाणी’ परिवार आपके एवं आपके परिवार की खुशियों में शामिल होने जा रहा है। जिनवाणी परिवार जन्मदिन, शादी की वर्षगाँठ आदि पावन प्रसंगों पर आपको बधाई संदेश प्रेषित करने का इच्छुक है।

अतः आप सभी सदस्यों से विन्नम अनुरोध है कि आप अपनी एवं परिवार के सभी सदस्यों की जन्मदिन, शादी की वर्षगाँठ आदि की तारीख जिनवाणी कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करावें। -मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

## आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द्र जैन

(गमा का थोकड़ा)

**जिज्ञासा-** पृथ्वी, पानी, वनस्पति में वैक्रिय के किन-किन घरों वाले जीव आते हैं?

**समाधान-** पृथ्वी, पानी, वनस्पति में वैक्रिय के निम्नांकित 14 घरों के जीव आते हैं- 10 भवनपति के, 1 वाणव्यन्तर के, 1 ज्योतिषी के तथा 1-1 पहले-दूसरे देवलोक के देवता। इन 14 घरों में रहे पर्याप्तक ऐसे जीव, जिन्होंने तीव्र आसक्ति के कारण संक्लेश परिणामों में पृथ्वी, पानी, वनस्पति में से जिसका आयुष्य बांध लिया है, वे उसी काय में आकर जन्म ले लेते हैं।

**जिज्ञासा-** वैक्रिय के 14 घरों के देव जो पृथ्वी, पानी, वनस्पति में आते हैं, उनकी क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ होती हैं?

- समाधान-**
- वे 9 ही गमों से पृथ्वी, पानी, वनस्पति में आ सकते हैं।
  - पृथ्वी, पानी, वनस्पति से वापस वैक्रिय के 14 घरों में नहीं जा पाते, इस कारण से जघन्य उत्कृष्ट दो भव ही माने जाते हैं।
  - कार्मग्रन्थिक मत से सास्वादन गुणस्थान में काल करके सास्वादन गुणस्थान में ही पृथ्वी, पानी, वनस्पति में आकर उत्पन्न हो जाते हैं, इसी कारण इनमें अपर्याप्त में पहला व दूसरा ये दो गुणस्थान माने जाते हैं।
  - सैद्धान्तिक (आगमिक) मत से मिथ्यात्व अवस्था में ही काल करके देवता पृथ्वी, पानी, वनस्पति में आते हैं, इसलिए उनमें एक पहला ही गुणस्थान माना जाता है।
  - वैक्रिय के 14 घरों में से आने वाले कोई-कोई देव तेजो लेश्या में पृथ्वी, पानी, वनस्पति की आयु बांधते हैं, इसलिए काल करते समय व अगले भव में उत्पन्न होते समय उनमें तेजो लेश्या मानी जाती है। यही कारण है कि पृथ्वी, पानी, वनस्पति के अपर्याप्तकों में तेजोलेश्या भी मानी जाती है। यह लेश्या इनमें अपर्याप्तकों में ही रहती है। यह नियम है कि देवों से आने वाले

अपर्याप्त अवस्था में मरण नहीं करते, अतः वे आयु का बन्ध भी अपर्याप्त अवस्था में नहीं करते। पर्याप्त अवस्था में जब आयु बांधते हैं, तब उनमें तेजो लेश्या नहीं रहती।

6. जो देवता पृथ्वी, पानी, वनस्पति में आकर जन्म लेते हैं, वे शुभ रूप वालों में ही जन्म लेते हैं, अशुभ रूप वाले पृथ्वी, पानी वनस्पति में नहीं।

**जिज्ञासा-** पाँच स्थावर के जीव यदि चार स्थावर (वनस्पति को छोड़कर) में आते हैं, तो वे कितने गर्मों से आ सकते हैं?

**समाधान-** पाँच स्थावर के जीव यदि वनस्पति को छोड़कर शेष चार स्थावर में आते हैं तो सभी नौ गर्मों से आ सकते हैं। इनमें विशेषता इतनी है कि पहले, दूसरे, चौथे और पाँचवें इन चार गर्मों से आते हैं तो प्रतिसमय असंख्यात ही आकर उत्पन्न होते हैं, जबकि शेष पाँच गर्मों से प्रतिसमय जघन्य 1-2-3 यावत् संख्यात तथा उत्कृष्ट असंख्यात भी आकर उत्पन्न हो सकते हैं।

इतना भी जान लेना चाहिए कि पहले, दूसरे, चौथे व पाँचवें इन चार गर्मों से चार स्थावर में आने वाले पाँच स्थावर के जघन्य 2 भव तथा उत्कृष्ट असंख्यात भव लगातार हो सकते हैं तथा उनका कालादेश जघन्य 2 अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कृष्ट असंख्यात काल का हो सकता है।

शेष पाँच गर्मों से जघन्य 2 भव तथा उत्कृष्ट 8 भव हो सकते हैं। कालादेश जघन्य 2 अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कृष्ट अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से 8 गुना हो सकता है। जैसे पृथ्वीकाय का  $22000 \times 8 = 176000$  वर्षों का उत्कृष्ट कालादेश हो सकता है।

**जिज्ञासा-** पृथ्वीकाय से पृथ्वीकाय में आने वाले जीवों में किन-किन बोलों में नाणत्ता (अन्तर) पड़ता है?

**समाधान-** पृथ्वीकाय का जीव जब जघन्य गमे से पृथ्वीकाय में आता है तो लेश्या, आयु, अध्यवसाय तथा अनुबन्ध इन चार बोलों का नाणत्ता पड़ता है। जघन्य गमे से आने वाला पृथ्वीकायिक जीव अपर्याप्त अवस्था में काल करने वाला होता है, इसलिए उसमें तेजो लेश्या नहीं होती, अध्यवसाय अशुभ ही होते हैं, आयु अन्तर्मुहूर्त ही होती है, अनुबन्ध आयु के समान जघन्य होता है, इस कारण से इन चार बोलों में अन्तर पड़ता है। उत्कृष्ट गर्मों से आने पर तो उन जीवों में उत्कृष्ट स्थिति ही मिलती है, जघन्य-मध्यम नहीं मिलती, इस

कारण से आयु का नाणत्ता पड़ता है। यह नियम है कि स्थिति उत्कृष्ट होने पर अनुबन्ध भी उत्कृष्ट ही होता है, अतः अनुबन्ध का भी नाणत्ता पड़ता है।

पृथ्वीकाय से अप्काय में आने वाले जीवों में भी इसी प्रकार से जघन्य गमों में चार बोलों में तथा उत्कृष्ट गमों में दो बोलों में नाणत्ता समझना चाहिए।

**जिज्ञासा-** पृथ्वीकाय का जीव जब तेउकाय के घर में आता है, तब किन-किन बोलों में नाणत्ता पड़ता है?

**समाधान-** पृथ्वीकाय के जीव के पृथ्वीकाय में आने के समान ही जघन्य तथा उत्कृष्ट गमों में नाणत्ता समझना चाहिए। अन्तर इतना अवश्य जानना कि इनमें लेश्या का नाणत्ता नहीं पड़ता। क्योंकि तेउकाय, वायुकाय में देवगति से कोई देव सीधा नहीं आता, इसलिए तेउकाय, वायुकाय में तेजो लेश्या नहीं मिलती। तीन अशुभ लेश्या ही मिलती है।

इससे यह भी फलित होता है कि पृथ्वी, पानी, वनस्पति में तेजोलेश्या देवताओं के आने की अपेक्षा ही घटित होती है। यदि मनुष्य तिर्यचों की अपेक्षा होती तो तेउकाय, वायुकाय में भी तेजोलेश्या मिल सकती थी।

**जिज्ञासा-** पृथ्वीकायिक जीव जब वायुकाय में आकर उत्पन्न होते हैं, तब नाणत्तों में क्या विशेषता रहती है?

**समाधान-** पृथ्वीकाय के जीव जब वायुकाय में आते हैं, तब पड़ने वाले सभी नाणत्ते तेउकाय में आने वाले जीवों के समान समझने चाहिए। इनके अतिरिक्त जघन्य गमा में समुद्घात का नाणत्ता भी पड़ता है। जघन्य गमा अर्थात् अपर्याप्त अवस्था में काल करने वाले वायुकायिक जीव हैं, ऐसे जीवों में वैक्रिय समुद्घात नहीं हो सकता। क्योंकि वैक्रिय समुद्घात तो बादर वायुकायिक जीवों में पर्याप्त होने पर ही संभव है, अतः वैक्रिय समुद्घात की अपेक्षा नाणत्ता पड़ता है।

**जिज्ञासा-** पृथ्वीकायिक जीव जब वनस्पतिकाय में आकर उत्पन्न होते हैं, तब नाणत्तों में क्या विशेषता रहती है?

**समाधान-** पृथ्वीकाय जीव जब वनस्पतिकाय में आते हैं, तब पृथ्वीकाय में आने के समान ही जघन्य गमों में चार नाणत्ते तो पड़ते ही हैं, उनके साथ ही प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीवों की अपेक्षा से अवगाहना का नाणत्ता भी पड़ता है। क्योंकि जघन्य गमों से जब कोई पृथ्वीकायिक आदि जीव वनस्पति काय में

आता है, तब उसकी अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग की ही रहती है। जबकि प्रत्येक वनस्पति वाले जीवों की उत्कृष्ट अवगाहना 1000 योजन झाड़री तक हो सकती है। इस प्रकार से औधिक (सम्पूर्ण) अवगाहना जघन्य गमे वालों में नहीं मिलने से अवगाहना का नाणत्ता माना जाता है।

इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि सूक्ष्म व साधारण वनस्पतिकायिक जीवों की अपेक्षा से अवगाहना का नाणत्ता नहीं पड़ता, क्योंकि इनकी जघन्य तथा उत्कृष्ट अवगाहना तो अंगुल के असंख्यातवें भाग की ही होती है। प्रत्येक वनस्पति वाले की अवगाहना से तुलना करने पर ही जघन्य गमे वाले वनस्पतिकायिक जीवों में अवगाहना का नाणत्ता समझना चाहिए।

उत्कृष्ट गमे वाले जीवों में आयु व अनुबन्ध इन दो बोलों में पड़ने वाले नाणत्तों का कारण पृथ्वीकायिक जीवों के समान समझ लेना चाहिए।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

## आत्मिक सुख मिलता है

श्री योगेशबाबू जैन

(तर्ज:- बाबुल का ये घर बहना.....।)

गुरु तव चरणों में, आत्मिक सुख मिलता है,  
सुगन्धित पुष्पों से, संयम उपवन खिलता है।।टेर।।  
मोहिनी का जाया है, मोती का दुलारा है,  
भगिनी वियोग से, तूने संयम स्वीकारा है,  
चेहरे पे तेज तेराSSSS, हरदम ही महकता है।।1।।  
चैत्र बदी आठम को, तूने गाँधी कुल पाया है,  
कार्तिक सुदी छठ को, तूने संयम अपनाया है,  
तेरे ही आदेशों पर, रत्नसंघ चहकता है।।2।।  
आराध्य के चरणों में, मुझे संयमामृत पीना है,  
आध्यात्मिक “योगों” से, मुझे भवजल तरना है,  
रोम-रोम में तेरे SSSS, वात्सल्य छलकता है।।3।।

-1/603, हाउसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर (राज.)

## वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (8)

मधुर व्याख्यात्री श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म. सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-सम्पादक

(तर्ज:- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥

उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥

(अठारहवाँ अध्ययन : संयति राजा)

निमित्त और उपादान से होती, कार्य सिद्धि है सुन्दर,  
रूपान्तरण की अद्भुत झाँकी, इस अध्ययन के अन्दर,  
गर्दभाली का संग पाकर, संयति संयम पालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥175॥

सत्संग और सान्निध्य समागम, कितना है हितदायी,  
मूल्य नहीं अनमोल कहा है, इक-इक पल सुखदायी,  
जीवन बन जाता है क्षण में, पूरा लाभ उठालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥176॥

करने को आखेट मृगों का, निकला संजय राजा,  
मार दिया भयभीत मृगों को, फल का नहीं अंदाजा,  
मन परिवर्तन की है गाथा, सुनकर बोध जगालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥177॥

देखा ध्यानी मुनिवर को तो, होश उड़े जब उसके,  
भस्म न कर दे तपो तेज से, मृग जो मारे इनके,  
ध्यान खोल राजा से बोले, हिंसा भाव मिटालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥178॥

कोई न भय तुम मुझसे खाओ, देता अभय मैं तुमको,  
हिंसा में क्यों लगे हुए हो, छोड़ चलोगे सब को,

क्षण भंगुर है जीवन जानों, अनित्य भावना भालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥179॥

अनित्य यह जीवन है राजन्, क्यों तू पसारा करता,  
मात पिता सुत बांधव दारा, साथ न कोई चलता,  
तेरा किया ही साथ में तेरे, चिन्तन ज्योत जलालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥180॥

बन्धु बांधव परिजन भी, जीते जी के साथी,  
साथ नहीं मरने पर जाते, चले कर्म की पाती,  
करके तपश्चरण हे राजन्! तोड़ मोह को डालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥181॥

मुनिवर के वचनों से राजा, बना मोक्ष अभिलाषी,  
राज छोड़ के राजा बन गया, जिनशासन संन्यासी,  
जैसे अभय मिला राजन् को, अभयदान दे डालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥182॥

कैसे परिवर्तन है आया, सहसा राजा के मन का,  
क्षत्रिय मुनि के आने से, योग मिला परखन का,  
उनके प्रश्नों के उत्तर से, अन्तर भाव दिखालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥183॥

संजय मेरा नाम है जानो, गोत्र मेरा है गौतम,  
गर्दभाली मेरे गुरु हैं, मुक्ति का मेरा उपक्रम,  
सेवा होती गुरु आज्ञा में, विनय भाव अपनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥184॥

थिर करने नव दीक्षित को तब वचन प्रभु के बताये,  
चारों ही एकान्तवाद के, मिथ्यामत समझाये,  
अनेकान्त की दृष्टि रखकर, सत्य तथ्य अपनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥185॥

ऐकान्तिक व्यक्ति के होते, मिथ्या वचन हैं सारे,  
बचकर रहता हूँ मैं उनसे, पर मत कभी न तारे,  
आर्य धर्म का पालन करके, दिव्य गति को पालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥186॥

पूर्व जन्म का ज्ञान मुझे है, देवलोक से आया,  
पुनर्जन्म और आत्मन् का, ज्ञान सही जो पाया,  
नास्तिक भावों को तज करके, आस्तिक भाव जगालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥187॥

जिन दर्शन से बढ़कर कोई, अन्य नहीं है दर्शन,  
सूक्ष्म दृष्टि से तत्त्व ज्ञान का, और कहीं ना वर्णन,  
इस पथ के अनुगामी बनकर, जीवन सफल बनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥188॥

मुक्ति के पद पाने हेतु, रत्नत्रयी है साधन,  
चक्री ने भी पायी मुक्ति, करके इसका आराधन,  
श्रेय मार्ग को अपना करके, जीवन ज्योति जलालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥189॥

जिनशासन जयवंत सदा ही, महापुरुषों के कारण,  
धन वैभव और राजलक्ष्मी को, छोड़ के दीक्षा धारण,  
दस चक्री छः महाराजा और प्रत्येक बुद्ध गिनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥190॥

उस सुख पे क्या इतराना, जो अनन्त दुःखों को देगा,  
उस दुःख से क्या घबराना, जो अनन्त सुखों को देगा,  
राज-पाट सब छोड़ के निकले, उन वीरों को ध्यालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥191॥

कितना ऊँचा कितना सुन्दर, जिनशासन ये हमारा,  
तार दिया भवजल से उसको, जिसने लिया सहारा,  
तन मन से आराधन करके, सारे कर्म खपालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥192॥

जिन द्वारा उपदिष्ट मार्ग पर, तुमको राजन् चलना,  
ऐकान्तिक अहेतुवादों के चक्कर में नहीं फंसना,  
सत् पुरुषों के पावन पथ पर, तुम भी कदम बढ़ालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥193॥

## (उन्नीसवाँ अध्ययन : मृगापुत्रीय)

रम्य एक सुग्रीव नगर था, नृप 'बलभद्र' यशस्वी,  
'मृगा' नाम था पटरानी का, 'बलश्री' पुत्र यशस्वी,  
'मृगापुत्र' ही नाम था चर्चित, प्रेरक गाथा गालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥194॥

था युवराज दमीश्वर भावी, मात-पिता का प्यारा,  
रंग-महल में क्रीड़ा करता, रमणी संग नज़ारा,  
भोग-भरे जीवन को तजकर, योग का रंग जमालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥195॥

महल झरोखे बैठ के देखा, पथ से मुनि को जाते,  
संयम गुण से समृद्ध थे वे, शील से शोभा पाते,  
गुणरत्नों के सागर मुनि के, दर्शन से सुख पालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥196॥

मुनिदर्शन से मृगापुत्र का, अनुचिन्तन गहराया,  
ऐसा रूप पूर्व में देखा, याद उसे अब आया,  
मनोयोग से मुनि दर्शन कर, शुभ परिणाम जगालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥197॥

शुभ-चिन्तन से पूर्व जन्म की, जाग उठी अंगड़ाई,  
पाला था मुनिधर्म पूर्व में, थी उसकी पुण्याई,  
संयम से अनुरक्ति जगाकर, राग-रंग को टालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥198॥

वैरागी बन करके बोला, मात-पिता से जाकर,  
पंच महाव्रत सुने पूर्व में, पाले थे दे आदर,  
दुःख होते तिर्यंच नरक में, उनसे जान छुड़ालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥199॥

ग्रहण करूँगा दीक्षाव्रत को, दे दो अनुमति माते,  
भोगों को मैं भोग चुका हूँ, आखिर ये तड़पाते,  
कामभोग हैं विषफल जैसे, मन से इन्हें निकालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥200॥

बना अशुचि से तन अपना, दुःख द्वन्द्वों का भाजन,  
अशाश्वत आवास जीव का, रहता नहीं सनातन,  
इन भावों का चिन्तन करके, शुचिता मन में रमालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥201॥

नहीं आता आनन्द मुझे अब, ऐसे नश्वर तन में,  
ना जाने कब छोड़ चलेगा, शंका नहीं गमन में,  
जल बुद-बुद सम मिट जायेगा, तन का मोह छुड़ालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥202॥

जन्म-जरा और रोग मरण ही, इस तन का है लेखा,  
सार हीन काया में पलभर, नहीं सुख की कोई रेखा,  
दुःखमय इस जग की ज्वाला से, सार का तत्त्व निकालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥203॥

जन्म-जरा सब दुःख रूपी हैं, रोग-मरण भी दुःख है,  
क्लेश सभी पाते रहते हैं, जगत् स्वयं ही दुःख है,  
जग का सत्य स्वरूप समझकर, सुख की राह निकालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥204॥

होकर विवश एक दिन मुझको, छोड़ सभी को जाना,  
भोगों का फल दुःखदायी है, अन्त समय पछताना,  
बन्धु-बांधव धन-वैभव से, निस्पृह भाव जगालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥205॥

बिन पाथेय लिये जो पंथी, दूर-देश को जाता,  
पीड़ित होकर भूख-प्यास से, अधबीच ही बिलखाता,  
पर भव का पाथेय धर्म है, ले संताप को टालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥206॥

घर को जलता देख के स्वामी, महंगी वस्तु बचाता,  
जग में सबसे मूल्यवान है, आत्म-तत्त्व कहलाता,  
दुःख से जलते इन लोकों से, खुद को आज निकालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥207॥

श्रमण-धर्म का पालन दुष्कर, सुन आँखों के तारे,  
सहस्र गुणों का अर्जन करके, अच्छे-अच्छे हारे,

कष्ट साध्य है, साधु जीवन, खुद को आज सम्भालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥208॥

बहुत कठिन है शत्रु-मित्र पर, समभावों को रखना,  
जीवन में हिंसा से विरति, मृषावाद को तजना,  
हितकर सत्य बोलना भारी, मन को अभी मनालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥209॥

बिना दिये कुछ भी ना लेना, चर्या बड़ी कठिन है,  
एषणीय वस्तु क्या लेना है, दोष रहित मुमकिन है,  
विकट बड़ा है उग्र ब्रह्मव्रत, अपना मन समझालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥210॥

धन-वैभव-सेवक का परिग्रह, इनसे ममता तजना,  
रात्रिभोज कभी ना करना, बड़ा कठिन है पलना,  
उत्कट है सब परीषह सहना, दिल में बात बिठालो।

जीवन धन्य बनालो.....॥211॥

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरत्न डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,  
'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बख्शतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

### आगमवाणी का शेषांश

यहीं नहीं, उन प्रकृतियों का तीव्र अनुभाग बंध भी मंद अनुभाग में परिणत हो जाता है। प्रदेशों में भी कमी आ जाती है। बहुप्रदेश वाला बंध अल्प प्रदेश वाला हो जाता है। अनुप्रेक्षा काल में आयु कर्म का बंध कदाचित् होता है और कदाचित् नहीं होता। असातावेदनीय कर्म की वृद्धि भी रुक जाती है। जीव को अनुप्रेक्षा के कारण साता की अनुभूति होती है। उसके दुःख का उपशम हो जाता है। इस प्रकार अनुप्रेक्षा करने वाला जीव चार गतियों में भ्रमण को सीमित कर लेता है एवं दुःखों से सदा के लिए मुक्त हो सकता है।

इसलिए वाचना, परिवर्तना आदि स्वाध्याय करने के साथ अनुप्रेक्षा को जीवन का अंग बनाना चाहिए। क्योंकि अनुप्रेक्षा भी एक प्रकार का तप है। यह भी कर्मों की निर्जरा का महान् हेतु है। जितना अनित्य, अशरण आदि भावनाओं का चिन्तन बढ़ेगा, उतना कर्मों का प्रगाढ़ बंधन शिथिल होता जायेगा। स्व के अध्ययन रूप स्वाध्याय से भी अनुप्रेक्षा पुष्ट होती है। यह अनुप्रेक्षा कर्मों के क्षय हेतु बलवान् साधन है।-सम्पादक

## दान देने का मैथ्स और केमेस्ट्री

संकलित

जॉन-रॉकफेलर अमेरिका के बहुत बड़े उद्योगपति और दानवीर थे। उन्होंने कहा था- “मैंने इतना पैसा इसलिए कमाया, क्योंकि मुझमें लोगों की मदद करने का जज्बा था। मैंने लोगों को दिया इसलिए मुझे मिला। यदि मैं सही तरह से पैसा दान करना बंद कर दूँ तो ईश्वर मुझसे पैसा वापस ले लेंगे।”

अर्थशास्त्री जॉन सी. ब्रुक्स ने जब 1905 में दिया रॉकफेलर का यह कथन पढ़ा तो उन्हें अजीब लगा कि पैसा बांटकर, कोई कैसे पैसा कमा सकता है? यह तो कोई इकोनॉमिक्स नहीं हुआ। उन्होंने सोचा कि यदि इकोनॉमिक्स की कक्षा में कोई छात्र उनसे पूछे कि मैं धनी होना चाहता हूँ तो क्या उसे मैं यह कहूँ कि अपना पैसा बांट दो धनी हो जाओगे? यह तो कोई बात नहीं हुई। उन्होंने रॉकफेलर को गलत साबित करने की ठान ली। तभी हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने अमेरिका के 41 समुदाय के 30 हजार लोगों के सेवाभाव व दान देने की प्रवृत्ति का अध्ययन करने की घोषणा की। ब्रुक्स बेचैनी से शोध के आंकड़ों का इंतजार करने लगे। आंकड़े आने पर वे महीनों कम्प्यूटर पर काम करते रहे तो नतीजा यही आया कि वे लोग धनी होते नज़र आए, जिनमें देने की प्रवृत्ति थी। इतना ही नहीं उन्हें एक विरोधाभासी तथ्य भी नज़र आया कि दो समान परिवार थे जिनके एक धर्म, एक नस्ल, परिवार में बच्चों की संख्या समान, समान आय, शहर एक, शिक्षा का स्तर समान यानी सबकुछ एक जैसा सिवाय इस बात के कि एक परिवार चैरिटी में दूसरे परिवार की तुलना में 100 डॉलर ज्यादा देता था और यह परिवार औसतन 375 डॉलर ज्यादा कमाता था। वे तो चकरा गए। उन्होंने नया डेटा कलेक्ट किया, नया सॉफ्टवेयर लाए पर, नतीजा वही। उन्होंने इसे प्रकाशित नहीं कराया। फिर उन्होंने 50 साल में अमेरिका में चैरिटी में आए बदलाव और आमदनी का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि 1954 और 2004 के बीच अमेरिकियों की खरीद क्षमता में 150 फीसदी वृद्धि हुई तो दान देने की क्षमता 190 फीसदी बढ़ी। यानी जितना पैसा आया, लोग उतने उदार होते गए। उन्होंने पाया कि यदि अमेरिकी दान की रकम को 1 फीसदी बढ़ाते हैं तो बाजार में 1 अरब डॉलर आते हैं, जिनसे नए 39 अरब डॉलर पैदा होते हैं। दान देना व्यक्तिगत निवेश ही नहीं यह महान् देशभक्ति का काम है। दान के पैसे से नौकरियाँ पैदा होती हैं, आर्थिक वृद्धि होती है, अवसर पैदा होते हैं और टैक्स से होने वाली आय बढ़ती है। अमेरिकी लोग फ्रांसिसियों की

तुलना में साढ़े तीन गुना, जर्मनों से 7 गुना और इटली के लोगों की तुलना में 14 गुना ज्यादा दान देते हैं। भ्रम में पड़े ब्रुक्स अपने मनोवैज्ञानिक सहयोगी के पास गए। उन्होंने कहा- “हम यह बात बरसों से जानते हैं। तुम अर्थशास्त्री सिर्फ पैसा देखते हो। पैसा जो खुशी लाता है, हम उसे देखते हैं। खुश व्यक्ति ज्यादा उत्पादक होता है। ज्यादा काम करता है।” चैरिटी से खुशी और खुशी से सफलता।

मार्निया रॉबिन्सन की किताब ‘क्यूपिड्स पॉइजन्ड एरो’ के मुताबिक खुद की खुशी के लिए जब हम कुछ करते हैं तो डोपामाइन हार्मोन निकलता है। यह हार्मोन क्रैविंग यानी किसी चीज़ की तीव्र इच्छा तो पैदा करता जाता है, संतुष्टि नहीं देता। एक इच्छा पूरी हो तो यह दूसरी इच्छा पैदा करता है। इसका स्तर बहुत ज्यादा हो जाता है तो व्यक्ति डिप्रेशन में चला जाता है। डोपामाइन को संतुलित करने और प्रेम की भावना पैदा करने वाला हार्मोन है आक्सीटोसिन। यह तनाव दूर कर, रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करता है, हमें दूसरों की परवाह करने वाला, निःस्वार्थी, दयालु और प्रेमपूर्ण बनाता है। बिना मांगे देने, आँखों में देखकर मुस्कराने, गौर से किसी की बात सुनने, माफ करने और अहसान जताने से यह हार्मोन पैदा होता है और इस हार्मोन से ये सकारात्मक प्रवृत्तियाँ पैदा होती हैं।

-दैनिक भास्कर से साभार

## पता नहीं कब सौ दिन पूरे हो जायें

श्री राजकुमार नवलखा

अचानक, पता नहीं कब हमारे सौ दिन पूरे हो जायें और यह धन-दौलत जिसे हम अपनी समझ रहे हैं, यहीं छूट जाय, या इसी भव में पाप कर्म के उदय से इसे डॉक्टर, सरकार या अपने ही स्वजन छीन लें और बुढ़ापे में हम हाथ मलते रह जायें और आँसू बहाते हुए सोचने पर मजबूर हो जायें कि सम्पन्न और सक्षम होते हुए भी अहंकार के कारण किसी दीन दुःखी की सहायता नहीं की और अब हाथ मिल रही है। हम अपने ऐशो आराम, मौजमस्ती में तो दिल खोल कर खर्च करते हैं, पर असहाय स्वधर्मी को सहायता देने का अवसर आये तो स्वयं ही दीन बनकर अपना दुःखड़ा रोने लग जाते हैं। हम समझदारी से सोचें तो पूर्वभव के पुण्यप्रताप से प्राप्त धन सम्पत्ति को दीन दुःखियों की सेवा में अर्पित कर यह भव व अगला भव दोनों सुधार सकते हैं।

एक विद्वान् का कहना है कि मुझे अपने धन से कोई तृप्ति नहीं मिली। जब मैंने उसे दीन-दुखियों में बांट दिया तो मुझे परम संतोष का अनुभव हुआ।

दूसरी ओर सहयोग ग्रहण करने वाला स्वधर्मी बंधु यह भाव रखे कि मेरी अनुकूलता होने पर धन आदि को लौटा दूँगा या ये नहीं लेंगे तो किसी धर्म-कार्य में लगा दूँगा।

-आदित्य मार्ग, गुलाबबाड़ी, रामपुरा बाजार, कोटा (राज.)

## संतोषी ही सबसे बड़ा धनी

श्री रमेशचन्द्र कनेरिया

उत्तराध्ययन सूत्र के नवम अध्ययन में श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने कहा है- 'इच्छा हु आगाससमा अणंतिया' अर्थात् इच्छा आकाश के समान अनन्त होती है। दूसरे शब्दों में सतत इच्छा को व्यक्ति की तृष्णा कह सकते हैं। तृष्णा अनन्त है और धन असंख्यात है। तृष्णा मोह का रूप है, मोह से कर्म उत्पन्न होते हैं और ये संसार में जन्म-मरण को बढ़ाते हैं, जबकि जैन दर्शन की मुख्य प्ररूपणा जन्म-मरण को बढ़ाना नहीं, अपितु घटाना है ताकि एक दिन जन्म-मरण घटाते-घटाते जीव मोक्षगामी बन सके।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो सारा विश्वरूपी धरातल धन की दौड़ में ही अपनी सर्वशक्ति लगा रहा है। अखबारों में आये दिन खबरें आती रहती हैं कि मुकेश अम्बानी सबसे धनी हो गये तो कभी लक्ष्मी निवास मित्तल स्टील किंग को दुनिया का सबसे बड़ा धनी व्यक्ति बताया जाता है। किन्तु महापुरुषों ने यही कहा है कि लोभी व्यक्ति को सोने-चाँदी के असंख्यात पर्वत भी संतुष्ट नहीं कर सकते। क्या मनुष्य का लोभ कभी शान्त हुआ है? इस प्रश्न का उत्तर देना सरल नहीं है। यह ऐसा जटिल प्रश्न है जो कि गृहस्थ जीवन की उलझनें बढ़ाता ही चला जाता है। क्योंकि गृहस्थ के पास पैसा नहीं है तो उसकी कीमत दो कौड़ी की भी नहीं है, अतः धन कमाने से विरत भी नहीं हुआ जा सकता। ऐसी स्थिति में धन को 'साधन' समझकर उसके अर्जन के औचित्य पर विचार कर तथा जो मिला है उसमें प्रसन्न रहकर जीना चाहिए। इस प्रश्न का समाधान भगवान द्वारा कथित वाणी से हमें भी प्राप्त होता है। भगवान ने कहा है कि सुखी बनना है तो "इच्छाओं को वश में करना सीखो", "लोभ-विजयणं संतोषं जणयइ" अर्थात् लोभ को जीतने से संतोष गुण की प्राप्ति होती है।

एक बार आदि शंकराचार्य से एक जिज्ञासु ने प्रश्न पूछा कि-"दरिद्र कौन है?"

उन्होंने उत्तर दिया-"जिसकी तृष्णा का कोई पार नहीं वही सबसे बड़ा दरिद्र है"। जिज्ञासु ने पुनः प्रश्न किया कि-"धनी कौन है?" शंकराचार्यजी ने उत्तर दिया-"जो संतोषी है वही धनी है। संतोष से बड़ा धन दूसरा नहीं है।"

आज भले ही अखबारों में धनी व्यक्तियों की सूची में टाटा, बिड़ला, अम्बानी, स्टील किंग का नाम आता हो, किन्तु ज्ञानियों ने संतोष को ही सबसे बड़ा धन बताया है। अतएव हर व्यक्ति को इस ओर ही बढ़ने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

-सेवानिवृत्त शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी,

कार्यालय उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा विभाग, कोटा (राज.)

## कहाँ से उनके गौरव का गान करना करूँ शुरु

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

दर्शनीय, वंदनीय, पूजनीय और जगत शिरोमणि हैं गुरु

कहाँ से उनके गौरव का गान करना करूँ शुरु।

जगा दे भवों की सुप्त चेतना को, गुरु तो ज्ञान की वो नई भोर है।

हर कण अंतर परिपूर्ण है गुणों से, तभी तो भक्तों के सिरमौर है।

गुरु के उपकारों का छोर जता सके, ऐसा कोई माप नहीं,

है मेरा रोम का ऐसा कौनसा कण, जहाँ बसते आप नहीं।

यों तो संसार से है गुरु का अलगाव,

फिर भी हर आत्मा से होता कैसा लगाव,

अनुकम्पित हो उठता है उनका हृदय,

जब हम पर देखते हैं विकारों के घाव।

गुरु की वाणी को मन से जोड़ें, ना जोड़ें व्याकरण से,

राह बताती बचने का, यहीं तो अनन्त जन्म-मरण से।

माने ना उनकी बात यदि हम, सचमुच बड़े अभागे हैं,

जोड़ते आत्मा को परमात्मा से,

गुरु तो विश्वास के मजबूत धागे हैं।

गुरु निःस्वार्थ प्रेम का अद्भुत और उदार रूप हैं,

मानो जाड़ों के मौसम में सुकून पहुँचाती धूप हैं।

गुरु जैसा जीवन संचालन कोई कर सकता नहीं,

गुरु से गुरु (बड़ा) संसार में कोई अन्य हो सकता नहीं।

जो मिले गुरु सेवा का अवसर, पल भर के लिए भी नहीं टालना,

मिले जो उनसे व्रत नियम, सदा दृढ़ता से ही पालना।

बाल मन की पवित्रता, पहाड़ों सी दृढ़ता,

समुद्र सी निर्मलता गुरु में होती है,

तिर जाती वो आत्मा, जो अपनी पहचान उनमें खोती है।

भाग्यशाली होता है वह जीव, जो उनका कृपा प्रसाद चखता,

जीवन धन्य हो जाता है वह, जो चरणों में अपना सर्वस्व रखता।

-महावीर नगर, जयपुर (राज.)

पूज्य कुशलगणी की जय  
॥ श्री महावीराय नमः ॥  
॥ जय गुरु हस्ती ॥



परमश्रद्धेय जैनाचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के सुशिष्य  
आचार्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म. सा. की जय

श्री कुशलरत्न गजेन्द्रगणिभ्यो नमः



श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत

वीर सम्वत् २५४१-४२

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् २०७२  
(निर्णय सागर पंचांग से सम्पादित)

सन् २०१५-२०१६

क्र. सं.	मास-पक्ष	तिथिवार	पक्की दिनांक	चड़ी पल	क्षय तिथि	वृद्धि तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुण्य नक्षत्र	विशेष विवरण
१	चैत्र सुदि	१४ शुक्र	०३.०४.२०१५	२१-५५	३	११	६ बुध	१० रवि	-आयकिल ओली प्रारम्भ चैत्र सुदि ८ शुक्रवार २७.३.२०१५। -मयान महवीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि १३ गुल्वार २.४.२०१५।
२	वैशाख वदि	३० शनि	१८.०४.२०१५	४५-२५	१४	-	-	-	-आयकिल ओली पूर्ण व ख्यास प्रतोदित चन्द्रग्रहण चैत्र सुदि १५ शनिवार ४.४.२०१५।
३	वैशाख सुदि	१४ रवि	०३.०५.२०१५	०४-५०	-	१३	४ बुध	८ रवि	-अक्षय तृतीया (वर्षातिथ पारणा) वैशाख सुदि ३ मंगलवार २१.४.२०१५। -आचार्य भगवन्त पूज्य गुल्देव १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. की २४ वीं पुण्य तिथि वैशाख सुदि ८ रविवार २६.४.२०१५।
४	ज्येष्ठ वदि	१४ रवि	१७.०५.२०१५	१५-१०	७	-	-	-	-मयान चर्चनी कल कल्याणक वैशाख सुदि १० मंगलवार २८.४.२०१५। -नमं स्थापना दिवस वैशाख सुदि ११ बुधवार २६.४.२०१५।
५	ज्येष्ठ सुदि	१४ सोम	०१.०६.२०१५	४०-३३	३	५	१ मंगल	द्वि.५ शनि	-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का २५ वां आचार्य पद दिवस ज्येष्ठ वदि ५ शनिवार ६.५.२०१५।
६	प्र. आषाढ वदि	३० मंगल	१६.०६.२०१५	३४-२३	१०	-	३० मंगल	-	-परमपरा के मूल पुस्तक पूज्य श्री कुशल चन्द्रजी म. सा. की २३२ वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ वदि ६ रविवार १०.६.२०१५।
७	प्र. आषाढ सुदि	१४ बुध	०१.०७.२०१५	०८-००	-	६	-	४ शनि	-किरीटोद्धारक पूज्य आचार्य श्रीरत्न चन्द्र जी म. सा. की १०० वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ सुदि १४ सोमवार १६.६.२०१५।
८	द्वि. आषाढ वदि	१४ बुध	१५.०७.२०१५	०१-४०	१	-	१२ सोम	-	२१६ वां किरीटोद्धारक दिवस प्र. आषाढ वदि २ गुल्वार ४.६.२०१५। -अक्षय नवम प्रारम्भ प्र. आषाढ सुदि ६ सोमवार २२.६.२०१५।
९	द्वि. आषाढ सुदि	१४ गुरु	३०.०७.२०१५	३२-१५	-	-	-	१ शुक्र	इसके पश्चात् पाण-पाण दिन १८ दिन का प्रारम्भ होगा।
१०	श्रावण वदि	३० शुक्र	१४.०८.२०१५	३५-२५	४	-	१० रवि	१४ गुरु	-चातुर्मास प्रारम्भ (चातुर्मासी पक्की) द्वि आषाढ सुदि १४ गुल्वार ३०.७.२०१५।
११	श्रावण सुदि	१५ शनि	२६.०८.२०१५	४४-२०	१४	५	-	-	

२५६ वां क्रियाकालक दिवस प्र. आषाढ वदि २ गुस्ववार ४.६.२०१५।  
 -आद्या नक्षत्र प्रारम्भ: प्र. आषाढ सुदि ६ सोमवार २२.६.२०१५,  
 इसके पश्चात् मास-मीन होने पर सप्तमि-सप्तम्याह-सप्तमि-शुभेरी।  
 -चातुर्मास प्रारम्भ (चातुर्मासी पक्वी) द्वि आषाढ सुदि १४ गुस्ववार ३०.७.२०१५।  
 -पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी. म. सा. की २६ वीं पुण्यतिथि श्रावण वदि ३० शुक्रवार  
 १४.८.२०१५।

-पुष्येण महापर्व प्रारम्भ भाद्रपद वदि द्वि १३ शुक्रवार ११.९.२०१५।

-संवत्सरी महापर्व भाद्रपद सुदि ५ शुक्रवार १८.९.२०१५।

-आषाढिल ओली प्रारम्भ, आसोज सुदि ६ सोमवार १६.१०.२०१५।

-पूज्य आचार्य श्री शूरवली म. सा. की पुष्य तिथि आसोज सुदि १० शुक्रवार २३.१०.२०१५।

-स्वाति नक्षत्र प्रारम्भ आसोज सुदि ११ शनिवार २४.१०.२०१५,

इसके पश्चात् गणवर्ष होने पर सूत्र की अस्तन्नाय रहेगी।

-आषाढिल ओली पूर्ण आसोज सुदि १५ मंगलवार २७.१०.२०१५।

-भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक कार्तिक वदि ३० बुधवार ११.११.२०१५।

-वीर संवत् २५४२ प्रारम्भ एवं गौतम प्रतिपदा कार्तिक सुदि १ गुस्ववार १२.११.२०१५।

-ज्ञान पंचमी कार्तिक सुदि ५ सोमवार १६.११.२०१५।

-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का ५३ वां दीक्षा दिवस कार्तिक सुदि

६ मंगलवार १७.११.२०१५।

-चातुर्मासिक पक्वी (चातुर्मास पूर्ण) एवं वीर लोकाशाह जयन्ती

कार्तिक सुदि १४/१५ बुधवार २५.११.२०१५।

-मीन पक्षवती व पुष्य श्री विजयचन्द्र जी म.सा. की १०० वीं पुष्य तिथि मार्गशीर्ष सुदि

११ सोमवार २९.१२.२०१५।

-भगवान परशुराम जन्म कल्याणक पौष वदि १० सोमवार ४.०१.२०१६।

-खण्ड शास सुर्य ग्रहण फाल्गुन वदि ३० बुधवार ६.३.२०१६।

-फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व (चातुर्मासी पक्वी) फाल्गुन सुदि १४ मंगलवार २२.३.२०१६।

-भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

का ७८ वं जन्म दिवस चैत्र वदि ८ शुक्रवार १४.४.२०१६।

१०	श्रावण वदि	३० शुक्र	१४.०८.२०१५	३५-२५	४	-	१० रवि	१४ गुरु
११	श्रावण सुदि	१५ शुक्र	१४.०८.२०१५	३५-२०	१४	५	-	-
१२	भाद्रपद वदि	३० रवि	१३.०६.२०१५	१४-२०	६	१३	८ शनि	१२ बुध
१३	भाद्रपद सुदि	१४ रवि	२७.०६.२०१५	१३-५५	-	-	-	-
१४	आश्विन वदि	३० सोम	१२.१०.२०१५	५७-२०	१	-	६ शनि	१० बुध
१५	आश्विन सुदि	१५ मंगल	२७.१०.२०१५	२६-५८	१२	१	-	-
१६	कार्तिक वदि	३० बुध	११.११.२०१५	४०-४८	४	६	३ शुक्र	८ मंगल
१७	कार्तिक सुदि	१४ बुध	२५.११.२०१५	००-०३	१५	-	-	-
१८	मार्गशीर्ष वदि	१४ गुरु	१०.१२.२०१५	२०-१३	-	१०	१ गुरु	५ सोम
१९	मार्गशीर्ष सुदि	१५ शुक्र	२५.१२.२०१५	२३-०५	६	-	१४ गुरु	-
२०	पौष वदि	१४ शनि	०६.०१.२०१६	००-५५	३०	१२	-	३ सोम
२१	पौष सुदि	१५ शनि	२३.०१.२०१६	५६-२३	१४	-	११ बुध	-
२२	माघ वदि	१४ रवि	०७.०२.२०१६	३७-२३	-	१	-	प्र. १ रवि
२३	माघ सुदि	१५ सोम	२२.०२.२०१६	४१-३०	५	-	६ मंगल	१३ शनि
२४	फाल्गुन वदि	१४ मंगल	०८.०३.२०१६	०८-५८	-	४	-	-
२५	फाल्गुन सुदि	१४ मंगल	२२.०३.२०१६	२१-१३	१	-	७ मंगल	११ शनि
२६	चैत्र वदि	१४ बुध	०६.०४.२०१६	३५-२३	११	६	-	-

प्राप्ति स्थान:- श्री चंचलचन्द्रजी सिधवी, 507 ए, 5-बी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 09460767029

## क्रोध के हैं अनेक कारण

श्री जस्सराज देवडा थोका

रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में हमें छोटी-छोटी बातों की वजह से गुस्सा आता रहता है। इस बारे में अक्सर हमें चिन्तन करने का समय ही नहीं मिलता है। पति ऑफिस से घर आता है, पत्नी पर अकारण ही बरस पड़ता है। असल में अधिकारी ने ऑफिस में डाँटा था उसकी वजह से वह गुस्सा अपनी पत्नी पर निकालता है। प्रायः जहाँ हमारा बस नहीं चलता है, उसको छोड़कर दूसरे को अपने से कमजोर देखकर उस पर हम अपना गुस्सा उतारते हैं। अहंकार भी हमारे क्रोध का कारण बनता है, जब हमारे अहं को चोट पहुँचती है या हमें सम्मान नहीं मिलता है तो हमें क्रोध आता है। क्रोध और अहंकार सगे भाई हैं। जब हमारा मनपंसद यानी कि अनुकूल काम नहीं होता, हम गुस्से में अनाप-शनाप बकने लगते हैं। जो मन के कुँए में होता है विचारों की बाल्टी वैसा ही बाहर लाती है। मोहम्मद साहब के जीवन की एक घटना है। उस समय उन्होंने कहा था बिच्छू का स्वभाव डंक मारने का है और मेरा स्वभाव दया का है, जब वह अपना स्वभाव नहीं छोड़ सकता तो भला मैं कैसे अपना स्वभाव छोड़ दूँ? हमारे जीवन में शब्द कभी अहंकार का कारण बन जाते हैं और कभी क्रोध का। किसी से अपनी प्रशंसा सुनकर हम फूले नहीं समाते और वही व्यक्ति जब हमारी बुराई करता है तब हम उससे लड़ने को तैयार हो जाते हैं। परिवार में चाहे भाई हो, पत्नी-पुत्र या अन्य कोई सम्बन्धी, मित्र आदि हो, हम सबसे कुछ न कुछ अपेक्षा रखते हैं और जब अपेक्षाओं की उपेक्षाएँ होने लगती हैं तो हमारे अन्दर वैमनस्य की आग दहकनी शुरू हो जाती है। यह सब नहीं हो, इसके लिए हमें समभाव का अभ्यास करना चाहिए। हमारे गुरु भगवंतों ने हमें धर्मशास्त्रों के द्वारा यही सिखाया है कि सहिष्णु बनो। जो आपके पास है उसमें सन्तोष करो। महाकवि गेटे का कथन है, जिसने आत्म-नियन्त्रण कर लिया मानो उसने सफलता प्राप्त कर ली। सुकरात की जीवन गाथा सर्वत्र प्रसिद्ध है। उसकी पत्नी अत्यन्त कर्कश व झगडालू थी। फिर भी सुकरात सदैव उसके साथ मधुर व्यवहार करते थे। जार्ज हरबर्ट का यह कथन अत्यन्त उपयोगी है- वाद-विवाद में शांति से काम लो, आवेश में तीव्रता के कारण छोटी सी बात अवगुण बन जाती है। तब सत्य भी अनैतिक हो जाता है। हमें सामने वाले से गुण-ग्रहण का भाव सदैव रखना चाहिये। हम किसी से अपेक्षा ही नहीं रखेंगे तो न तो उपेक्षा होगी न हमें क्रोध ही आयेगा।

## लग्न की वेला (11)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

आचार्यदेव उसकी बुद्धि से प्रभावित तो पहले से ही थे। आज उसकी समझ की गहराई देखकर बड़े प्रसन्न हुए। वे उसे समझाते हुए बोले- “अरुण! जिसके मन में जिन बनने के लिये समस्त विकारों को त्यागने का दृढ़संकल्प होता है, वही भाव से जैन होता है, सच्चा जैन होता है।”

“गुरुदेव! विकार किसे कहते हैं?”

“विकार मतलब पाप! तूने प्रतिक्रमण में अठारह पापों के नाम याद किये हैं न!” “हाँ गुरुदेव!” “वे किये जाने वाले पाप हैं। पूर्व भव में जो पाप किये और आत्मा में उनसे जो कर्म बन्धे हैं, वे किये गये पाप हैं। इनमें से किये जाने वाले पापों का त्याग किया जाता है, जिससे भविष्य के विकारों के द्वार बन्द हो जाते हैं और वर्तमान में पाप होते नहीं है। पूर्वकृत पापों से जो विकार होते हैं, वे तप से नष्ट हो जाते हैं और ऐसा आत्मा जिन बन जाता है। ऐसा जिन बनने के लिये ही जिन भगवान को जो अराध्य रूप में स्वीकार करता है, वह जैन है।”

“अच्छा, गुरुदेव! अठारहवाँ पाप मिथ्यात्व है। छोटे गुरुदेव एक दिन कह रहे थे कि पहले मिथ्यात्व का त्याग होता है, तभी अन्य पापों का त्याग होता है।”

“हाँ, वत्स!”

“गुरुदेव! मिथ्यात्व किसे कहते हैं?”

“मिथ्यात्व अर्थात् गलत श्रद्धा। पाप में धर्म, पाप के त्याग में अधर्म, विकारी में देव और गुरुबुद्धि और निर्विकारी में अदेव तथा विकारजय पाने में उद्यमशील में अगुरुबुद्धि को मिथ्यात्व कहते हैं। इस मिथ्या बुद्धि का त्याग करना और सम्यक् बुद्धि को ग्रहण करना ही जैनत्व की दीक्षा है।”

“गुरुदेव! मुझे ऐसा ही जैन बनना है। बस, मुझे मिथ्यात्व का त्याग करवा दीजिये” - यह कहकर उसने विधि सहित वन्दना की।

आचार्यदेव ने अनन्तकालीन मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण करवाया। बाद में मिथ्यात्व और मिथ्यात्व से निष्पन्न व्यवहारों के त्याग की प्रतिज्ञा करवायी। इसके बाद जीवन भर तत्त्वत्रय में श्रद्धा की प्रतिज्ञा दिलायी। फिर कहा- “वत्स! मैंने तुम्हारे हृदय में यह परमात्म-तत्त्व का बीज बोया है। इसकी रक्षा करना, सिंचन करना और इसे विकसित करना।”

अरुण गद्गद् हो गया। वह बोला- “अरिहंते सरणं पवज्जामि.....” उसने पुनः आचार्यदेव को विधि-पूर्वक वंदन किया।

पुनः आचार्यदेव ने अरुण को कहा- “आयुष्मन्! मिथ्या श्रद्धा के लाभ के साथ मिथ्या आचरण के अंशतः त्याग रूप सप्त कुव्यसनों का त्याग भी करना चाहिये। यह प्रभुता में चरण भरने के समान है।”

“अच्छा, प्रभो! यह भी समझाइये।” उसने व्यसन-परित्याग भी किया।

अब वह घर की ओर चला। आज उसे बहुत देर हो गयी थी। उसकी भाभी सिद्धिदेवी से कह रही थी- “अम्ब! छोटे भैयाजी जब देखो तब स्थानक में ही बैठे रहते हैं। वे कहीं भ्रमित न हो जायें।”

सिद्धिदेवी ने अनजान बनकर पूछा- “कहाँ, स्थानक में भ्रमित हो जायेगा? भ्रमित होने से क्या मतलब?”

“अम्ब! मैंने सुना है कि ये मुनिजन कुछ जादू-टोना जानते हैं और अक्सर बच्चों पर, कभी-कभी बड़ों पर भी वे जादू-मंतर कर देते हैं, जिससे उन्हें सोते-जागते, उठते-बैठते वे ही वे दिखायी देते हैं। फिर उन्हें बरबस साधु बनना ही पड़ता है। ऐसी होती है जादू की लपेट। अम्ब! छोटे भैयाजी को भी ऐसा ही कुछ हो रहा है।” उसकी बड़ी-बड़ी नुकीली आँखों से मानों चिन्ता टपक रही थी।

सिद्धिदेवी बहू के हाव-भाव और चिन्ता की भंगिमा देखकर हँसे बिना नहीं रह सकी। हँसने से उसकी उज्ज्वल दन्त-पंक्ति आभा छिटकती-सी चमक उठी। क्षणभर बाद वह बोली- “बहू! भोली हो तुम! जादू-टोना कुछ भी नहीं है और ऐसे विरागी संत जादू-टोना करेंगे? इससे कभी वैराग्य नहीं आता। वैराग्य तो सच्ची समझ का परिपाक है, बहू!”

कल्याणी भी वहीं थी। आजकल अरुण अपने आप में ही लीन रहता था। वस्तुतः वह घर पर तो अधिक दिखायी ही नहीं देता था। कल्याणी की अपने छोटे भाई के प्रति ममता कुछ अधिक ही थी। उसका कुछ नहीं बोलना-विचार में ही खोये रहना उसे अच्छा नहीं लगता था। इसलिए उसने भाभी की बात का समर्थन करते हुए माता से कहा- “चाहे कुछ भी हो, अम्ब! भाभी की बात में कुछ तथ्य है। सारे घर को सिर पर उठा लेने वाला अरुण आजकल खोया-खोया सा रहता है। सीधे मुँह बात ही नहीं करता। वह घर पर रहता ही कहाँ है? उसका मन तो बस स्थानक में लगता है।”

“वत्से! मैं अरुण की माँ हूँ। मैं उसे अच्छी तरह से जानती हूँ। उसकी जिज्ञासा अत्यन्त तीव्र है। इस छोटी वय में भी उसे तत्त्व का रहस्य पाने की इतनी तीव्र जिज्ञासा है कि कभी-कभी मैं स्वयं उसकी बातें सुनकर आश्चर्यचकित रह जाती हूँ। गुरुदेव के द्वारा उसकी

जिज्ञासा का समाधान होता है और जिज्ञासु को जहाँ समाधान प्राप्त होता है, वहीं उसे अच्छा लगता है। यही कारण है— उसके स्थानक में अधिक रहने का। कल्याणी! अरुण ज्ञानियों की जाति का जीव है।”

“अम्ब! आपकी बात सही लगती है। एक दिन अरुण मुझे कह रहा था कि मुझे बहुत बड़ा ज्ञानी बनना है। वह बात के मर्म को ही पकड़ता है। अब देखो न, ‘पिताजी उसे देश के प्रमुख कलायतन में भेजना चाहते हैं। परन्तु गुरुदेव ने यहाँ स्थिरवास का आशवासन दिया है’—यह बात जानकर वह वहाँ जाना नहीं चाहता है”..... “कल्याणी अपनी बात पूरी न कर सकीं, क्योंकि उसने अरुण को वहाँ प्रवेश करते हुए देख लिया। अतः वह मौन हो गयी।

अरुण सीधा माता की ओर गया और प्रसन्न होकर बोला— “अम्ब! आज मैं जैन बन गया हूँ। है न खुशी की बात!” इतने में उसकी दृष्टि कल्याणी की ओर गयी। वह माता से जरा तेज स्वर में कहने लगा— “अम्ब! भगिनी तात से मेरी न जाने क्या-क्या शिकायतें करती रहती हैं। अतः पिताजी मुझे यहाँ से हटाना चाहते हैं। मानो मैं यहाँ मूर्ख ही रह जाऊँगा।”

कल्याणी झुंझलाकर बोली— “अच्छा आरोप लगाया— मुझ पर! तात ने मुझसे स्वयं पूछा कि ‘अरुण आजकल क्या करता है? कुछ अभ्यास करता है या नहीं?’ उनके प्रश्न का मुझे सत्य उत्तर देना था। मैंने तात से कुछ छिपाया नहीं, जो सही था सो कह दिया।”

“क्या सही कहा?” वह चिढ़कर बोला— “यही न कि ‘अभ्यास करते मैंने उसे कभी नहीं देखा। सारे दिन स्थानक में घुसकर बैठा रहता है।’ बस, यही सच्चाई है! क्या मैं कलायतन नहीं जाता हूँ? क्या वहाँ से मेरे लिये किसी अध्यापक का अपराध-पत्र आया है?” फिर शान्ति से अनुनय के स्वर में कल्याणी से बोला— “भगिनी! मैंने आपका क्या अपराध किया है? क्या मैं घर में आप लोगों को अच्छा नहीं लगता हूँ?” क्या मैं इतना खारा हो गया हूँ, जो आप मुझे घर से भगाना चाहते हो?”

“भ्रात!”— कल्याणी ने अरुण को चुप करने के लिये कहा— “आज! तू मुझसे कलह करना चाहता है क्या? तू वृथा शंका करता है और बात बनाकर इस ढंग से कहता है कि मानो वहाँ खड़ा-खड़ा सुन ही रहा था। तू शान्ति से सोच, मैं तुझे भगाना क्यों चाहूँगी?”

अरुण बिल्कुल मौन होकर उसकी ओर ताक रहा था। कल्याणी ने उसके दोनों हाथ, अपने हाथ में ले लिये और कुछ झुककर उसकी आँखों में आँखें डालती हुई बोली— “भ्रात! सच कहती हूँ— पिताजी ने स्वयं कहा था कि ‘गुणसुन्दरजी सार्थवाह ने अपने पुत्र शिवसुन्दर को अपने देश के प्रमुख कलायतन में इसी वर्ष भेज दिया है। अगले सत्र तक अपना अरुण भी वहाँ प्रवेश पाने की योग्य वयवाला हो जायेगा। अतः अब कुछ मास बाद साल का दूसरा सत्र

प्रारम्भ होगा, उसमें अरुण को वहाँ भेज देना होगा।' सच मान भैया! मैंने पिताजी की बात का निषेध नहीं किया तो समर्थन भी नहीं किया! बोल फिर मैं अपराधी हूँ?"

"भगिनी! मेरे अविनय के लिये क्षमा करना। रोष के कारण मुझसे अभद्रता हो गयी" उसने माता की ओर देखकर कहा- "अम्ब! आप तात को समझा दो कि मुझे वहाँ नहीं जाना है। यहाँ के कलायतनों में भी छात्र पढ़ते ही हैं!" उसने कल्याणी के हाथ से अपने हाथ छुड़ा लिये।

सिद्धिदेवी ने पूछा- "वहाँ जाना क्यों नहीं चाहते हो? कई बालक उस प्रसिद्ध कलायतन में स्वयं जाना चाहते हैं, क्योंकि वहाँ की शिक्षा विशिष्ट है। अच्छा, अवसर है। तुम्हें वहाँ विशेष ज्ञान मिलेगा।"

अरुण माता की बात का उल्लंघन प्रायः नहीं करता था। माता की सौम्य मुद्रा और वात्सल्य भरी वाणी उसे वश में कर लेती थी। आज भी वह माता के इस रूप में विवश हो गया। फिर भी साहस करके बोला- "अम्ब! अभ्यास तो मैं यहाँ करता ही हूँ। यहाँ पढ़ने वाले अज्ञानी रहते हैं- ऐसा तो नहीं है। पर मुझे ऐसा लगता है कि मैं वहाँ जाकर ज्ञानी नहीं बन सकूँगा।"

"यो क्यों नहीं कहता कि गुरुदेव यहाँ विराजेंगे, इसलिए मैं वहाँ जाना नहीं चाहता"- कल्याणी बीच में ही बोल उठी- "जो बात अपने मन में है- वहीं कहो न! क्यों इधर-उधर डाल-डाल पात-पात फिरते हो?"

"अम्ब! भगिनी बिल्कुल सही कह रही है"-अरुण एकदम मुखर हो उठा। "गुरुदेव के समीप रहना कोई बुरा नहीं है। हाँ, गुरुदेव यहाँ विराजमान रहेंगे, इसीलिये मैं यहाँ से दूर जाना नहीं चाहता हूँ। भगिनी! मेरी यह भावना बुरी है क्या?" उसकी बात से कल्याणी को ऐसा लगा कि उसे किसी ने थप्पड़ मार दिया हो। वह लज्जित हो गयी। अरुण माता से कह रहा था- "अम्ब! मेरे कलायतन से कुछ छात्र प्रमुख कलायतन में गये, तब मेरा भी मन वहाँ जाने के लिये तड़प उठा था। परन्तु गुरुदेव के आने के बाद बात कुछ और ही हो गयी है। अब मुझे लगता है कि ज्ञानी बनने की राह गुरुदेव के चरणों में है। कलायतन में तो संसार का ज्ञान है, जो यहाँ के कलायतनों में भी मिलता है। अम्ब! आप पिताजी से मना कर दो तो वे मान जायेंगे।"

"वत्स! यह विषय मेरा नहीं है। फिर भी हो सका तो इस विषय में तेरे पिताजी को तेरी भावना बताने का प्रयत्न करूँगी।" इस बात से अरुण को आश्वासन मिला। परन्तु उसकी भाभी और कल्याणी को यह बात अच्छी नहीं लगी। भाभी तो- "भैयाजी! जल्दी आओ। भोजन कर लो"-यह कहकर चली गयी। परन्तु कल्याणी से नहीं रहा गया। वह सिद्धिदेवी की ओर देखती हुई बोली- "अम्ब! यह क्या साधु बनना चाहता है, जो गुरुदेव का पिण्ड

ही नहीं छोड़ता है?"

“भगिनी! इसका उत्तर अम्ब क्या देगी?”-अरुण ने कल्याणी के सामने जाकर कहा- “आपने यह नहीं कहा था कि मैं लड़का होती तो गुरुदेव का चेला कभी भी बन जाती। मैंने तो यह नहीं कहा।” फिर वह दृढ़ता से बोला- “भगिनी! अभी तो मैं जैन ही बना हूँ!”

कल्याणी बात काटकर बोली- “अभी जैन बने हो- का क्या मतलब? पहले तुम क्या जैन नहीं थे?” वह बोला- “पहले तो जैनकुल में जन्म लिया, इसलिये जैन था। यह तो मेरे पुण्य का फल था। मेरी कमाई कुछ नहीं थी। मेरा श्रम कुछ नहीं था और अपना निर्णय भी कुछ नहीं था, परन्तु अब मैंने गुरुदेव से इस विषय में कुछ समझा है। मैंने सोच-समझकर अपना निर्णय लिया है और गुरुदेव से आज सम्यक् श्रद्धा की प्रतिज्ञा ली है- मिथ्या श्रद्धा का त्याग किया है।”

“अच्छा, यों कहो कि आज गुरु धारण किये हैं?”

“गुरुदेव ने इसे जैनत्व की दीक्षा कहा है। सात कुव्यसन के त्याग करवाये हैं”- वह कुछ विस्तार से बातें बतलाता है।

“तो गुरुदेव ने तुझे साधु बनने की भी प्रतिज्ञा दिलाई क्या?”

“नहीं, गुरुदेव ने ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं दिलायी”- वह कुछ अप्रसन्नता से बोला- “पर, हाँ, ज्ञानी बनने के लिये जो कुछ बनना होगा, वह सब बनूँगा।”

“कल्याणी! ज्यादा मत छोड़ो, इसे!” यह कहकर सिद्धिदेवी ने बात समाप्त कर दी।

(क्रमशः)

## जमीकन्द रहित प्रीतिभोज दिन में

सुश्रावक श्री पदमचन्दजी गाँधी सुपुत्र स्व. श्री नेमीचन्द जी गाँधी (थांवला वाले) कार्यालय प्रधान महालेखाकार (केग, भारत सरकार), जयपुर से सीनियर ऑडिट ऑफिसर के पद से साढ़े छत्तीस वर्ष की सेवाएँ ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक सम्पन्न करते हुए 31 दिसम्बर 2014 को सेवानिवृत्त हुए। उत्कृष्ट सेवाओं के लिए आपको सम्मानित भी किया गया।

सेवानिवृत्ति के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. से लिए गए नियमानुसार 04 जनवरी 2015 को प्रीतिभोज दिन (दोपहर) में रखा गया तथा सम्पूर्ण भोजन जमीकन्द रहित तैयार किया गया। चतुर्दशी में उपयोगी सब्जियाँ एवं धोवण पानी का भी ध्यान रखा गया। सेवानिवृत्ति के बाद आपने समाज सेवा, लेखन कार्य एवं धार्मिक गतिविधियों में समय देने की भावना व्यक्त की।

## मर्यादा तोड़ न देना

सुश्री पूजा जैन

(तर्ज:- ऐ मेरे वतन के लोगो.....।)

ऐ जैन श्राविका अपनी, मर्यादा तोड़ न देना,  
 माँ-बाप की इज्जत पर, तू कालिख न पोत देना,  
 माँ-बाप के प्रेम को ठुकरा, घर से भाग न जाना,  
 दो चार दिन के प्रेमी से, माँ-बाप को तोल न देना-2॥  
 ऐ जैन कुल की बेटी, ऐ मेरी स्वामी बहना,  
 मत भागना तू कभी घर से, इस बात का मानना तू कहना,  
 माँ-बाप को दुःखी करके, दुःख मिलेगा तुझे दुगुना,  
 उनको आँसू में डूबोकर, पाएगी ना तू चैना॥1॥  
 बड़े लाड़ से पाला तुझको, माँ-बाप को धोखा न देना,  
 खुद के मतलब के खातिर, वो भरोसा तोड़ न देना,  
 विश्वास भरे दिल में, तू खंजर भोंक न देना,  
 मत भागना तू कभी घर से, इस बहन का मान तू कहना॥2॥  
 ठुकराकर जैन कुल को, तुझे हरपल रोना होगा,  
 पापों में गिरना होगा-2, और अभक्ष्य भी खाना होगा,  
 हर कदम पर कर्म बंधेंगे, ना पालन होगी जयणा,  
 मत भागना तू कभी घर से, इस बहन का मान तू कहना॥3॥  
 तुझमें है चन्दनबाला, तुझमें है सती सुभद्रा,  
 मैनासुन्दरी भी तुझमें, तुझमें ही छुपी है सुलसा,  
 रत्नों की कुक्षि भी तू है, इतिहास है गौरव गहना।  
 मत भागना तू कभी घर से, इस बहन का मान तू कहना॥4॥  
 मीठी बातों में न बहकना, पत्थर को हीरा न समझना,  
 हर कदम तू सोचकर रखना, इस जाल में तू न फँसना,  
 जो भागी सब ही दुःखी हैं-2, टूटा उनका हर सपना।  
 मत भागना तू कभी घर से, इस बहन का मान तू कहना॥5॥  
 है जैन धर्म ये कहता, विनति पर गौर करना,  
 ये तन और धन के लुटेरे, लूटेंगे तुझे मेरी बहना,

मत भागना तू कभी घर से, इस बहन का मान तू कहना॥6॥

है जैन कुल की बेटी, है मेरी स्वामी बहना,

मत भागना तू कभी घर से, इस बहन का मान तू कहना,

मेरी बहना....मेरी बहना.... मेरी बहना....मेरी प्यारी बहना॥

-सुपुत्री श्री सुरेशचन्द्र जैन (जरखोदा वाले), 1/137, हाउसिंग बोर्ड, सर्वाईमाधोपुर (राज.)

वीतराग-ध्यान

## मनःशुद्धि से समता पाएँ, समता से निर्वाण

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

अन्तर के स्व जगत् में शान्त होगा वातावरण  
 तब ही बदलेगा बाह्य जगत् की व्यथा का व्याकरण  
 भव-भव की व्याधि से हो मुक्ति, करें ऐसे करण  
 अन्तर की गाँठें खोलें अब निर्मलता का हो भरण  
 आरम्भ करें आनापान से छोड़ राग-द्वेष अभिमान  
 आते-जाते साँस पर करें एकाग्र ध्यान  
 अनुशासित कर, स्वयं को करें अपना कल्याण  
 समता का ही रस बरसे, दुःख का रहे न नामोनिशान  
 हमने बोए बीज दुःख के हम ही करें निदान  
 निसर्ग के नियम को जानें, बना रहे अनित्य का ज्ञान  
 खण्ड-खण्ड विश्लेषण से जानें विधि का विधान  
 सब अनित्य नश्वर है भंगुर अनुभव से होगा आदान  
 प्रतिक्षण अन्तर्जग बदल रहा, सजगता से करें अवलोकन  
 स्थूल से सूक्ष्म की ओर ही करना होगा हमें गमन  
 अणु-अणु जागृत कर जानें हम प्रत्येक संवेदन  
 द्रष्टाभाव से तटस्थ रहें, करें कर्मों का जड़ से शमन  
 कायिक-वाचिक कर्म से मन के कर्म प्रधान  
 मन के कर्म सुधरें तो शाश्वत हो समाधान  
 संचित कर्मों को हम काटें, निर्मल हो मन प्राण  
 मनः शुद्धि से समता पाएँ, समता से निर्वाण।

-मुम्बई (मह.)

## महावीर का स्वास्थ्य चिन्तन

डॉ. चंचलमल चोरडिया

महावीर का दर्शन मौलिक रूप से स्वास्थ्य और चिकित्सा का दर्शन नहीं है, यह तो आत्मा के लिए आत्मा का दर्शन है। परन्तु जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त नहीं हो जाती तब तक आत्मा शरीर के बिना रह नहीं सकती। शरीर की उपेक्षा कर आत्म-शुद्धि हेतु साधना भी नहीं की जा सकती। महावीर की दृष्टि में मानव शरीर का आत्म-साधना हेतु महत्व है, इन्द्रियों के विषय भोगों के लिए नहीं। उनका अधिकांश चिन्तन आत्मा को केन्द्र में रख कर हुआ, परन्तु उन्होंने शरीर के निर्वाह हेतु केवलज्ञान के आलोक में, जिस सम्यक् जीवन शैली का कथन किया, वह स्वतः मानव जाति के स्वास्थ्य का मौलिक ग्रन्थ बन गया। महावीर के स्वास्थ्य दर्शन को समझने के लिए उनके द्वारा कथित आत्मा और शरीर के संबंधों तथा एक दूसरे को प्रभावित करने वाले तथ्यों का मौलिक ज्ञान आवश्यक है।

### आत्म-शुद्धि और चेतना का विकास

महावीर की दृष्टि में शुद्धात्मा-अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति और अनन्त आनन्द का स्रोत होती है तथा उस अवस्था में स्वास्थ्य की कोई समस्या नहीं होती। जितनी-जितनी उसकी मलिनता, उतनी-उतनी स्वास्थ्य की समस्या। परन्तु जब वह कर्मों के आवरणों से आच्छादित हो जाती है, तो आवरण के घनत्व के अनुसार उसकी सारी शक्तियां सीमित हो जाती है तथा वह मुख्य रूप से नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव गति में भटकती रहती है। उसके जन्म और मृत्यु का चक्र चलता रहता है। कर्मों के अनुसार ही किसी भी योनि में उसे शरीर के साथ इन्द्रियाँ और मन उपलब्ध होते हैं। एकेन्द्रिय जीव में मात्र स्पर्शनेन्द्रिय अर्थात् शरीर ही होता है। दो इन्द्रिय वाले जीवों में शरीर के साथ-साथ रसनेन्द्रिय, तीन इन्द्रिय वाले जीवों में शरीर, रसनेन्द्रिय और घ्राणेन्द्रिय (गंध का ज्ञान कराने वाली) मिलती है। चार इन्द्रिय वाले जीवों को स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षु इन्द्रिय (नेत्र) प्राप्त होते हैं। पंचेन्द्रिय जीवों को चारों इन्द्रियों के साथ श्रवणेन्द्रिय (सुनने की शक्ति) मिलती है। चेतना का और अधिक विकास होने पर उसे पांचों इन्द्रियों के साथ मन मिलता है। इस दृष्टि से मानव कर्मों से युक्त आत्म-चेतना के विकास का सर्वोच्च स्तर होता है।

### षड्रव्य का सिद्धान्त

किसी भी पदार्थ के मौलिक गुण उसमें सदैव विद्यमान रहते हैं। भले ही उनके अनुपात में घटत-बढ़त हो सकती है, परन्तु उनकी अवस्थाएं प्रति क्षण बदलती रहती हैं। पदार्थ के

गुण एवं पर्याय (अवस्था) के योग को महावीर ने द्रव्य बतलाया। प्राणिमात्र की समस्त परिस्थितियों का निर्माण, विनाश, संचालन और नियन्त्रण जिन शाश्वत द्रव्यों के बिना संभव नहीं होता, ऐसे छः द्रव्यों का महावीर ने कथन किया, जो अपने-अपने गुणों के अनुसार इस लोक की सारी गतिविधियों के संचालन में सहयोग देते हैं।

### धर्मास्तिकाय

जो द्रव्य हलन-चलन में सहायक होता है, जिसके अभाव में हलन-चलन संभव नहीं हो सकता वह धर्मास्तिकाय द्रव्य है। जहाँ-जहाँ धर्मास्तिकाय होता है वहीं तक जीव गमनागमन कर सकता है। मृत्यु के पश्चात् जीव एक योनि से दूसरी योनि में, इसी द्रव्य की सहायता से जाता है। स्थूल जगत में हलन-चलन में सहायक वायु लोकव्यापी नहीं है। आधुनिक विज्ञान भी उस द्रव्य को अभी तक नहीं खोज पाया, जिसका महावीर ने कथन किया। शरीर की सारी आन्तरिक एवं बाह्य हलन-चलन में इसी द्रव्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

### अधर्मास्तिकाय

यह द्रव्य हलन-चलन में अवरोध उत्पन्न करता है। अर्थात् वाहन में ब्रेक की भांति कार्य करता है। इसी द्रव्य के कारण शरीर में सारे अंग, उपांग, स्नायु, अस्थियाँ, इन्द्रियाँ आदि अपने-अपने स्थान पर स्थिर रह सकते हैं। इसके लिए भी आधुनिक विज्ञान के पास भी कोई तर्क संगत स्पष्टीकरण नहीं है।

### आकाशास्तिकाय

यह द्रव्य अन्य सभी पदार्थों को स्थान देता है। इसी कारण हलन-चलन और तरंगों आदि का प्रवाह संभव होता है।

### पुद्गलास्तिकाय

शब्द, गंध, रस, स्पर्श एवं वर्ण आदि से युक्त पदार्थ पुद्गल होता है। सारा लोक पुद्गलों से ठसाठस भरा हुआ है। ये पुद्गल इन्द्रिय, मन आदि के द्वारा ग्राह्य होते हैं। जैसे- पुद्गलों को ग्रहण किया जाता है, उसी के अनुरूप परिस्थितियों का निर्माण होने लगता है। एक ही स्थान पर बोया गया नीम और गन्ना, इसी कारण समान जलवायु, धरती, पानी, धूप एवं हवा के बावजूद भिन्न रस वाले होते हैं। गन्ना मधुर रस वाला और नीम में कड़वा स्वाद पनप जाता है। शरीर में इन पुद्गलों का आवश्यक अनुपात न होना अथवा अनावश्यक पुद्गलों की अधिकता से होने वाली स्थिति से रोग उत्पन्न होते हैं।

गंध, स्पर्श, स्वाद, ध्वनि, तरंगों, रंग, त्राटक आदि चिकित्साएँ इन पुद्गलों के कारण ही कार्य करती हैं, तथा उन्हें संतुलन करने से ही प्रभावशाली उपचार संभव है। पुद्गलों के

प्रसारण एवं पुनः आकर्षण के कारण ही सारे संचार माध्यम, इंटरनेट, टी.वी., टेलीफोन, कम्प्यूटर, रेडियो आदि कार्य करते हैं। सारे शारीरिक और मानसिक रोगों का कारण भी अशुभ कर्मों के पुद्गलों के उद्भव एवं असंतुलन से होता है। महावीर ने बिना किसी सूक्ष्म यंत्र के इन पुद्गलों का कथन कैसे किया, आधुनिक विज्ञान के लिए शोध का विषय है।

### काल द्रव्य

समय जो पुराने को नवीन और नवीन को पुराना बनाता है। समय, सैकण्ड, मिनट, घंटे, दिन, मास, वर्ष, दिन-रात आदि काल द्रव्य के सूचक होते हैं।

### जीवास्तिकाय

उपयोग युक्त चेतनामय तत्त्व जीव होता है। जिनमें ज्ञान एवं दर्शन स्वरूप उपयोग गुण न हो, वे अजीव होते हैं। महावीर ने संसार के सारे पदार्थों का दो प्रकार से कथन किया। जीव या चेतन और अजीव अर्थात् जड़ या अचेतन। जीव में अनुभव और संवेदन करने की क्षमता होती है। स्वास्थ्य का सारा चिन्तन और समस्याएँ जीव को ही होती हैं। मृत्यु के पश्चात् शरीर में से चेतना के निकल जाने के पश्चात्, इसी कारण जड़ शरीर को जल्दी से जल्दी नष्ट कर दिया जाता है। क्योंकि मृत शरीर में जीव के लक्षण समाप्त हो जाते हैं। अजीव में संवेदन और अनुभव करने की क्षमता नहीं होती और न उनमें सजातीय पदार्थों को पैदा करने की क्षमता ही होती है। जीव सदैव अरूपी होता है, परन्तु उसका अनुभव किया जा सकता है। परन्तु अजीव रूपी और अरूपी दोनों हो सकते हैं। जो स्थूल दृष्टि अथवा भौतिक यंत्रों से देखे जा सकते हैं, उन्हें रूपी पदार्थ, परन्तु जिनको इन माध्यमों से देखना संभव नहीं होता, वे अरूपी पदार्थ कहलाते हैं। सभी जीवों में आत्मा समान होती है, परन्तु कर्मों के आवरण के अनुसार चेतना के विकास में अन्तर होता है। इसी आधार से प्रथम पांच द्रव्य अजीव की श्रेणी में आते हैं, जबकि छठा द्रव्य जीव होता है। सभी द्रव्य एक दूसरे से प्रभावित होते हैं।

### चित्त, भाव, मन, वाणी और शरीर का संबंध

भगवान महावीर ने आत्मा के अस्तित्व से जुड़े चित्त, मन, भाव, वाणी, शरीर, इन्द्रियों आदि का तथ्यपरक स्पष्ट विवेचन किया। जीवन से हमारा परिचय शरीर, वाणी और कार्यों के माध्यम से होता है। जिसका आधार मन और चित्त से भी परे हमारी आत्मा है। हमारा चैतन्य एक सूर्य के समान होता है और उसकी एक किरण का नाम होता है-चित्त। चित्त चैतन्यमय होता है तथा सूक्ष्म शरीर द्वारा संचालित होता है। अतः भाव, मन और वाणी चित्त द्वारा संचालित होते हैं। चित्त मन की भांति अस्थायी नहीं होता है, दीर्घजीवी होता है। हमारी सारी चेतना का प्रवाह चित्त से ही होता है। सूक्ष्म शरीर का दूसरा

उत्पाद होता है- हमारा स्थूल शरीर एवं इन्द्रियाँ। हमारे मन का कोई भाव हम छिपाकर नहीं रख पाते। वह किसी न किसी रूप में प्रकट हो ही जाता है। परोक्ष रूप से छिपे हुए भाव भी हमारे अन्दर निरन्तर क्रियाशील रहते हैं और अपनी अभिव्यक्ति का मार्ग खोज निकालते हैं। शरीर में पनपने वाले असाध्य रोग भी हमारी छिपी भावनाओं को ही अभिव्यक्त करते हैं। हमारी अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ भाव के अनुसार ही शरीर में हारमोन्स अथवा रसायनों का निर्माण करती है। फलस्वरूप हम अच्छी या बुरी, करणीय अथवा अकरणीय प्रवृत्तियाँ करने लगते हैं। अतः अधिकांश रोगों का मूल कारण प्रायः भावनात्मक स्तर पर होता है और जब तक उसमें परिवर्तन नहीं आता, आरोग्य लाभ नहीं मिल सकता। क्षणिक रहने वाले भाव तो हमें बहुत प्रभावित नहीं करते, परन्तु लम्बे काल तक बना रहने वाला भावात्मक असंतुलन संस्कार बन गहरा प्रभाव दिखाता है।

सूक्ष्म शरीर से कर्म-विपाक के अनुसार जो स्पन्दन आते हैं, वे चित्त को प्रभावित करते हैं। जिससे चित्त मस्तिष्क के साथ कार्य करने वाले भावों का निर्माण करता है तथा उन भावों की अभिव्यक्ति के लिये दो सहयोगी तंत्रों का निर्माण करता है और वे होते हैं, मन और वाणी। इस प्रकार मस्तिष्क-चित्त और स्थूल शरीर का संगम स्थल होता है। अतः मन और चित्त एक नहीं, अलग-अलग होते हैं। मन चंचल होता है। चित्त बुद्धि और विवेक से उस पर नियन्त्रण रखने की क्षमता रखता है। मन कुछ भी नहीं होता और सब कुछ भी होता है। मन का कोई स्थायी अस्तित्व नहीं होता, परन्तु जब अस्तित्व में होता है तो सब कुछ बन जाता है, परन्तु यदि हम मन को पैदा न करें तो मन कुछ भी नहीं होता। मन को विराम दिया जा सकता है। स्वास्थ्य का संबंध मन के साथ बहुत कुछ जुड़ा होता है। मन स्वस्थ तो शरीर स्वस्थ और मन अस्वस्थ तो शरीर अस्वस्थ।

### प्राण ऊर्जा और ऊर्जा के स्रोत

भगवान महावीर के सिद्धान्तानुसार मानव का जीव जब गर्भ में आता है तो उसे अपने-अपने कर्मों के अनुसार आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन रूपी छः पर्याप्तियाँ मूल ऊर्जा के स्रोत (Bio Potential Energy Source) प्राप्त होते हैं। प्रत्येक पर्याप्ति अपने-अपने गुणों के अनुसार पुद्गलों को आकर्षित कर मानव शरीर का विकास करती है। जिन्हें ये शक्तियाँ पूर्ण रूप से प्राप्त होती हैं, उनका सम्पूर्ण एवं संतुलित विकास होता है तथा जिन्हें ये पर्याप्तियाँ आंशिक रूप से प्राप्त होती हैं उनका विकास आंशिक ही होता है।

महावीर ने इन्द्रियों का सूक्ष्म निरूपण किया। चीनी पंच तत्त्व के सिद्धान्तानुसार तो उनका सम्बन्ध पंच तत्त्वों में से किसी तत्त्व अथवा अंग तक ही सीमित कर दिया गया। ये

जीवनी शक्तियाँ कार्य के अनुसार मुख्य रूप से दस भागों में रूपान्तरित हो मानव की समस्त गतिविधियों का संचालन करती है। जिन्हें प्राण भी कहते हैं। प्राण जीवन शैली को शक्ति प्रदान करते हैं। प्रत्येक प्राण अपने लिये आवश्यक पुद्गलों को आसपास के वातावरण से ग्रहण कर अपने-अपने कार्य कर सकते हैं। दस प्राण हैं-

(1) **श्रोत्रेन्द्रिय बल प्राण**- इससे सुनने योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है। (2) **चक्षु इन्द्रिय बल प्राण**- इससे देखने योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है। (3) **घ्राणेन्द्रिय बल प्राण**- इससे गंध योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है। (4) **रसनेन्द्रिय बल प्राण**- इससे स्वाद योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है। (5) **स्पर्शनेन्द्रिय बल प्राण**- इससे स्पर्श योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है। (6) **श्वासोच्छ्वास बल प्राण**- इससे श्वसन योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है। (7) **मन बल प्राण**- इससे मनोवर्गणा योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है। (8) **वचन बल प्राण**- इससे भाषा वर्गणा योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है। (9) **काय बल प्राण**- इससे हलन-चलन योग्य पुद्गलों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त होती है। (10) **आयुष्य बल प्राण**- इसके कारण जीव निश्चित अवधि तक किसी योनि में रह सकता है।

सारी प्राण शक्तियाँ आपसी सहयोग और समन्वय से कार्य करती हैं, परन्तु एक दूसरे का कार्य नहीं कर सकती। आंख सुन नहीं सकती, कान बोल नहीं सकता, नाक देख नहीं सकता इत्यादि। सबमें आयुष्य बल प्राण मुख्य होता है तथा उसके समाप्त होते ही अन्य प्राण स्वतः प्रभावहीन हो जाते हैं। आयुष्य बल प्राण का प्रमुख सहयोगी श्वासोच्छ्वास बल प्राण होता है।

प्राण ऊर्जा का जितना सूक्ष्म एवं तर्क संगत विश्लेषण महावीर दर्शन में है उतना, आधुनिक चिकित्सा पद्धति में नहीं किया गया। परिणामस्वरूप उन्हें आंख, नाक, कान आदि जड़ उपकरणों की खराबियों को दूर करने में तो आंशिक सफलता मिली, परन्तु जिनमें प्राण ऊर्जा का मौलिक प्रवाह ही नहीं हो, उनको सुधार पाने में अभी तक सफलता नहीं मिली।

**संयम ही जीवन है**

स्वास्थ्य की दृष्टि से इन पर्याप्तियों और प्राणों का बहुत महत्त्व होता है। अतः महावीर ने पर्याप्तियों के संयम एवं सदुपयोग को सर्वाधिक महत्त्व दिया। जहां जीवन है वहां प्रवृत्ति तो निश्चित रूप से होती ही है। अतः पर्याप्तियों और प्राणों के संयम का मतलब हम

उनका अनावश्यक दुरुपयोग अथवा अपव्यय न करें, अपितु अनादिकाल से आत्मा के साथ लगे कर्मों से छुटकारा पाने हेतु सदुपयोग द्वारा सम्यक् पुरुषार्थ करें।

**आहार संयम**— जीवन चलाने के लिये जितना आवश्यक हो बिना किसी की अनावश्यक विराधना से प्राप्त भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक रख कर आहार-पानी आदि ग्रहण करना।

**शरीर का संयम**— शरीर की अनावश्यक एवं कम उपयोगी प्रवृत्तियों से यथासंभव बचना एवं अपनी क्षमतानुसार अशुभ कर्मों को क्षय करने हेतु सम्यक् पुरुषार्थ करना।

**इन्द्रियों का संयम**— इन्द्रियों से क्षमता से अधिक तथा अनावश्यक कार्य न करना। वीर्य का नियन्त्रण रखना अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करना। इन्द्रिय विषयों एवं विकारों में वृद्धि करने वाली प्रवृत्तियों एवं वातावरण से यथासंभव बचने हेतु सजग रहना।

**श्वास का संयम**— मन्द गति से पूर्ण एवं दीर्घ श्वास लेना तथा पूरक और रेचक के साथ-साथ कुम्भक कर श्वास को अधिकाधिक विश्राम देना। जितना अधिक श्वास का संयम होगा, उतना व्यक्ति संवेगों से सहज बच जाता है। इससे शरीर और मन को बहुत आराम मिलता है। आवेग नहीं आते हैं। आवेग से शरीर में असंतुलन और राग होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

**भाषा का संयम**— वाणी का विवेक रखना एवं यथा संभव मौन रखना, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर मधुर बोलना। अनावश्यक बोलने से जीवनी शक्ति क्षीण होती है। वाणी के प्रकम्पन हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। ध्वनि और मंत्र चिकित्सा का यही आधार होता है। वाणी शरीर और मन दोनों को प्रभावित करती है।

**मन का संयम**— मन से अनावश्यक मनन, चिन्तन, स्मृति और कल्पनायें न करना अर्थात् मन की सम्यक् प्रवृत्ति करना। मनोबल कमजोर करने वाले दृश्यों को न तो देखना और न सुनना मन का संयम होता है। हिंसा, क्रूरता, घृणा, कामुकता, भय, क्रोध, मान, माया एवं लोभ इत्यादि मनोबल कमजोर करने वाले भावों में रहना मन का असंयम होता है।

उपर्युक्त सभी का आचरण अर्थात् संयम महावीर के अनुसार स्वास्थ्य की कुंजी होता है। सभी रोगों का कारण पर्याप्तियों के असंयम से होने वाले प्राणों का असंतुलन ही होता है। पर्याप्तियों के संयम से शरीर में रोग उत्पन्न होने की संभावनाएँ काफी कम हो जाती हैं और यदि कभी रोग की स्थिति हो भी जाती है तो पर्याप्तियों के संयम से पुनः शीघ्र स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है। यही महावीर के स्वास्थ्य दर्शन का मूलाधार है।

**भगवान महावीर का कर्म सिद्धान्त और स्वास्थ्य**

सम्पूर्ण स्वास्थ्य की दृष्टि से रोग पैदा करने वाले कारणों से बचना, रोग पैदा न हो, ऐसी जीवन शैली जीना तथा जो रोग पहले से जमे हुए हों उनका विरेचन अथवा सफाई

करना आवश्यक है। महावीर की दृष्टि में हमारे कर्म ही शत्रु होते हैं। जीवन की सारी समस्याओं के सूत्रधार कर्म ही होते हैं। अतः उनसे छुटकारा पाने के लिये भगवान ने तीन मार्ग बतलाये तथा उस हेतु पुण्य, संवर और निर्जरा जैसे अलग-अलग पारिभाषिक शब्दों का कथन किया।

भगवान महावीर ने आठ प्रकार के कर्म कहे हैं। जो कर्म आत्मा के मूलगुणों का घात करते हैं, उनको घाती कर्म और जिनका संबंध मात्र शरीर से होता है, उन्हें अघाती कर्म कहा है। इस आधार पर ज्ञानावरणीय कर्म (ज्ञान पर आवरण करने वाले), दर्शनावरणीय कर्म (दर्शन को आच्छादित करने वाले) मोहनीय कर्म (राग-द्वेष पैदा कर वीतराग अवस्था में बाधक), अन्तराय कर्म (आत्मा के अनन्त बल को सीमित करने वाले अथवा जिसके प्रभाव से व्यक्ति अपनी क्षमताओं का सम्यक् एवं पूर्ण उपयोग नहीं कर सकता) घातीकर्म कहलाते हैं। जबकि वेदनीय (जिस कर्म के अनुसार शरीर को सुख-दुःख की संवेदना हो), नाम (जिस कर्म के अनुसार किसी योनि में शरीर का रंग, रूप, आकार आदि मिलता है), गोत्र (जिस कर्म के अनुसार जीव का उच्च अथवा नीच कुल में जन्म होता है और प्रारम्भिक संस्कार मिलते हैं) आयुष्य (जिसके प्रभाव से जीव को निश्चित अवधि तक किसी योनि में रहना पड़ता है) अघाती कर्म कहलाते हैं। ज्ञानावरणीय कर्म के पूर्ण क्षय से अनन्त ज्ञान, दर्शनावरणीय कर्म के पूर्ण क्षय से अनन्त सत्य दर्शन, मोहनीय कर्म के पूर्ण क्षय से अव्याबाध (सदैव रहने वाला) सुख एवं अन्तराय कर्म के पूर्ण क्षय से अनन्त शक्ति की प्राप्ति होती है। ऐसी स्थिति में जीव संसार के सूक्ष्मतम पदार्थों को देखने एवं वर्तमान, भूत एवं भविष्य में घटित होने वाले सभी तथ्यों को जानने में सक्षम बन जाता है। ये चार कर्म ही आत्म गुणों की घात करते हैं। इनका क्षय होने के पश्चात् बाकी चार- वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र कर्म जिनका संबंध तो मात्र शरीर से होता है, निर्वाण के साथ स्वयं नष्ट हो जाते हैं। यही महावीर का शरीर-सम्बन्धी स्वास्थ्य का आधार बनता है तथा आत्मा और शरीर को प्रभावित करने वाले कर्मों की भेद रेखा भी स्थापित करता है।

जो चिकित्सा पद्धतियाँ कर्म बन्धन में सहयोगी होती हैं, महावीर ने उनका पूर्ण निषेध किया। रोग का मूल कारण अप्राकृतिक जीवन शैली, अनियन्त्रित, स्वच्छन्द, असंयमित-मन, वचन, काया की प्रवृत्तियाँ ही होती हैं। अतः महावीर ने प्राकृतिक एवं अहिंसक स्वावलम्बी जीवन शैली तथा मन, वचन और काया के संयम को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। जितनी ईमानदारी से उनका पालन किया जाता है, उतना ही व्यक्ति स्वस्थ होता है तथा पूर्व संचित असातावेदनीय कर्म के कारण रोग की स्थिति यदि बन भी जाती है तो वह हाय-हाय नहीं करता, परेशान नहीं होता। वह शरीर को आत्मा से अलग, नष्ट और विध्वंसन होने

वाला मानता है। अतः उसकी प्राथमिकता शरीर पर नहीं रहती। शरीर से ध्यान के हटते ही शरीर के दर्द, पीड़ा आदि कष्ट नहीं पहुँचा सकते। जहाँ रोग का आदर-सत्कार नहीं होता, वहाँ रोग अधिक दिनों का मेहमान नहीं रह सकता।

### महावीर का चिन्तन पूर्णतः वैज्ञानिक

महावीर का चिन्तन अनुभूति पूर्ण सत्य पर आधारित है, जिसका उन्होंने स्वयं साक्षात्कार कर प्रतिपादन किया। सारी चर्चा के विश्लेषण का सारांश यही है कि महावीर का स्वास्थ्य सम्बन्धी दर्शन पूर्ण रूप से मौलिक एवं वैज्ञानिक है। अहिंसा का आधार मानकर, अनेकान्त दृष्टि से उसमें स्वास्थ्य का विवेक पूर्ण प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों को स्वीकारते हुए चिंतन किया गया है। महावीर ने जहाँ एक तरफ प्राण और पर्याप्तियों के संयम को स्वास्थ्य का आधार कहा, वहीं दूसरी तरफ अशुभ कर्मों एवं आश्रवों से बचने की स्पष्ट प्रेरणा दी तथा उन्हें ही रोग हेतु जिम्मेदार बतलाया। सम्यक् प्रवृत्ति एवं संवर युक्त जीवन शैली का कथन कर महावीर ने जनमानस को स्वस्थ जीवन जीने का राजमार्ग बतलाया। पूर्व में उपार्जित अशुभ कर्मों के रूप में होने वाले रोग के कारणों के उपचार हेतु बारह प्रकार के तपों की सम्यक् आराधना का सुझाव दिया, जिससे न केवल आत्म-शुद्धि ही होती है, अपितु अधिकांश पुराने शारीरिक एवं मानसिक रोगों से मुक्ति मिलती है। शरीर के निर्माण का कारण पंच तत्त्वों को मानने वालों के लिये महावीर ने षट् द्रव्यों तथा नव तत्त्वों की व्याख्या कर जन्म और मृत्यु द्वारा आत्मा के विविध योनियों में भ्रमण का कारण और जीवन पर पड़ने वाले जड़ और चेतन के प्रभावों का जितना तार्किक विवेचन किया है, वह स्वास्थ्य विज्ञान की अमूल्य निधि है।

शरीर एवं रोगों की अपेक्षा रोग के मूल कारणों को दूर करने पर उन्होंने जोर दिया। अतः उनके दर्शन पर जितनी अधिक शोध की जायेगी उतने-उतने स्वास्थ्य के प्रति नये आयाम सामने आते जायेंगे। महावीर का दर्शन अपने आप में परिपूर्ण है। अतः उसकी उपेक्षा करने वाला आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान एवं अन्य चिकित्सा पद्धतियाँ अपने आपको पूर्ण वैज्ञानिक मानने का दावा नहीं कर सकतीं।

सारांश यही है कि महावीर का दर्शन, अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह रूपी त्रिवेणी का समग्र जीवन्त दर्शन है, अलौकिक दर्शन है। उन्होंने आचरण में अहिंसा और व्यवहार में अनेकान्त का समावेश कर सभी दर्शनों को समुचित स्थान दिया। पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु एवं वनस्पति में जीवन एवं उनके संरक्षण पर जितना बल महावीर ने दिया उतना अन्यत्र नहीं मिलता। उसकी अवहेलना ही आज के पर्यावरण प्रदूषण एवं प्राकृतिक आपदाओं का मूल कारण है। पृथ्वी, पानी, हवा एवं अग्नि में जीवन की संभावना विज्ञान के लिए शोध का विषय है।

महावीर की दृष्टि अनाग्रहपूर्ण थी। भाषा में पूर्ण विवेक था। साधना में द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावना की सम्यक् शुद्धि का जितना महावीर ने चिन्तन किया, वैसा अन्यत्र प्रायः नहीं मिलता। साधना के मार्ग में कदम बढ़ाने की भावना रखने वाला कोई जिज्ञासु जब उनकी सेवा में उपस्थित होता, तब भी वे उसे सीधी प्रेरणा देने के बजाय यही कहते, तुम्हें जैसा सुख हो वैसा करो, परन्तु साधना में प्रमाद मत करो। उनकी कथनी करनी में एक रूपता थी। इसी कारण उनके प्रमुख शिष्य गणधर गौतम तब तक केवल ज्ञान प्राप्त नहीं कर सके, जब तक गौतम को भगवान के प्रति राग था। अन्य दर्शनों में ऐसा दृष्टान्त शायद ही मिलता है। कहने का तात्पर्य यही है कि महावीर का दर्शन पूर्णतः राग-द्वेष से मुक्त, निष्पक्ष, सम्यक् एवं प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों पर आधारित होने से जीवन के प्रत्येक पक्ष की समस्याओं के समाधान का सामर्थ्य वाला है।

सच्चा वैज्ञानिक, स्वास्थ्य की दृष्टि से सापेक्षवादी होता है और पूर्वाग्रही नहीं होता। वह स्वविवेक से रोग के मूल कारणों को समझते हुए उन्हें दूर कर अपने आपको अथवा दूसरों को स्वस्थ रखने में समर्थ होता है। महावीर के जैसे सनातन वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में ज्ञानी का ज्ञान, पंडित का पांडित्य, विद्वान् की विद्वत्ता, धार्मिक का धर्माचरण, भक्तों की भक्ति, चिकित्सकों की चिकित्सा, वैज्ञानिकों का वैज्ञानिक शोध, चिन्तकों का चिन्तन, लेखकों का लेखन अधूरा होता है। महावीर के सिद्धान्तों से मतभेद रखना, उन्हें अस्वीकारना, चिन्तनशील, प्रज्ञावान, विवेकवान व्यक्ति के लिए संभव नहीं, फिर वह जीवन का कोई भी क्षेत्र क्यों न हो? सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् आचरण उसका राजमार्ग है एवं स्वस्थ जीवन उसका लक्ष्य।

-चोरडिया भवन्, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

## स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर 15 अप्रैल 2015 तक डॉ चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं डाक पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

प्रश्न:-

1. मृत्यु के पश्चात् जीव एक योनि से दूसरी योनि में कौनसे द्रव्य की सहायता से जाता है? इस संबंध में आधुनिक विज्ञान एवं अन्य दर्शनों का क्या दृष्टिकोण है?
2. जीव और अजीव में क्या अन्तर होता है? मन जीव है या अजीव? यदि है तो क्यों?
3. मानव शरीर के निर्माण में पर्याप्तियों एवं प्राणों की क्या भूमिका होती है?
4. नाम कर्म से हमारा स्वास्थ्य कैसे प्रभावित होता है?
5. महावीर के अनुसार स्वास्थ्य का मूलाधार क्या है?
6. सभी नेत्रहीनों को आधुनिक विकसित स्वास्थ्य विज्ञान रोशनी क्यों नहीं दे सकता?
7. महावीर के स्वास्थ्य चिन्तन के अभाव में सभी चिकित्सा पद्धतियाँ अपूर्ण क्यों?

## सामायिक : समर्पण : समभाव

डॉ. लक्ष्मीचन्द जैन

1. सामायिक का महत्त्व तो सब मान लेते हैं, परन्तु प्रतिदिन एक सामायिक कम से कम का नियम कम लोग ही अपना पाते हैं। जो सामायिक का नियम निभा पाते हैं वे सचमुच में भाग्यशाली हैं कि उन्हें जीवन का सच्चा और अच्छा मार्ग मिल गया है।
2. सामायिक समभाव की जननी है तथा वीतराग प्रभु के चरणों में जीवन का समर्पण है। सामायिक आवश्यक में 'अरिहंतो महदेवो' का एक सम्यक्त्व के रूप में समर्पण सूत्र है।
3. सामायिक साधना भव-भव का भाता (पाथेय) है। अपने को यह साधना तब तक करते रहना है जब तक कि अखण्डता में लीन न हो जायें, सामायिकमय जीवन न बन जाय। समर्पण जितनी उच्च कोटि का होगा, उतना लाभ उच्चस्तरीय होगा।
4. एक शिष्य कुष्ठ रोग से पीड़ित था। इससे गुरु को उस शिष्य की सेवा करनी पड़ती थी। शिष्य को शर्मिन्दगी महसूस होती थी। एक बार एक बड़ा जहरीला साँप कमरे में दिखाई दिया। गुरु अपनी दिव्य दृष्टि से समझ गए कि शिष्य के रोग-निवारण का समय आ गया है। शिष्य से कहा- साँप के दाँत गिनो। शिष्य ने समर्पण भाव से आज्ञा मानी। साँप ने डसा। सर्प के ज़हर से रोग का शमन हुआ। **विषस्य विषमौषधम्।** शिष्य स्वस्थ हो गया। यह समर्पण का फल था।
5. सामायिक समर्पण एवं समभाव की साधना है। सामायिक कहती है- मुझ पर यकीन करके तो देखें अपने मार्ग के काँटे नतमस्तक होकर सलाम करेंगे। निष्कंटक जीवन बनेगा।

-छोटी कसरारवद (मध्यप्रदेश)

## मीठी वाणी बोलिए

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अप्रैल 2015 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

वाणी सरस्वती का रूप है। वाणी के दो गुण हैं- सत्य बोलना और मधुर बोलना। ये ही दोनों गुण वाणी को सिद्धि देने वाले हैं। गाली-गलौज, निन्दा, कटु और असत्य बोलना वाणी के दुरुपयोग हैं। वाणी के उपयोग से व्यक्ति स्वर्ग भी जा सकता है और नरकगामी भी बनता है। बड़े-बड़े सिद्ध महात्मा क्रोधवश वाणी का दुरुपयोग करके शाप देते हैं। गैस के चूल्हे से आप खाना भी बना सकते हैं और घर भी फूँक सकते हैं। हाथ में आई चिन्तामणि को आप पत्थर समझकर फैंक दें तो कोई क्या करेगा? वाणी से आप किसी को सुख उपजाकर किसी का मार्गदर्शन कर उसका सदुपयोग करेंगे अथवा शाप देकर उसका भयंकर दुरुपयोग करेंगे, यह आप पर निर्भर है।

वाणी ऋद्धि-सिद्धि देने वाली है। मधुर वाणी से आप सबको वश में कर सकते हैं। मीठी और शीतलवाणी के विषय में संत कबीर ने कितनी सुन्दर बात कही है-

वाणी ऐसी बोलिए, मन का आपा खोय।

औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय॥

और तुलसी ने कहा है-

तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।

वसीकरण इक मंत्र है, तजि दे वचन कठोर॥

मधुर वाणी वशीकरण मंत्र है। तभी तो कहा है-

कागा किसका धन हरै, कोयल किसको देइ।

मीठे वचन सुनाइके, जग अपनौ करि लेइ॥

कितना ही सिद्ध पुरुष हो, कितना ही ज्ञानी और चारित्रनिष्ठ हो, कटु वाणी बोलने वाला सबकी दृष्टि में अनादर का पात्र बनता है। ज्ञानी वक्ता के मुख से जब कठोर और अप्रिय शब्द निकलते हैं तो ऐसा लगता है, ज्ञान के साथ विवेक का संगम नहीं हुआ है। अमृत के घड़े पर किसी ने जहर का ढक्कन रख दिया है या गुलाबजल के फव्वारे में नाली का पानी भर दिया है। नीतिकारों ने सत्यवक्ता को भी कटु-सत्य बोलने से रोका है- सत्यं वद प्रियं वद, सत्य भी बोलो तो कटु सत्य मत बोलो, प्रिय सत्य ही बोलो।

एक राजा ने ज्योतिषी से पूछा- “बताओ मेरा आयुष्य कितना है? ज्योतिषी ने कहा- “आपके सामने ही आपके बेटे-पोते सब मर जायेंगे।” राजा ने क्रुद्ध होकर कहा- “ऐसे मूर्ख को डण्डे मारकर भगा दो।”

फिर दूसरे ज्योतिषी से भी राजा ने यही प्रश्न किया। उसने कहा- “आप अपने परिवार में सबसे दीर्घजीवी होंगे।” राजा ने प्रसन्न होकर उसे पुरस्कार दिया। दोनों ने एक ही बात कही, परन्तु कहने का तरीका कुछ अलग था।

शिक्षा-विषयक एक भाषण प्रतियोगिता में एक वक्ता ने कहा- “हमारे भारत में सत्तर प्रतिशत लोग अनपढ़ हैं।” दूसरे प्रतियोगी ने कहा- “हमारे देश में तीस प्रतिशत से ज्यादा लोग पढ़े-लिखे हैं।” आपको पता होना चाहिए कि दूसरा प्रतियोगी भाषण-कला में विजयी घोषित हुआ, जबकि दोनों ने एक ही बात कही थी, परन्तु कहने का ढंग अलग था।

यों तो मधुर वचन का भी दुरुपयोग होता है। ठग मीठी वाणी बोलकर ही ठगा करते हैं। फिर भी जीवन में हर प्रकार की सफलता मीठे वचन पर ही निर्भर है। बात-बात पर चिल्लाना, रूठना, झिड़कना, गाली देना, चीखकर बोलना, ऊँची आवाज में बोलना ये सब वाणी के ऐसे दुर्गुण हैं, जो पग-पग पर विफल बनाते हैं।

वाणी केवल बोलना या जीभ हिलाना नहीं है। वाणी हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व, चरित्र और साधना का दर्पण है। सज्जन और दुर्जन होने का आधार हमारी वाणी ही है। निष्कर्ष यह है कि मधुर वाणी सिद्धियों का आधार है, जीवन की सफलता मधुर वचन में ही है। अतः इस गुण का विकास सबसे पहले कीजिए। उसके बाद ही शब्द-शक्ति को जगाने और वक्तृत्व की कला में आगे बढ़िए।

**प्रश्न:-**

1. वाक्-देवी और धन की देवी किसे कहा गया है?
2. वाणी के कोई पाँच सदुपयोग बताइये।
3. वाणी के कोई पाँच दुरुपयोग बताइये।
4. अर्थ बताइये- दीर्घजीवी, ज्योतिषी, दर्पण, वशीकरण मंत्र, कागा, अनादर, अप्रिय।

5. निम्नांकित में से आप अभी किसे जीवन में अपना रहे हैं? सच्चाई से हाँ एवं ना का उत्तर देकर बताइये तथा भविष्य में आप क्या सुधार करेंगे, इस हेतु किए गए निश्चय भी लिखिए-
1. क्या आप अपने माता-पिता से चिल्लाकर बात करते हैं? ( )
  2. क्या आप बात-बात पर रूठते हैं? ( )
  3. क्या आप गाली बोलते हैं? ( )
  4. क्या आप क्रोध में चीजें फेंकते हैं? ( )
  5. क्या अपने भाई-बहिन एवं मित्रों से लड़ते हैं? ( )
  6. क्या आप झूठ बोलते हैं? ( )
6. वाणी को साधना का दर्पण क्यों कहा गया है?

### बाल-स्तम्भ [जनवरी-2015] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2015 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'आटे के मुर्गे की बलि' रचना के प्रश्नों के उत्तर 41 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	भूमि सिंघवी-जोधपुर(राज.)	23.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	दीपेश जैन-जयपुर(राज.)	23
तृतीय पुरस्कार- 200/-	रुचिबाला जैन-सिंगोली,नीमच (म.प्र.)	22.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अक्षत जैन-सवाईमाधोपुर (राज.)	22
	साक्षी संचेती-अलवर (राज.)	22
	सुधीर जैन-जोधपुर (राज.)	22
	कनक जैन-जयपुर (राज.)	21.5
	ऋषभ चौपड़ा-जोधपुर (राज.)	21

### जिनवाणी पत्रिका

श्रीमती पूजा जैन

जि- जिह्वा को मधुर बनाये,

न- नयन भी पवित्र हो जाये,

वा- वाणी में रसिकता आये,

णी- निखर संवर जीवन फिर जाये,

प- परिवार में घनिष्ठता बढ़ाये,

त्रि- त्रिवेणी सा संगम बरसाये,

का- काल तीनों फिर सार्थक बन जायें।

-धर्मपत्नी श्री पवन जी जैन, पटवा गली, शहर सवाईमाधोपुर (राज.)

## ACHARYA SHREE : THE DRIVING CHANGE-FROM HUMAN VICES TO VIRTUES

A guru always dwells in his followers hearts but rarely one comes across a disciple who dwells in his guru's heart. Such is the distinction achieved by Acharya Shree Heera Chandra ji Maharaj Sahab. It was no surprise when Acharya Shree Hastimal Ji Maharaj Sahab declared him as the next Acharya.

As we are all aware, Diksha does not only involve the change of one's attire to white clothes. It involves the renunciation of worldly life, change of orientation from worldly to spiritual acquisitions. it is a path that only the bold, brave, patient and determined can tread to attain blissful salvation.

The moment of realization for Acharya Shree came at the demise of his sister. It was then he realized that all happiness was transient and that led him to take up the vows of Diksha at a young age of 25 years. There has been no looking back since the early days of Acharya shree's Diksha. After dedicating the first few years to attain the peak of his spiritual learning, he started preaching religion throughout our vast country. There are many saints who are working towards this goal but what sets Acharya shree apart is his compassion towards all beings. It is with this compassion that he has been able to provide spiritual learning and manifest energy in his devotees.

Acharya Shree practices what he preaches. In today's cut throat environment where we always hear the saying- survival of the fittest, he is able to neutralize that view with the principles of Lord Mahavir- Live and Let Live! The dizzy heights of his spiritual knowledge have not prevented him from being a very simple and humble being. Even though he sits the top of the hierarchy of saints, his calm and composed demeanour makes him easily approachable. His teachings are not limited to how to follow the path of an acharya but to attain the ultimate goal of moksha. One of the focus areas of his teachings is the abandonment of the 7 Kuvyasan. One should not succumb to worldly attractions but should live in self-restraint, whether young or old.

In this era which has no Tirthankars, no keval Gyanis, we are very fortunate and blessed to have Acharya Shree Heera Chandra Ji Maharaj Sahab. He conveys his thoughts of substance in such simplified words, that everyone is able to comprehend and follow them. He is an ocean of forgiveness; where one can go to make confessions and take atonement to cleanse his soul and start afresh. His knowledge, belief and conduct gleam, glitter and glisten positivity. He is the bridge between us and Tirthankar. He is human, yet divine. He is our guiding light who will always keep us on track of our spiritual journey and towards the goal of nirvāṇa.

-Devendra Nath Modi, Jodhpur (Raj.)

## दिल से दुआ दो, सदा खुश रहें बेटियाँ

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

बाबुल के आंगन की शोभा होती हैं, बेटियाँ।  
 पुण्य का पवित्र उपहार होती हैं, बेटियाँ।  
 माँ-बाप को प्यारी लगती हैं, बेटियाँ।  
 भाई का असीम प्यार पाती है, बेटियाँ।  
 माँ-बाप के कलेजे की कोर होती हैं, बेटियाँ।  
 माँ-बाप के दुःख दर्द को सहलाती हैं, बेटियाँ।  
 अपने मधुर व्यवहार से मन मोह लेती हैं, बेटियाँ।  
 एक लम्बा वक्त बाबुल के घर गुज़ारती हैं, बेटियाँ।  
 माँ-बाप के खातिर समर्पित रहती हैं, बेटियाँ।  
 भाई-भावज को सम्मान देती हैं, बेटियाँ।  
 सहनशीलता की मिसाल होती हैं, बेटियाँ।  
 रिश्तों की शृंखला निभाती हैं, बेटियाँ।  
 समुराल की धरोहर होती हैं, बेटियाँ,  
 समुराल में जा कर चमन खिलाती हैं, बेटियाँ।  
 दोनों कुलों की शान बढ़ाती हैं, बेटियाँ।  
 परिणय की बात आते ही अरमान संजोती हैं, बेटियाँ।  
 किसी के घर की बहू बन जाती हैं, बेटियाँ।  
 संकट की घड़ियों में धैर्य रखती हैं, बेटियाँ।  
 धर्म की बातों को याद रखती हैं, बेटियाँ।  
 सम्मान और अपमान में समभाव रखती हैं, बेटियाँ।  
 जीना मरना सोचकर, पीया के घर जाती हैं बेटियाँ।  
 ओ जमाने वालों-

बहू और बेटियों में, कभी फर्क मत करना,  
 लोभ और लालच में, कभी जुल्म मत करना।  
 भूलें भी हो जाएँ तो उन्हें, माफ कर देना।  
 इतना प्यार देना कि, मायके की याद भूल जाएँ बेटियाँ।

लोग हो जाते हैं मायूस, जब जन्म लेती हैं बेटियाँ।  
करते हैं घोर पाप, कि जन्म लेवें न बेटियाँ।  
बेटियों के बिना, संसार चल नहीं सकता।  
बेटियों के बिना, घर संवर नहीं सकता।  
वो भाग्यशाली होते हैं, जहाँ जन्म लेती हैं बेटियाँ।  
मत ठुकराओ बेटियों को, ध्यान से सुनो।  
इंसान की इंसानियत का, इंसाफ होती है बेटियाँ।  
खुशनसीब हैं हम, जो हमारे घर आती हैं, बेटियाँ।  
दिल से दुआ करें, सदा खुश रहें ये, बेटियाँ।

-जन्ता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

## जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान : जयपुर
2. प्रकाशन अवधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
4. प्रकाशक का नाम : विनय चन्द डागा  
राष्ट्रीयता : भारतीय  
पता : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल  
दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार  
जयपुर-302003 (राज.)
5. सम्पादक का नाम : डॉ. धर्मचन्द जैन  
राष्ट्रीयता : भारतीय  
पता : श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन,  
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते: सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल  
जिनका पत्र पर स्वामित्व है : दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार  
जयपुर-302003 (राज.)

मैं, विनय चन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च 2015

हस्ताक्षर-विनय चन्द डागा  
प्रकाशक

## पाठक-प्रतिक्रिया

जिनवाणी का जनवरी 2015 का अंक मिल गया है। इस अंक में पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का प्रवचन 'स्वतंत्रता का महत्त्व' रोंगटे खड़े करने वाला है। राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत यह प्रभावशाली प्रवचन पढ़कर आचार्य श्री जवाहरलालजी म. का स्मरण हो आया। इस क्रम में डॉ. एस.एल. नागौरी जी का सामयिक लेख "भारत की स्वतंत्रता में जैनों का योगदान" थोड़े में बहुत कहता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान के प्रथम शहीद अमरचन्दजी बांठिया के त्याग व बलिदान से अनुप्राणित जीवन को राजस्थान सरकार को पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित करना चाहिये। बांठियाजी की शहादत से पूर्व उनके पुत्र को भी फिरंगियों ने तोप से उड़ाकर भयंकर खौफ पैदा कर दी थी। इतना होने पर भी उन्होंने राष्ट्रधर्म की डगर नहीं छोड़ी और हँसते-हँसते अपने प्राणों की बाजी लगा दी। राजस्थान सरकार को चाहिये कि वह राजस्थान के इस प्रथम स्वतंत्रता सेनानी के वीरतापूर्ण जीवन और प्रेरक स्मृतियों को जीवन्त करे। इतिहास की किताबों में उनकी उपेक्षा नजर आती है। पुस्तकों में रानी लक्ष्मीबाई और तांत्याटोपे के विवरण में भी बांठियाजी का उल्लेख नहीं किया जाता है। जबकि बांठियाजी ने लक्ष्मीबाई और तांत्याटोपे को आजादी के लिए प्रचुर धन दिया और अन्ततः देश के लिए अपना और अपने प्राणप्यारे पुत्र का जीवन भी अर्पण कर दिया। मैंने इस बाबत राजस्थान सरकार को पत्र लिखा है। कुछ केलेण्डरों में बांठियाजी के शहादत दिवस (22 जून) को केलेण्डर में अंकित करवाया है। समाज भी इस ओर ध्यान दें।

डॉ. उदयमुनिजी का अल्पसंख्यक विषयक लेख भी तथ्यपूर्ण और मननीय है। जैन धर्म की विपुल विरासत को बचाने और संवर्द्धित करने के लिए समाज को मिलजुलकर कार्य करना चाहिये। जैन धर्म के पुरातात्विक महत्त्व के अनेक स्थलों और आस्था के केन्द्रों पर सरकार का कब्जा है या अनधिकृत लोगों का। अब अवसर है ऐसी धरोहरों को जैन समाज विधिसम्मत तरीकों से मुक्त करवाए और उन्हें संरक्षित व संवर्द्धित करें।

-डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई

(2)

I am a regular reader of Jinvani for the last 20-25 years. It is one of the best Jain Magazine. It has a non-sectarian view and generally does not support the sect basis attitude. It covers articles useful for the young, the old, ladies, less educated and Tatvik people. I am a

retired chief engineer of Govt. of Rajasthan and had been as Joint Secretary, Govt, of India. I find Jinvani truly Anekantvadi, the real spirit of Jainism of Ahimsa, Anekant and Syadvad.

The growth of Jinvani goes well to the various Illustrious editors of the magazine. I wish , it should continue to hold The Light of Jainism.

The special issue of November,2014 on Ratri Bhojan Virati is good, in its line of special issues. I have given it to a Bhramin Pandit in Karnatak who was fascinated what Mahabharat and Markandaye have told about Ratri Bhojan. He promised me that he will read it fully and throughly and advocate it to his diciples and general public.

*-Sajjan Raj and Chandra Katariya*

## अक्षय तृतीया हेतु खेरली संघ को स्वीकृति

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने 29 जनवरी, 2015 को गंगापुरसिटी में आयोजित दीक्षा महोत्सव के पावन प्रसंग पर अक्षय तृतीया 21 अप्रैल, 2015 को खेरली विराजने की साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ स्वीकृति खेरली संघ को प्रदान की है जिससे खेरली संघ हर्षित एवं प्रमुदित है। तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के मुखारविन्द से तप और दान का माहात्म्य श्रवण कर तप-साधकों के साथ अनेक श्रद्धालुजन नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करेंगे। एकान्तर तप-साधक अपने नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख कर सम्पूर्ण जानकारी एवं अपने पधारने की सूचना संघ कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन: 0291-2636763, 2641445 एवं खेरली संघ को भिजवाने का श्रम करावें। सम्पर्क सूत्र- श्री रामबाबूजी जैन-अध्यक्ष, मो. 92141-52601, श्री महेन्द्रजी जैन-मंत्री, वार्ड नं.-8, खेरली-321606, जिला-अलवर (राज.), मो. 9414483185, 85039-68820

## सोच

संकलनकर्त्री : श्रीमती कंचन सुराणा

पैरों की मोच, और छोटी सोच हमें आगे बढ़ने नहीं देती।  
टूटी कलम और औरों से जलन, खुद का भाग्य लिखने नहीं देती।  
काम का आलस और पैसों का लालच, हमें महान् बनने नहीं देता।।

-सुराणा की बड़ी पोल्, नागौर-341001 (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

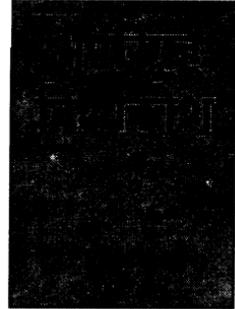


# नूतन साहित्य



डॉ. धर्मचन्द्र जैन

**अपरिग्रह विश्वकोश- सम्पादक -** डॉ. सुषमा सिंघवी, **प्रकाशक-** प्राकृत  
भारती अकादमी, 13-ए, गुरुनानक पथ, मेन मालवीय नगर,  
जयपुर- 302017 (राज.), फोन: 0141-2524827,  
2520230 एवं श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनार्थ तीर्थ,  
मेवानगर, बालोतरा, जिला-बाड़मेर (राज.), पृष्ठ-619,  
**मूल्य-1500 रुपये, सन्-2014**



आधुनिक युग में मनुष्य विकास के नाम पर अधिकाधिक धन-सम्पत्ति एवं भोग-सामग्रियों के संग्रह में अपना सुख एवं हित समझता है, ऐसे समय में अपरिग्रह विश्वकोश का प्रकाशन निश्चित ही मनुष्य की भ्रान्त धारणा को झकझोरने तथा एक बार अपनी धारणा को विश्व के महान् विचारकों के विचारों की कसौटी पर कसने का अवसर प्रदान करता है। देश-विदेश के प्राचीन एवं आधुनिक महर्षियों एवं विचारकों की एक ही ध्वनि है कि आवश्यकता से अधिक संग्रह की लालसा मानव समाज के कल्याण में बाधक है। अपरिग्रह आध्यात्मिक स्तर पर जहाँ सुख-समृद्धि का हेतु है, वहाँ सामाजिक स्तर पर समानता एवं बन्धुता के भावों को सुदृढ़ बनाता है। अपरिग्रह की अवधारणा को प्रायः जैन परम्परा की देन माना जाता है, किन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ में वैदिक, बौद्ध, इस्लाम, ईसाई, सूफी-मत, सिक्ख आदि विभिन्न परम्पराओं तथा सुकरात, प्लेटो, अरस्तू आदि पाश्चात्य दार्शनिकों के विचारों से अपरिग्रह की अवधारणा को सुदृढ़ता एवं प्रभावकता प्रदान की गई है। अपरिग्रह की अवधारणा पर यदि विश्व के मानवों की जीवन शैली एवं अर्थशास्त्र का विकास किया जाए तो पारस्परिक संघर्ष एवं वस्तुओं के अभाव की प्रतीति नगण्य हो सकती है। प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण में अपरिग्रह वृत्ति सहायक है। मनुष्य के अधिकांश झगड़ों एवं अपराधों के मूल में परिग्रह की भावना काम करती है। परिग्रह का प्रकटीकरण आसक्ति, भोगोपभोग हेतु सामग्री के संचय की प्रवृत्ति आदि के रूप में होता है। कई बार परिग्रह की भावना ही हिंसा, चोरी, झूठ आदि विभिन्न पाप-प्रवृत्तियों में संलग्न कराती है।

यह विश्वकोश आसक्ति एवं संग्रह रूप परिग्रह को त्यागने हेतु भाँति-भाँति से प्रेरणा प्रदान करता है। अपरिग्रह दरिद्रता का प्रतीक या प्रगति का विरोधी नहीं, अपितु अमीरी की

व्यर्थता का उद्घोषक है। भागवत पुराण का कथन है जितनी मात्रा से पेट भरे वही मनुज का अपना है, उससे अधिक जो चाहता है वह दण्ड का भागी है। ऋग्वेद में अकेले खाने वाले को पाप का भागी माना गया है- 'केवलाघो भवति केवलादी।' ईशावास्योपनिषद् त्याग भाव से वस्तुओं के उपयोग का सिद्धान्त प्रतिपादित करता है। भोग-सामग्री एवं धन से कभी अमृतत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। ऐसा याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को एक प्रश्न के उत्तर में कहा था। जैनागम उत्तराध्ययन सूत्र भी कहता है कि यदि सारा जगत भी मनुष्य को प्रदान कर दिया जाए एवं सारा धन प्रदान कर दिया जाए तब भी वह सन्तुष्ट नहीं हो सकता। इसलिए किसी को धन सम्पत्ति आदि से सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता, क्योंकि इच्छाओं का क्षितिज आकाश की भाँति निरन्तर आगे बढ़ता दिखाई देता है। सूत्रकृतांग सूत्र में कहा गया है कि परिग्रह करने वाला एवं उसका अनुमोदन करने वाला व्यक्ति कभी दुःख से मुक्त नहीं हो सकता। कुरआन में कहा गया है कि धन सम्पत्तियों का ढेर लगाने से जीवन सुरक्षित नहीं होता। इस्लाम की नज़र में सामान को जमा करने वाले को अल्लाह की फटकार मिलती है। ईसाई धर्म के 'न्यूटेस्टामेन्ट' में कहा गया है- "एक सुई के छेद से ऊँट का गुजरना सम्भव है, लेकिन स्वर्ग के द्वार में धनी व्यक्ति का प्रवेश मुश्किल है। बौद्ध ग्रन्थ धम्मपद में तृष्णा के त्याग की प्रेरणा की गई है। तण्हावग्ग में कहा गया है कि आवश्यकता से अधिक धन संचय करना परिग्रह है, जो अभिध्या और मिथ्यादृष्टि नामक विकारों के कारण उत्पन्न होता है।

पाश्चात्य दार्शनिक प्लेटो का चिन्तन था कि यह मेरा है या यह मेरी है, यह भावना सभी बुराइयों का मूल है। इसी से व्यक्ति के चरित्र में हानि होती है तथा समाज में अपराध उत्पन्न होते हैं। स्वामी शरणानन्द का कथन है कि समाज का वह वर्ग जो उपार्जन में असमर्थ है, उसी के निमित्त संग्रह करना आवश्यक है, चाहे उस पर अधिकार व्यक्तिगत हो या राष्ट्रगत हो। आचार्य हीराचन्द्रजी का चिन्तन है कि गृहस्थ को धन का संग्रह तो करना पड़ेगा, किन्तु संग्रह करते हुए भी इस पर विचार करना होगा कि कहीं यह संग्रह उसके लिए ग्रह रूप तो नहीं बन रहा? पेट में अन्न और तिजोरी में धन सीमित मात्रा में ही लाभदायक होते हैं।

धन-सम्पत्ति जीवन-यापन हेतु साधन हैं, इनका हमारे साथ स्थायी सम्बन्ध नहीं है। अतः इनके साथ आसक्ति कर दुःखी होना तथा दूसरों के साथ अन्याय करना उचित नहीं। परिग्रह से विलास, आलस्य तथा निर्दयता का जन्म होता है। परिग्रह का त्याग तभी सम्भव है जब लोभ एवं अनैतिकता का परिहार हो। लोभी, किन्तु अभावग्रस्त व्यक्ति अपरिग्रही नहीं होता।

सम्पूर्ण ग्रन्थ अपरिग्रह के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत करने में सम्पादक की सूक्ष्मेक्षिका,

श्रम एवं व्यापक दृष्टि का बोध कराता है। ग्रन्थ का सार यदि एक पंक्ति में कहें तो मनुष्य के पास इतना भर होना चाहिए कि उसको आवश्यकताओं की पूर्ति सहज में हो जाए एवं उससे अधिक के संग्रह करने की तनिक भी लालसा न हो। यही सुखी होने का राजमार्ग है तथा यह अपरिग्रह सर्वजनोपयोगी होता है। यदि किसी के पास अधिक संग्रह है तो वह उसका उदार भाव से जरूरतमंद लोगों में वितरण कर आनन्द का अनुभव कर सकता है।

विश्वकोश में 167 लेखकों की 275 प्रविष्टियाँ समाविष्ट हैं। ग्रन्थ में विचारों की सर्वाङ्गीणता दृग्गोचर होती है। वेद, उपनिषद् एवं प्रसिद्ध धर्मग्रन्थों से ही नहीं अपितु इसमें रैदास, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, सूरदास, मलूकदास आदि सन्तों के भी विचार संगृहीत हैं। जैन सन्तों में आचार्य हस्ती, आचार्य हीराचन्द्र, आचार्य विद्यानन्द, आचार्य विद्यासागर, आचार्य नानालाल, आचार्य महाप्रज्ञ आदि विभिन्न सन्तों के विचार उपलब्ध हैं। अष्टावक्र, आदि शंकराचार्य, महात्मा गाँधी, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, गुरुनानक, जाम्भोजी, कालिदास, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, मार्क्स, भूधरदास, झगडूशाह, भामाशाह, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अरविन्द घोष, विवेकानन्द, श्रीमद् राजचन्द्र, बाबा आम्टे, समर्थदास, स्वामी शरणानन्द आदि विभिन्न विचारकों के विचारों से यह ग्रन्थ समृद्ध है। अपरिग्रह को ग्रन्थ में सामाजिक न्याय, सामाजिक कल्याण, सापेक्ष अर्थशास्त्र, सहयोग और सहजीवन, समाजवाद, समानता आदि अवधारणाओं एवं मूल्यों के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थ में क्रिस्टोफर के चैपल, रूडि जान्समा, जॉर्ज एन्का, कौन्सटैंटिन ब्रैन्कुसि आदि दशाधिक विदेशी विद्वानों, योगेश अटल जैसे समाज शास्त्रियों, जे.के. मेहता, देवनारायण आसोपा, कान्ता आहूजा, सी.एस. बरला आदि अर्थशास्त्रियों के विचारों को स्थान देकर विश्वकोश को वैश्विक स्वरूप प्रदान किया गया है। कन्हैयालाल लोढ़ा, सागरमल जैन, दयानन्द भार्गव, बंशीधर भट्ट, हुकमचन्द भारिल्ल, देवर्षि कलानाथ शास्त्री आदि आधुनिक विचारकों, कतिपय वैज्ञानिकों एवं उद्योगपतियों के अपरिग्रह विषयक विचारों से यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी बन गया है।

प्राकृत भारती अकादमी के संस्थापक पद्मभूषण श्री डी.आर. मेहता की सूझबूझ से अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थों के प्रकाशन का श्रेय अकादमी को मिला है। अपरिग्रह कोश के पूर्व डॉ. नन्दकिशोर आचार्य के सम्पादन में 'अहिंसा विश्वकोश' भी प्रकाशित हुआ था, उसमें इससे कुछ बढ़ा ही है, घटा नहीं। विदुषी बहन डॉ. सुषमा सिंघवी द्वारा सम्पादित ग्रन्थ को देखकर यह प्रतीत होता है कि 'अपरिग्रह' एक वैश्विक अवधारणा है, जिसे आज समस्त देशों के द्वारा अपनाए जाने की आवश्यकता है। ग्रन्थ का आकार, मुद्रण एवं विषयवस्तु श्रेष्ठ है, किन्तु मूल्य को भी आम व्यक्ति की पहुँच में रखा जाता तो उचित होता।

## आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 11 जनवरी 2015 को आयोजित जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा) परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थायी वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए।

### अस्थायी वरीयता सूची

#### (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
7251	सीमा संतोषजी लूंकड़	सैदापेठ (चेन्नई)	99.75	प्रथम
7388	शर्मिला संदीपजी खिंबसरा	वैशालीनगर, अजमेर	99.50	द्वितीय
7764	मोनिका संजयजी रैदासनी	मयावरम (चेन्नई)	99.25	तृतीय

#### (द्वितीय कक्षा)

3015	नीलू सुमितजी डागा	बीकानेर (राज.)	99.75	प्रथम
5528	नेहा राजेशजी नाहटा	ऊटी (तमिलनाडू)	99.50	द्वितीय
4234	निर्मला वंसतकुमारजी बोहरा	रायचूर (कर्नाटक)	99.25	तृतीय
6323	कविता पंकजजी लोढ़ा	शिरडी (महा.)	99.25	तृतीय

#### (तृतीय कक्षा)

1526	नीता मनोजजी लुणावत	नया सिडको, नासिक (महा.)	99.75	प्रथम
3496	शर्मिला यशवन्तकुमारजी लोढ़ा	माधवरम (चेन्नई)	99.50	द्वितीय
3342	श्वेता किरणजी ओस्तवाल	नया सिडको, नासिक (महा.)	99.25	तृतीय

#### (चतुर्थ कक्षा)

3950	सरलाबाई रतनप्रकाशजी बरलोटा	चंगलपेठ (चेन्नई)	99.75	प्रथम
2669	सपना अनुपमजी कावाड़िया	तिरुकोइलूर (चेन्नई)	99.50	द्वितीय
2089	प्रमिला कुशलराजजी विनायकिया	अम्बुटूर (चेन्नई)	99.25	तृतीय

#### (पाँचवी कक्षा)

1710	सुधा अजयजी मारू	बारां (राज.)	99.75	प्रथम
593	मोहिनी रमेशचन्द्रजी तातेड़	चांदनी चौक, दिल्ली	99.50	द्वितीय
141	कमला लेखराजजी सेठिया	मसूदा (राज.)	99.25	तृतीय

#### (छठी कक्षा)

412	शोभा नरेशजी चोरडिया	नरडाणा (महा)	99.50	प्रथम
-----	---------------------	--------------	-------	-------

117	सारिका ऋषभजी जैन	भटिण्डा (पंजाब)	99.00	द्वितीय
2256	हेमलता अमितजी पीपाड़ा	कोण्डितोप (चेन्नई)	98.25	तृतीय
4287	दर्शना धर्मेन्द्रजी तालेड़ा	मैसूर (कर्नाटक)	98.25	तृतीय

## उत्तीर्ण परीक्षार्थी

### प्रथम कक्षा

(I) 7251 (II) 7388 (III) 7764

11, 175, 208, 237, 254, 258, 274, 280, 293, 371, 509, 713, 714, 994, 1133, 1135, 1164, 1175, 1177, 1188, 1200, 1240, 1256, 1335, 1395, 1409, 1416, 1733, 1798, 1799, 1999, 2081, 2130, 2145, 2205, 2236, 2294, 2493, 2499, 2576, 2607, 2778, 2809, 2821, 2865, 2869, 2871, 2878, 2890, 2944, 2966, 2967, 2970, 2977, 2981, 2986, 3017, 3145, 3166, 3178, 3208, 3316, 3329, 3346, 3462, 3550, 3552, 3554, 3597, 3677, 3679, 3719, 3722, 3730, 3737, 3821, 4020, 4021, 4062, 4124, 4149, 4151, 4152, 4176, 4181, 4208, 4213, 4224, 4232, 4246, 4248, 4254, 4261, 4269, 4301, 4330, 4331, 4350, 4453, 4466, 4467, 4469, 4528, 4689, 4766, 4767, 4901, 4910, 4911, 4917, 4934, 5038, 5100, 5102, 5104, 5130, 5241, 5254, 5258, 5276, 5336, 5357, 5385, 5386, 5393, 5467, 5468, 5472, 5475, 5479, 5480, 5493, 5521, 5556, 5557, 5630, 5636, 5638, 5680, 5684, 5724, 5744, 5783, 5880, 5881, 5913, 5920, 5927, 5928, 5929, 5931, 5932, 5935, 5947, 5955, 6022, 6080, 6082, 6087, 6132, 6135, 6139, 6166, 6181, 6184, 6185, 6203, 6250, 6281, 6332, 6362, 6376, 6383, 6385, 6403, 6475, 6480, 6490, 6494, 6634, 6637, 6638, 6639, 6641, 6642, 6643, 6644, 6645, 6646, 6647, 6648, 6654, 6658, 6659, 6661, 6662, 6663, 6666, 6669, 6672, 6673, 6679, 6680, 6681, 6682, 6683, 6685, 6692, 6696, 6704, 6706, 6711, 6716, 6717, 6721, 6722, 6723, 6732, 6736, 6739, 6741, 6746, 6751, 6753, 6755, 6768, 6769, 6771, 6774, 6775, 6776, 6777, 6778, 6779, 6780, 6781, 6782, 6784, 6785, 6797, 6799, 6803, 6805, 6808, 6810, 6812, 6826, 6828, 6830, 6831, 6832, 6834, 6840, 6842, 6843, 6845, 6847, 6848, 6849, 6850, 6851, 6853, 6854, 6855, 6856, 6858, 6863, 6868, 6869, 6870, 6878, 6880, 6881, 6883, 6884, 6885, 6887, 6889, 6892, 6893, 6897, 6898, 6901, 6902, 6903, 6905, 6906, 6907, 6908, 6909, 6910, 6911, 6914, 6915, 6916, 6917, 6920, 6921, 6922, 6923, 6924, 6925, 6926, 6927, 6929, 6930, 6931, 6932, 6934, 6940, 6942, 6943, 6944, 6945, 6946, 6947, 6948, 6956, 6959, 6960, 6961, 6962, 6963, 6964, 6966, 6967, 6969, 6970, 6971, 6972, 6973, 6975, 6982, 6983, 6987, 6988, 6989, 6991, 6997, 6998, 6999, 7000, 7001, 7002, 7003, 7011, 7014, 7019, 7021, 7031, 7034, 7035, 7036, 7038, 7042, 7048, 7049, 7050, 7061, 7062, 7065, 7066, 7070, 7076, 7077, 7078, 7079, 7081, 7083, 7085, 7087, 7088, 7089, 7092, 7094, 7095, 7096, 7099, 7100, 7103, 7104, 7107, 7108, 7109, 7112, 7114, 7115, 7119, 7121, 7122, 7123, 7124, 7125, 7126, 7130, 7136, 7139, 7140, 7148, 7153, 7154, 7157, 7158, 7161, 7162, 7166, 7167, 7168, 7169, 7173, 7176, 7177, 7179, 7182, 7187, 7191, 7193, 7195, 7202, 7203, 7206, 7207, 7208, 7213, 7216, 7219, 7220, 7221, 7228, 7229, 7230, 7231, 7232, 7233, 7239, 7241, 7242, 7243, 7245, 7248, 7249, 7251, 7254, 7255, 7258, 7260, 7262, 7266, 7269, 7271, 7276, 7277, 7278, 7280, 7281, 7282, 7283, 7287, 7288, 7290, 7291, 7292, 7294, 7299, 7300, 7301, 7303, 7304, 7307, 7308, 7309, 7316, 7317, 7318, 7319, 7320, 7321, 7323, 7324, 7325, 7327, 7328, 7337, 7339, 7340, 7342, 7343, 7344, 7345, 7347, 7352, 7353, 7354, 7355, 7357, 7360, 7367, 7370, 7371, 7386, 7387, 7388, 7389, 7390, 7392, 7394, 7395, 7401, 7403, 7405, 7407, 7408, 7409, 7410, 7414, 7417, 7419, 7422, 7426, 7430, 7434, 7435, 7436, 7437, 7438, 7439, 7441, 7442, 7443, 7444, 7445, 7446, 7450, 7451, 7457, 7465, 7466, 7467, 7468, 7471, 7473, 7474, 7476, 7493, 7494, 7497, 7498, 7500, 7502, 7504, 7505, 7506, 7507, 7509, 7513, 7514, 7515, 7516, 7517, 7518, 7519, 7521, 7522, 7523, 7524, 7525, 7526, 7527, 7528, 7529, 7531, 7532, 7533, 7535, 7536, 7537, 7540, 7543, 7544, 7547, 7548, 7549, 7550, 7551, 7553, 7554, 7555, 7557, 7558, 7559, 7561, 7573, 7577, 7578, 7579, 7580, 7582, 7583, 7584, 7585, 7586, 7589, 7593, 7594, 7598, 7600, 7601, 7602, 7604, 7611, 7612, 7613, 7616, 7619, 7620, 7621, 7623, 7633, 7634, 7638, 7639, 7641, 7644, 7650, 7651, 7694, 7704, 7708, 7709, 7710, 7711, 7712, 7713, 7714, 7715, 7716, 7717, 7719, 7720, 7721, 7723, 7724, 7725, 7726, 7727, 7728, 7729, 7731, 7732, 7733, 7736, 7737, 7738, 7741, 7742, 7743, 7744, 7746, 7750, 7751, 7752, 7753, 7754, 7755, 7756, 7757, 7760, 7761, 7762, 7763, 7764, 7765, 7766, 7771, 7778, 7784, 7789, 7790, 7793, 7799, 7800, 7801, 7804, 7805, 7806, 7807, 7810, 7813, 7814, 7816, 7819, 7820, 7821, 7828, 7829, 7833, 7839, 7840, 7841, 7842, 7843, 7848, 7850, 7851, 7852, 7856, 7857, 7862, 7863, 7864, 7875, 7900, 7901, 7905, 7906, 7907, 7908, 7911, 7912, 7918, 7919, 7920, 7921, 7922, 7923, 7924, 7925, 7926, 7927, 7928, 7929, 7930, 7931, 7932, 7933, 7934, 7935, 7936, 7937, 7938, 7941, 7942, 7944, 7945, 7946, 7949, 7950, 7951, 7952, 7953, 7954, 7957, 7959, 7960, 7962, 7964, 7965, 7966, 7968, 7969, 7970, 7972, 7973, 7974, 7975, 7976, 7977, 7978, 7980, 7981, 7982, 7983, 7984, 7985, 7987, 7988, 7989, 7990, 7991, 7992, 7994, 7995, 7997, 7998, 8001

(Total Student Count: 785)

### द्वितीय कक्षा

(I) 3015 (II) 5528 (III) 4234, 6323

16, 95, 148, 149, 162, 164, 234, 290, 300, 334, 335, 631, 733, 932, 941, 990, 1059, 1131, 1150, 1163, 1187, 1221, 1224,

1315, 1326, 1398, 1411, 1422, 1442, 1447, 1490, 1591, 1708, 1712, 1713, 1804, 1899, 1909, 1935, 1954, 1989, 2483, 2484, 2488, 2520, 2526, 2598, 2635, 2675, 2677, 2717, 2750, 2761, 2769, 2787, 2804, 2807, 2840, 2863, 2866, 2867, 2868, 2922, 2956, 2971, 3004, 3015, 3028, 3056, 3061, 3095, 3174, 3201, 3232, 3298, 3299, 3300, 3301, 3328, 3330, 3334, 3336, 3339, 3343, 3370, 3479, 3544, 3548, 3549, 3553, 3568, 3578, 3596, 3619, 3665, 3666, 3672, 3687, 3699, 3731, 3733, 3744, 3755, 3756, 3757, 3758, 3787, 3887, 3888, 3981, 3982, 3998, 3999, 4003, 4004, 4006, 4013, 4023, 4055, 4070, 4074, 4075, 4077, 4078, 4080, 4082, 4083, 4094, 4098, 4107, 4112, 4121, 4122, 4133, 4178, 4182, 4187, 4191, 4194, 4197, 4201, 4202, 4203, 4204, 4205, 4212, 4214, 4216, 4227, 4233, 4234, 4235, 4249, 4252, 4258, 4259, 4267, 4268, 4271, 4293, 4296, 4298, 4308, 4309, 4316, 4320, 4325, 4326, 4329, 4335, 4338, 4343, 4346, 4351, 4353, 4354, 4384, 4389, 4396, 4403, 4413, 4436, 4443, 4444, 4446, 4447, 4451, 4452, 4465, 4473, 4475, 4494, 4506, 4508, 4521, 4657, 4683, 4687, 4688, 4691, 4694, 4695, 4696, 4701, 4819, 4854, 4867, 4884, 4893, 4899, 4907, 4908, 4909, 4913, 4932, 4942, 4963, 4975, 4977, 5016, 5023, 5024, 5030, 5034, 5042, 5097, 5098, 5107, 5108, 5109, 5110, 5124, 5139, 5142, 5154, 5156, 5198, 5203, 5222, 5228, 5235, 5245, 5249, 5267, 5271, 5274, 5277, 5287, 5288, 5289, 5290, 5291, 5294, 5295, 5315, 5316, 5318, 5323, 5330, 5331, 5332, 5342, 5343, 5366, 5383, 5387, 5388, 5389, 5391, 5392, 5394, 5395, 5396, 5397, 5401, 5405, 5406, 5411, 5420, 5422, 5432, 5454, 5458, 5460, 5464, 5469, 5471, 5474, 5477, 5484, 5485, 5486, 5490, 5503, 5504, 5516, 5525, 5528, 5534, 5559, 5574, 5587, 5589, 5598, 5605, 5606, 5634, 5635, 5639, 5642, 5644, 5647, 5650, 5651, 5652, 5653, 5655, 5657, 5658, 5662, 5665, 5666, 5667, 5671, 5672, 5676, 5679, 5681, 5686, 5688, 5692, 5693, 5694, 5699, 5700, 5709, 5712, 5713, 5714, 5731, 5739, 5747, 5754, 5756, 5761, 5768, 5769, 5770, 5771, 5772, 5775, 5776, 5777, 5778, 5779, 5780, 5782, 5786, 5811, 5812, 5813, 5814, 5816, 5818, 5821, 5828, 5832, 5834, 5835, 5837, 5839, 5840, 5843, 5845, 5853, 5858, 5870, 5884, 5891, 5903, 5904, 5910, 5917, 5919, 5924, 5926, 5930, 5933, 5936, 5937, 5942, 5946, 5951, 5961, 5969, 5984, 6003, 6015, 6016, 6017, 6029, 6033, 6042, 6044, 6045, 6046, 6049, 6055, 6058, 6066, 6081, 6084, 6085, 6092, 6103, 6110, 6112, 6115, 6116, 6124, 6126, 6128, 6133, 6134, 6140, 6141, 6144, 6152, 6160, 6169, 6188, 6189, 6190, 6191, 6199, 6205, 6206, 6208, 6212, 6216, 6219, 6221, 6225, 6226, 6227, 6233, 6235, 6239, 6240, 6241, 6244, 6246, 6247, 6249, 6253, 6254, 6255, 6256, 6267, 6268, 6269, 6273, 6278, 6279, 6282, 6283, 6311, 6314, 6315, 6320, 6321, 6322, 6323, 6324, 6325, 6331, 6342, 6348, 6351, 6356, 6363, 6365, 6368, 6374, 6375, 6387, 6388, 6412, 6414, 6420, 6422, 6424, 6426, 6445, 6446, 6447, 6451, 6455, 6461, 6464, 6471, 6474, 6484, 6486, 6487, 6489, 6491, 6509, 6516, 6519, 6521, 6524, 6528, 6532, 6536, 6541, 6543, 6546, 6547, 6555, 6556, 6557, 6570, 6571, 6572, 6579, 6581, 6582, 6583, 6587, 6589, 6591, 6596, 6598, 6600, 6602, 6604, 6619, 6623, 6626, 6628, 6629, 6632, 6791, 6824, 6936, 6984, 6985, 7120, 7222, 7346, 7398, 7508, 7786, 7795, 7796, 7815, 7853, 7854, 7855, 7910, 7939, 7943, 7956, 7961, 7967, 7986, 7999

(Total Student Count:568)

## तृतीय कक्षा

(I) 1526 (II) 3496 (III) 3342

18, 26, 99, 128, 139, 152, 183, 215, 227, 242, 245, 380, 382, 447, 453, 504, 506, 610, 612, 622, 887, 896, 909, 948, 951, 981, 983, 1001, 1005, 1018, 1064, 1076, 1092, 1094, 1095, 1099, 1113, 1156, 1176, 1178, 1248, 1262, 1270, 1274, 1286, 1295, 1397, 1412, 1415, 1425, 1431, 1526, 1571, 1746, 1750, 1770, 1805, 1815, 2028, 2065, 2091, 2096, 2105, 2106, 2131, 2138, 2201, 2278, 2284, 2353, 2390, 2400, 2426, 2545, 2551, 2554, 2565, 2575, 2579, 2580, 2581, 2582, 2584, 2585, 2611, 2616, 2618, 2626, 2627, 2628, 2636, 2637, 2638, 2639, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2647, 2649, 2667, 2670, 2671, 2672, 2779, 2780, 2805, 2834, 2843, 2917, 2933, 2935, 2940, 2952, 2954, 2992, 2995, 3046, 3093, 3133, 3165, 3196, 3219, 3223, 3227, 3237, 3238, 3242, 3327, 3331, 3335, 3340, 3341, 3342, 3344, 3345, 3347, 3351, 3354, 3362, 3368, 3397, 3427, 3429, 3448, 3450, 3455, 3457, 3496, 3497, 3498, 3504, 3516, 3545, 3546, 3559, 3565, 3569, 3570, 3571, 3573, 3574, 3580, 3589, 3590, 3592, 3594, 3603, 3610, 3635, 3644, 3683, 3684, 3686, 3692, 3693, 3716, 3747, 3750, 3752, 3760, 3768, 3776, 3777, 3783, 3784, 3785, 3792, 3795, 3796, 3802, 3904, 3910, 3911, 3914, 3936, 3941, 3945, 3953, 3962, 3979, 3980, 3987, 4414, 6192, 6535, 6588, 6794, 6872, 7313, 7503

(Total Student Count:212)

## चतुर्थ कक्षा

(I) 3950 (II) 2669 (III) 2089

15, 46, 97, 98, 116, 142, 151, 184, 192, 196, 226, 262, 265, 275, 285, 327, 328, 329, 333, 342, 347, 369, 373, 461, 484, 493, 510, 514, 542, 567, 591, 615, 616, 684, 721, 722, 724, 725, 731, 735, 736, 737, 856, 858, 894, 907, 923, 924, 929, 942, 943, 973, 1012, 1085, 1127, 1144, 1153, 1161, 1162, 1210, 1213, 1249, 1263, 1272, 1275, 1277, 1279, 1297, 1308, 1309, 1316, 1337, 1338, 1354, 1391, 1403, 1405, 1473, 1501, 1504, 1507, 1508, 1518, 1519, 1566, 1572, 1585, 1660, 1675, 1688, 1748, 1780, 1788, 1791, 1814, 1818, 1821, 1822, 1825, 1834, 1835, 1994, 2012, 2025, 2059, 2068, 2072, 2078, 2087, 2089, 2102, 2107, 2110, 2139, 2153, 2183, 2223, 2247, 2261, 2276, 2314, 2315, 2316, 2345, 2404, 2417, 2451, 2458, 2500, 2508, 2510, 2532, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2543, 2546, 2547, 2550, 2557, 2558, 2559, 2569, 2617, 2634, 2653, 2656, 2658, 2661, 2663, 2664, 2665, 2669, 2674, 2678, 2686, 2689, 2690, 2692, 2696, 2698, 2699, 2700, 2709, 2712, 2721, 2722, 2739, 2749, 2770, 2771, 2827, 2828, 2833, 2842, 2850, 2911, 2913, 2914, 2915, 2918, 2920, 2923, 2926, 2927, 2928, 2929, 2930, 2932, 2941, 2943, 2945, 2951, 2962, 2972, 2973, 2979, 2983, 2988, 2993,

2998, 3030, 3045, 3051, 3053, 3055, 3066, 3072, 3085, 3086, 3094, 3096, 3098, 3112, 3116, 3149, 3172, 3193, 3195, 3199, 3200, 3210, 3211, 3212, 3222, 3225, 3236, 3241, 3244, 3272, 3274, 3311, 3360, 3374, 3375, 3376, 3380, 3411, 3434, 3435, 3452, 3478, 3481, 3483, 3485, 3486, 3487, 3488, 3492, 3493, 3494, 3508, 3509, 3510, 3511, 3512, 3515, 3556, 3557, 3566, 3567, 3588, 3591, 3593, 3600, 3606, 3609, 3622, 3711, 3712, 3740, 3745, 3754, 3781, 3870, 3886, 3906, 3909, 3917, 3920, 3921, 3933, 3946, 3947, 3950, 3957, 3964, 3967, 3968, 3970, 3976, 3991, 5296, 5971, 6613, 6745, 7252, 7664

(Total Student Count:300)

### पॉचवी कक्षा

(I) 1710 (II) 593 (III) 141

13, 94, 141, 202, 221, 246, 257, 261, 294, 421, 424, 425, 427, 580, 588, 589, 592, 593, 638, 665, 670, 671, 825, 859, 888, 915, 961, 1015, 1077, 1100, 1126, 1218, 1260, 1303, 1317, 1349, 1366, 1643, 1707, 1709, 1710, 1714, 1747, 1991, 1992, 1998, 2001, 2002, 2040, 2094, 2237, 2240, 2396, 2418, 2453, 2729, 3224, 3604, 6879, 6886

(Total Student Count:60)

### छठी कक्षा

(I) 412 (II) 117 (III) 2256, 4287

2, 7, 10, 12, 24, 28, 31, 34, 37, 86, 93, 96, 113, 117, 131, 133, 134, 138, 179, 180, 243, 244, 288, 344, 345, 357, 358, 370, 374, 390, 412, 413, 428, 430, 431, 432, 433, 435, 436, 437, 449, 518, 521, 526, 530, 533, 534, 537, 538, 543, 557, 559, 569, 574, 581, 582, 584, 594, 633, 637, 708, 711, 712, 728, 729, 734, 750, 754, 766, 781, 805, 807, 809, 813, 817, 819, 826, 828, 829, 885, 889, 934, 937, 944, 947, 950, 953, 954, 956, 957, 958, 959, 965, 966, 969, 987, 1004, 1016, 1017, 1079, 1082, 1107, 1108, 1117, 1146, 1148, 1152, 1181, 1182, 1184, 1189, 1278, 1282, 1292, 1310, 1344, 1346, 1350, 1353, 1355, 1358, 1360, 1362, 1363, 1389, 1392, 1399, 1436, 1454, 1455, 1456, 1462, 1475, 1478, 1479, 1480, 1482, 1483, 1484, 1498, 1500, 1506, 1527, 1549, 1550, 1552, 1553, 1555, 1556, 1558, 1560, 1574, 1576, 1577, 1578, 1734, 1735, 1743, 1813, 2039, 2044, 2060, 2064, 2067, 2074, 2075, 2084, 2099, 2100, 2103, 2111, 2126, 2127, 2135, 2136, 2149, 2163, 2224, 2227, 2233, 2238, 2239, 2241, 2242, 2243, 2244, 2249, 2251, 2252, 2253, 2254, 2256, 2262, 2266, 2339, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2362, 2363, 2364, 2365, 2409, 2410, 2412, 2413, 2422, 2423, 2425, 2427, 2445, 2459, 2648, 4113, 4287, 4288, 4289, 6469, 6601, 6617, 6618, 7102, 8000

(Total Student Count:226)

### परिणाम रोका गया

1003, 1194, 1195, 1198, 1199, 1202, 1205, 1206, 1208, 1533, 1534, 1543, 1545, 1801, 1802, 1870, 1961, 2066, 2338, 2519, 2800, 3205, 3286, 3671, 3717, 3840, 6537, 6671, 7876, 7877, 7878, 7881, 7882, 7883, 7885, 7886, 7889, 7890, 7891, 7892, 7894, 7895.

उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत	कुल केंद्र
2384	2151	90.22%	216

### बोर्ड की आगामी परीक्षा 12 जुलाई, 2015 को

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 12 जुलाई, 2015 रविवार को 12.30 से 3.30 बजे तक हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती माध्यम से आयोजित की जायेगी तथा जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़े) की आगामी परीक्षा कक्षा 1 से 7 के लिए 10 जनवरी, 2016 को 12.30 से 3.30 बजे तक हिन्दी माध्यम से आयोजित होगी। आवेदन-पत्र, सम्बन्धित कक्षा की पुस्तकें प्राप्ति हेतु तथा परीक्षा-सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें: website : [www.jainratnaboard.com](http://www.jainratnaboard.com), Email-[info@jainratnaboard.com](mailto:info@jainratnaboard.com)

सुरेश बी. चोरडिया	नवरतन गिड़िया	धर्मचन्द जैन	शिक्षण बोर्ड
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार	कार्यालय
094440-28841	094141-00759	093515-89694	0291-2630490

# समाचार विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(28 फरवरी, 2015)

- जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6 गंगापुरसिटी से विहार कर मण्डावर की ओर विहार कर रहे हैं। पल्लीवाल क्षेत्र में विहार के दौरान निम्नांकित सम्पर्क सूत्र रहेंगे- श्री राहुलजी जैन-हिण्डौन-09414364958, श्री नरेन्द्र जी सुपुत्र श्री प्रेमचन्दजी जैन-हिण्डौन-09414370606
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5 सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 जयपुर के झोटवाड़ा स्थित स्थानक भवन में विराज रहे हैं। जयपुर में उनका विचरण चल रहा है।
- तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 हिण्डौनसिटी विराज रहे हैं।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा 10 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 11 भोपालगढ़ की ओर बढ़ रहे हैं। 01 मार्च को वहाँ पहुँचने की संभावना है।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 करौली विराज रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5, व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 हिण्डौनसिटी विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 सुभाषनगर, भीलवाड़ा विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 गुजरात में जरोद पधारे हैं, हलोल की ओर विहार चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 5 कर्नाटक के धारवाड़ पधारे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 7 बेलगाँम पधार रहे हैं।

- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 का इलकल की ओर विहार चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 बड़ौदा के करेली बाग स्थानक विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 बालोतरा विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 5 का मण्डावर की ओर विहार चल रहा है।
- महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 गदग (कर्नाटक) पधारे हैं।
- महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का बागलकोट की ओर विहार चल रहा है।

## गंगापुरसिटी में बड़ी दीक्षा के अनन्तर आचार्यप्रवर का विहार मण्डावर की ओर

नवदीक्षित संतों की बड़ी दीक्षा सविधि-सम्पन्न

ओमप्रकाशजी बने विनम्रमुनिजी एवं रविजी बने रवीन्द्रमुनिजी

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-स्वाध्याय, व्यसन-मुक्ति एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेश प्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 29 जनवरी 2015 को मुमुक्षु श्री ओमप्रकाशजी एवं मुमुक्षु श्री रविजी की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न होने के पश्चात् मध्याह्न मांगलिक प्रदान कर पूज्य आचार्यप्रवर ने मुनिमण्डल के साथ दीक्षा-स्थल राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नं. 3 से विहार किया तथा गंगापुर शहर के स्थानक भवन में पावन पदार्पण किया। विहार में जन समुदाय जयघोष करता हुआ साथ चल रहा था। यहाँ पूज्य आचार्यप्रवर 3 फरवरी 2015 तक विराजे। 4 फरवरी को प्रातःकाल पूज्य आचार्यप्रवर छोटी उदई मोड़ स्थित पल्लीवाल मोटर्स भवन पधारे। जहाँ प्रातः 9.30 बजे बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम विधिवत् प्रारम्भ हुआ।

चतुर्विध संघ की उपस्थिति में 4 फरवरी 2015 को नवदीक्षित संत श्री ओमप्रकाशजी एवं श्री रविजी की बड़ी दीक्षा का आयोजन पल्लीवाल मैरिज गार्डन, गंगापुरसिटी में सम्पन्न हुआ। दोनों संतों को पूज्य आचार्यप्रवर ने दशवैकालिक सूत्र के पाठों का विवेचन करते हुए पाँच महाव्रतों में आरूढ़ किया। इस अवसर पर 36 साधु-साध्वी विराजमान थे। बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) में आरूढ़ होने के पश्चात् नवदीक्षित संतों ने वहाँ विराजित संतवृन्द को सविधि वंदन किया।

**पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि दीक्षा जीवन में शिक्षा का आचरण है। इसका दृढ़तापूर्वक पालन करने से ही संयम जीवन सार्थक होता है।

**तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.** ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि दुःख कोई भी नहीं चाहता, किन्तु ऐसा कौन है जो दुःख से ग्रस्त नहीं है। दुःखमुक्ति के मार्ग पर सार्थक कदम बढ़ाने का यह प्रसंग है। सात दिन के परिवीक्षाकाल के पश्चात् नवदीक्षित संतों को छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ किया गया है। पहले एवं 24 वें तीर्थंकर के काल में छेदोपस्थापनीय चारित्र होता है, अन्य 22 तीर्थंकरों के समय यह नहीं होता। संयम जीवन में प्रत्येक जीव के प्रति एवं हर परिस्थिति के प्रति समता रखनी होती है।

**महान् अध्ववसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि साधक को साधना में आगे बढ़ने के लिए तीन सूत्र कहे गए हैं- 1. साधक की साधना का हर क्षण, हर पल, हर श्वास गुरु चरणों में हो, 2. बड़ों का वात्सल्य हो एवं छोटों का आदर भाव हो, निभना-निभाना ऐसा हो कि साधना में सहकार रहे, 3. स्वाध्याय में रमण हो।

**पूज्य आचार्यप्रवर** ने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि कर्म काटने एवं आत्मस्वभाव में आने का एक मात्र उपाय संयम है। संयम सिद्धि मिलाने वाला है। संयम में पुरुषार्थ करने वाला श्रेष्ठ है। संयम में सम्प्रेरक लोग निर्जरा में सहयोगी होते हैं। ऐसे धर्मशीलजन भी होते हैं जो अपने पुत्ररत्नों को गुरु चरणों में सौंप देते हैं। कृष्ण की तरह दलाली कर आगे बढ़ाने वाले लोग भी हैं। संयमियों की सेवा करने वाले भी हैं। वे अम्मा-पियरो बन निर्जरा के भागीदार होते हैं। लेकिन कुछ लोग संयम से गिराने का कार्य करते हैं, संयम में अश्रद्धा उत्पन्न करते हैं, वे लोग महामोहनीय कर्म का बंध करते हैं। गंगापुर वालों का मन भी साधना में सहयोग का रहा है। पूज्य आचार्यप्रवर ने नवदीक्षित संत श्री ओमप्रकाशजी का नया नाम **श्री विनम्रमुनिजी** तथा नवदीक्षित संत श्री रविजी का नया नाम **श्री रवीन्द्रमुनिजी** घोषित किया। पूज्य आचार्यप्रवर ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप लोग पूर्णतः संयमी नहीं बन सकें तो देशसंयमी बनकर भगवान के शासन की दीप्ति को वर्धापित करने में सहकार करें। श्री विनम्रमुनिजी की

सांसारिक माताजी श्रीमती मंजू जी जैन-पीपाड़ ने चिड़ियाँ की तरह एक बूँद पानी से आग बुझाने की तरह जिनशासन में पुत्र को समर्पित कर एक छोटा सा प्रयास किया है। सन्तों से कहना है- माँ के दूध को मत लजाना, गुरु चरणों में रहकर ज्ञान-ध्यान सीखने का लक्ष्य रखना।

बड़ी दीक्षा के अवसर पर जयपुर, भरतपुर, सर्वाईमाधोपुर, कुशतला, हिण्डौन, करौली, खोह, बरगमां, हरसाना, मुम्बई, बैंगलोर, चेन्नई आदि अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालु उपस्थित थे। स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा का लाभ श्री राजीवजी, संजयजी पल्लीवाल ने प्रमोद भाव से लिया। गंगापुर प्रवास समय में श्री श्रवणलालजी, कोमलकुमारजी जैन परिवार की सेवा-सम्हाल प्रमोदकारी रही। गंगापुर संघ के सभी सदस्यों ने अति उल्लास के साथ सामंजस्य एवं संगठन का उदाहरण प्रस्तुत किया।

### बड़ी दीक्षा के अनन्तर विहार

बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न होने के अनन्तर पूज्य आचार्यप्रवर ने मुनि मण्डल सहित ठाणा 10 से सामूहिक विहार किया तथा मार्ग में स्थित तिराहे से संत मण्डल दो सिंघाड़ों में विभक्त हो गये। पूज्य आचार्यप्रवर महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा., नवदीक्षित श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी एवं श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. ठाणा 6 का महुवा-मण्डावर एवं खेरली क्षेत्र की ओर विहार हुआ तथा दूसरी ओर तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा. ठाणा 4 का करौली, श्री महावीरजी आदि क्षेत्रों को फरसने की भावना से विहार हुआ।

आचार्य भगवन्त 5 फरवरी को छोटी उदई, 6 फरवरी को हनुमानपुरा एवं पिलौदा, 7 को सैवाला, 8 को मोहताणपुरा, 9 को खण्डीप, 10 को कहकड़ पधारे, जहाँ सरवाड़ संघ सेवा में उपस्थित हुआ। 11 को पटौदा (श्री महावीरजी रेलवे स्टेशन) पधारे। यहाँ से 12 को बरगमां पदार्पण हुआ, जहाँ तीन दिन विराजे। यह धर्मनिष्ठ क्षेत्र है। 15 फरवरी को यहाँ से विहार कर खेरिया ग्राम, 16 को झारेड़ा, 17 को फाजिलाबाद, 18 को डेहरा, 19 को कंजोली पधारे, जहाँ मण्डावर श्री संघ एवं दिवंगत गुरुभक्त श्री हरिप्रसादजी जैन का परिवार दर्शन-वन्दन एवं मंगल-श्रवण के लिए उपस्थित हुआ। 20 को कर्मपुरा में बीजापुर श्री संघ के पदाधिकारी उपस्थित हुए। 21 को बाँला, 22 को खेरला बुजुर्ग पधारे, जहाँ जोधपुर श्री संघ के पदाधिकारी विनति लेकर उपस्थित हुए। 23 को खावदा, 24 को गहनौली में अजमेर श्री संघ विनति लेकर उपस्थित हुआ। 25 को साथा पधारे। यहाँ से 26 फरवरी को महुआ पदार्पण हुआ। महुआ में दो दिन विराजे तथा 28 फरवरी को रसीदपुर पधारे हैं।

विहार सेवा में गंगापुर, हिण्डौन, हरसाना, बरगमां, कटकड़, सैवाला आदि ग्रामों से प्रतिदिन 50 से 100 श्रावक-श्राविका विहार सेवा दे रहे हैं। युवकों की विहार सेवा सराहनीय है। पल्लीवाल क्षेत्र में 43 दिन के प्रवास में 65 आजीवन शीलव्रत हुए हैं।

अनेक ग्राम नगरों से विनतियाँ चल रही हैं। फाल्गुनी चौमासी हेतु बरगमां, हरसाना, मण्डावर आदि संघों ने विनति प्रस्तुत की है। पूज्य आचार्यप्रवर के चातुर्मास हेतु हिण्डौन संघ की विनति चल रही है। अलवर संघ ने महावीर जयन्ती एवं वर्ष 2015 में तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के चातुर्मास हेतु विनति रखी है। माधवनगर से महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. के चातुर्मास हेतु विनति चल रही है। अनेकविध विनतियों का दौर निरन्तर जारी है।

## उपाध्यायप्रवर एवं शासनप्रभाविकाजी के सतत सान्निध्य से जोधपुर नगर लाभान्वित

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में जोधपुर नगर के श्रावक-श्राविका निरन्तर लाभान्वित हो रहे हैं। माघ शुक्ला त्रयोदशी 1 फरवरी 2015 को शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. का 69 वाँ दीक्षा-दिवस पावटा में तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. ने महासतीजी के उपकारों को प्रस्तुत किया। महासती श्री कान्ताजी म.सा. ने कहा कि गुरुणी जी महाराज में छहों द्रव्यों के गुण विद्यमान हैं। वे अनन्त उपकारिणी हैं। आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को उनका जन्म हुआ एवं माघ शुक्ला त्रयोदशी को उनकी दीक्षा हुई। शुक्लता की यह वृद्धि उनके संयम-जीवन की उत्तरोत्तर वृद्धि की सूचक है। महासती श्री विनीत प्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए- 'सुनलो साधक सारा, मैनासुन्दरी प्यारा' भजन प्रस्तुत किया। महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. ने कहा कि दर्शन के तीन अर्थ हैं- देखना, श्रद्धा और अनुभूति। मैंने गुरुणीजी को देखा, उनके प्रति श्रद्धा हुई और अब अनुभूति भी हो रही है। उन्होंने "भव-भव चाहूँ तेरा शरणा" कविता के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. रत्नसंघ में इस समय दीक्षा में सबसे वृद्ध हैं। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मुझमें जो कुछ है वह गुरुदेव की प्रेरणा से है तथा सभी गुण गुरुदेव के चरणों में अर्पित हैं। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने भी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला तथा कहा कि जिस समय प्रायः विधवा महिलाओं के द्वारा दीक्षा ली जाती थी, उस समय

मैनासुन्दरीजी ने कुमारी अवस्था में दीक्षा ग्रहण कर एक नया मार्ग प्रशस्त किया। अब तो कुमारियों की ही दीक्षा अधिक होती है।

पावटा में 2 फरवरी को चतुर्दशी के अवसर पर दया, संवर, उपवास, पौषध की साधना हुई। उपाध्यायप्रवर संत मण्डली के साथ 3 फरवरी को पावटा से विहार कर डॉ. प्रकाशजी मेहता के आवास पर ठहरते हुए 4 फरवरी को घोड़ों का चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारे। वहाँ पर नित्य प्रवचन एवं धर्म साधना का प्रवाह बना रहा। 20 फरवरी को आप सिंहपोल के स्थानक पधारे। यहाँ एक सप्ताह तक क्षेत्र को लाभान्वित किया। अष्टमी के दिन दया-संवर आदि की आराधना हुई। निमाज से कोठारी वीर परिवार दर्शन-वन्दन एवं मंगल-श्रवण हेतु उपस्थित हुआ। दिवंगत श्री कनकमलजी कोठारी के सुपौत्र श्री जितेन्द्रमुनिजी उपाध्यायप्रवर की सेवा में हर पल उपस्थित रहते हैं। यहाँ से पूज्य उपाध्याय प्रवर 27 फरवरी को पुनः घोड़ों का चौक स्थानक पधार गये हैं।

### सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी का जयपुर में विचरण

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का जयपुर में विचरण हो रहा है। 13 जनवरी को आप लाल भवन से विहार कर तख्तेशाही मार्ग स्थित रत्न स्वाध्याय भवन पधारे। यहाँ से 14 जनवरी को न्यू लाईट कॉलोनी होते हुए 15 जनवरी 2015 को महारानी फार्म स्थित समता भवन पधारे। यहाँ पर 22 जनवरी को पूज्य आचार्य हस्ती का 95 वां दीक्षा दिवस तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। समता भवन खचाखच भरा हुआ था। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. एवं अंत में श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. ने आचार्य श्री हस्ती के जीवन एवं उनके दर्शन पर प्रकाश डाला। यहाँ श्री विमलचन्दजी डागा, श्री विनयचन्दजी डागा एवं श्री सुरेशजी कोठारी ने प्रतिदिन 3-3 सामायिक करने का नियम स्वीकार किया। 10 फरवरी को संत-मण्डल के साथ आपश्री यहाँ से विहार कर मानसरोवर के महावीर भवन पधारे। यहाँ धर्माराधन का लाभ प्रदान कर 20 फरवरी को निर्माण नगर, 21 को चित्रकूट, 22 को पांच्यावाला-सिरसी रोड़ होते हुए 23 फरवरी को जैन स्थानक झोटवाड़ा पधारे। फाल्गुनी पूर्णिमा पर झोटवाड़ा विराजने की संभावना है।

### हुबली में बड़ी दीक्षा

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 25 फरवरी 2015 को दीक्षित खुशबूजी एवं शिल्पाजी की बड़ी दीक्षा 31 जनवरी 2015 को हुबली में ही सम्पन्न हुई। दोनों नवदीक्षिता साध्वियों को व्याख्यात्री महासती ज्ञानलताजी

म.सा. ने पंच महाव्रतों के साथ छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ किया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की अनुज्ञा से नवदीक्षिता साध्वी खुशबूजी का नाम महासती खुशबूश्रीजी तथा साध्वी शिल्पाजी का नाम महासती महिमाश्रीजी रखा गया।

## वीतराग ध्यान शिविर भरतपुर में 28 मार्च से आयोजित

राग-द्वेष की मलिनता से आत्मा को निर्मल करना ही धर्म का लक्ष्य है। इसी लक्ष्य की पूर्ति हेतु ध्यान साधना की जाती है। अतः इसी राग-द्वेष को दूर करने के प्रायोगिक (प्रेक्टिकल) अभ्यास के लिए अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संस्था सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के तत्त्वावधान में वीतराग ध्यान साधना-शिविर 28 मार्च 2015 के सायंकाल 5 बजे से 7 अप्रैल 2015 के अपराह्न 4 बजे तक भरतपुर में आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक साधक 20 मार्च 2015 तक आवेदन पत्र पूरित कर निम्न सम्पर्क सूत्र पर भिजवा सकते हैं। साधक को 28 मार्च 2015 को सायंकाल 5 बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। ध्यान शिविर स्थल- श्री राजेन्द्र सूरि जैन कीर्ति मन्दिर तीर्थ, सेवर रोड़, भरतपुर (राज.) सम्पर्क सूत्र- श्रीमती शांता जी मोदी, सी-26, देवनगर, टोंक रोड़, जयपुर-302001 (राज.), फोन: 0141-2710077, मोबाइल- 093144-70972, (2) सुश्री नेहा जी चोरड़िया-096025-65131, (3) श्री विवेककुमार जैन (राहुल)-094134-15001, (4) श्री धर्मेन्द्र जैन-अध्यक्ष-094140-23534, (5) श्री प्रकाशचन्द जैन-मंत्री-094143-15407, श्री अशोक जैन-कोषाध्यक्ष-094143-76868, श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानक वासी जैन श्रावक संघ, श्री जैन महावीर भवन, बासनगेट, भरतपुर-321001 (राज.)

## ‘श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र’ पुस्तक पर खुली परीक्षा

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर द्वारा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 77 वें जन्मदिवस चैत्र कृष्णा 8 शनिवार, 14 मार्च, 2015 के उपलक्ष्य में धार्मिक ज्ञान में अभिवृद्धि हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित पुस्तक ‘श्रावक सामायिक-प्रतिक्रमण सूत्र’ पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में सभी जैन-अजैन भाई-बहन भाग ले सकते हैं।

प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार राशि 21000/- (एक), द्वितीय पुरस्कार राशि 15000/- (एक), तृतीय पुरस्कार राशि 11000/- (एक), चतुर्थ प्रोत्साहन पुरस्कार

1500/- (दस), सांत्वना पुरस्कार राशि 1000/- (दस) रखी गई है।

प्रश्न पुस्तिका वितरण तिथि 14 मार्च 2015 से 30 अप्रैल 2015 तक तथा उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि 30 जून 2015 रखी गयी है। प्रश्न पुस्तिका मूल्य 20/- व पुस्तक मूल्य 10/- निर्धारित है। जिसे डाक व्यय राशि सहित अग्रिम भिजवाकर निम्नलिखित स्थानों से प्राप्त किया जा सकता है-

**प्रश्न पुस्तिका व पुस्तक प्राप्ति हेतु स्थान-** (1) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन-0141-2575997, 2570753, (2) श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन- 0291-2624891, (3) श्रीमती रजनीजी जैन, द्वारा-आर.पी.साड़ीज, पुराना खण्डार रोड़, सवाईमाधोपुर-322021 (राज.), मो. 09460230950 (4) Smt. Rupal R. Kankariya, 79, Audiappa Naicken Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.), Ph. 044-42728067, Mob. 09789885148 (5) श्री पारसमल चौरडिया, व्ही पारस भैय्या, पुराने कैलाश टाकिज के सामने, उज्जैन-456000 (मध्यप्रदेश) मो. 09827046567, (6) श्रीमती मंजूजी जैन, एटलांटा हाइट्स, के.जी.मार्ग, सिद्धि विनायक मन्दिर के पीछे, प्रभादेवी, मुम्बई-400025 (महा.), मोबाइल-09820388903, (7) श्री पद्मचन्दजी कोठारी, 37, न्यू क्लॉथ मार्केट, अहमदाबाद-380002 (गुजरात), फोन-079-22160675, मो. 09429303088, (8) Sh. Manoj Ji Sancheti, Shri Mahaveer Swadhyay Vidyapeeth, Behind Venkatesh Mandir, Ganpati Nagar, Jalgaon (Mh.), Mob. 09422591423, (9) श्रीमती किरण जी जैन, जैन कॉलोनी, प्लाट नं. 32, कोटला, गणेशपुर, भैरवी रोड़, होशियारपुर-146001 (पंजाब), फोन- 01882-238314, मो. 09463118600

**उत्तर पुस्तिका जमा कराये जाने हेतु स्थान-** सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 0141-275997, 2570753

**सम्पर्क सूत्र-** श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर, कार्यालय- रिद्धराज रेजीडेन्सी, फ्लैट नं. 501, प्लाट नं. 131-132, विजय पथ, तिलक नगर, जयपुर-302004 (राज.), राजदुलारी सेठ-09929926042, मीना गोलेछा-09314466039, कमल लोढ़ा-09829019396

## ‘संस्कारम्’ पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न बहू-बालिका मण्डल की प्रस्तुति ‘संस्कारम्’ (संकलन-श्रीमती नीलू डागा-बीकानेर) पुस्तक पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता प्रारम्भ होने जा रही है।

प्रश्न पुस्तिका वितरण प्रारम्भ की तिथि 15 अप्रैल 2015, उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अंतिम तिथि 15 अगस्त, 2015 एवं परिणाम की घोषणा तिथि कार्तिक शुक्ला षष्ठी 17 नवम्बर, 2015 है। प्रतियोगिता में पुरस्कार निम्नप्रकार देय हैं- प्रथम पुरस्कार- 21000/- रुपये, द्वितीय पुरस्कार- 11000/-रुपये, तृतीय पुरस्कार-5100/-रुपये, अगले 10 प्रतियोगियों को 3100/- रुपये, अगले 10 प्रतियोगियों को 2100/- रुपये, अगले 20 प्रतियोगियों को- 1100/- रुपये, अगले 50 प्रतियोगियों को 500/-रुपये तथा सभी भाग लेने वाले प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा। 'संस्कारम्' पुस्तिका- 100 रुपये में तथा संस्कारम् आराधना (प्रश्न पुस्तिका) 30 रुपये में उपलब्ध है। सम्पर्क सूत्र- श्रीमती इन्दिरा बोहरा- 09176806000, श्रीमती नीलू डागा-09314879797, सुश्री विधि कोठारी-09461916309, पुस्तिका प्राप्ति-स्थान- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन: 0291-2636763

### आवश्यकता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के अन्तर्गत संचालित संस्कार पाठशालाओं के समुचित संचालन, निरीक्षण आदि कार्यों के लिए योग्य एवं अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति अपनी धार्मिक योग्यता, व्यावहारिक योग्यता तथा अनुभव प्रमाण-पत्रों के साथ निम्न सूत्र पर सम्पर्क करें- राजेश कर्नावट-सह-संयोजक-0291-2622623, 094141-28925

### 'बनें आगम अध्येता' (4)

### नन्दीसूत्र प्रतियोगिता में भाग लें

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आगम अध्येता श्रावक-श्राविकाएँ तैयार करने हेतु प्रारम्भ 'बनें आगम अध्येता' अनुष्ठान के अन्तर्गत दशवैकालिकसूत्र, उपासकदशांगसूत्र, अन्तगडदसा सूत्र की परीक्षाएँ आयोजित हो चुकी हैं। इसमें श्रावक-श्राविका वर्ग भाग ले सकता है। स्वाध्याय हेतु साधु-साध्वी भी भाग ले सकते हैं। अब चतुर्थ आगम परीक्षा के रूप में पाँच ज्ञान के परिचायक आगम 'नन्दीसूत्र' के स्वाध्याय को लिया गया है। इस हेतु आवश्यक जानकारी इस प्रकार है:-

1. नन्दीसूत्र की समापक परीक्षा 12 अप्रैल, 2015 को स्थानीय स्थानकों में परीक्षकों की उपस्थिति में होगी जो कि 90 अंकों की होगी तथा इस परीक्षा में प्रतियोगी नन्दीसूत्र की पुस्तक भी साथ में रख सकते हैं।

2. मूल्यांकन हेतु उत्तरपुस्तिका को जाँचकर उसमें प्राप्त अंकों को 10 प्रतिशत करके उन अंकों को समापक परीक्षा में प्राप्त अंकों में जोड़कर परीक्षार्थी के कुल प्राप्तांक माने जायेंगे। कुल प्राप्तांक के आधार पर प्रथम तीन श्रावक-श्राविकाओं को नन्दीसूत्र आगम अध्येता की उपाधि से अलंकृत करने के साथ प्रथम विजेता को रुपये 31000/-, द्वितीय को 21000/- तथा तृतीय को रुपये 11000/- से पुरस्कृत किया जाएगा। परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया जायेगा।

आप सभी श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि आगमज्ञान अभिवर्धन की इस परीक्षा में भाग लें। मूल्यांकन प्रश्न-पत्र हल करके भिजवाने वाले ही परीक्षार्थी समापक परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। नन्दीसूत्र पुस्तक व मूल्यांकन प्रश्न-पत्र हेतु सम्पर्क सूत्र-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन- 0141-2575997, 2571163, फैक्स-0141-2570753, श्रीमती बीना मेहता, मंत्री-097727-93625, श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन-096943-79209

## मोटोपन से बच्चों में बढ़ती परेशानियाँ अमेरिका के

### एक राज्य ने बनाया कानून

आजकल सभी माताएँ अपने बच्चों को गोलमटोल, मोटा, हट्टा-कट्टा बनाने में लगी हुई हैं। वे हर समय उन्हें कुछ न कुछ जंक-फूड, फास्ट-फूड खिलाने में ही लगी रहती हैं और हमेशा कहती रहती हैं कि मेरा बच्चा तो कुछ खाता ही नहीं है। वे यह नहीं जानती कि अधिक खाने से बच्चों में वसा अधिक बढ़ जाती है, जिसके कारण वे बहुत थकान महसूस करते हैं। मोटापे के बढ़ने से आलसी और निकम्मे बन जाते हैं, उन्हें श्रम करना अच्छा नहीं लगता, बाहर खेलने की बजाय वे टी.वी. देखना, वीडियो गेम खेलना पसन्द करते हैं। अपने दोस्तों द्वारा मज़ाक उड़ाये जाने पर वे हीनता का अनुभव करते हैं। इन सब परेशानियों को देखते हुए बच्चों में बढ़ रहे मोटापे पर लगाम लगाने के लिए अमेरिका के प्यूटोरिको स्टेट ने एक नया कानून बनाया है। इस कानून के तहत बच्चे अधिक मोटे पाए गए तो उनके घरवालों से जुर्माना वसूला जाएगा। बच्चों में मोटापा पाए जाने पर 500 डॉलर (लगभग 31000/- रुपये) का जुर्माना देना होगा।

## संक्षिप्त-समाचार

**हिण्डौन-** अखण्ड बाल-ब्रह्मचारी सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 105 वां जन्म-दिवस पौष शुक्ला 14, 04 जनवरी 2015 को श्री

जैन रत्न स्वाध्याय भवन में सभी श्रावक-श्राविका मण्डल, युवक मण्डल, बालक-बालिका मण्डल ने पाँच-पाँच सामायिक-स्वाध्याय के साथ, सामूहिक एकाशन, उपवास आदि त्याग-तपस्या के साथ मनाया। श्री महावीर प्रसादजी त्यागी ने सभी को धर्म संदेश व उद्बोधन दिया। इस अवसर पर सामूहिक 1500 सामायिक एवं लगभग 175 एकाशन, उपवास आदि अन्य तपस्याएँ हुईं।-*राजेश कुमार जैन*

**गंगापुर शहर-** 25 जनवरी 2015 को आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती मण्डल के पावन सान्निध्य में एक दिवसीय 'प्रतिक्रमण चेतना शिविर' का आयोजन किया गया। शिविर में खेरली, हिण्डौन, भरतपुर, दिल्ली, महुआ, गंगापुरसिटी आदि स्थानों से 42 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर प्रतिक्रमण सम्बन्धी अशुद्धियों के निराकरण का अभ्यास किया।-*कुशलचन्द गोटेवाला, संयोजक-स्वाध्याय संघ, जोधपुर*

**जोधपुर-** अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेने वाली श्राविकाओं की वेशभूषा एक समान रहे, एतदर्थ लाल चून्दड़ी की साड़ी को ड्रेस कोड के रूप में निर्धारित किया गया है। श्राविकाएँ आवश्यक रूप से बैठकों, अधिवेशनों, दीक्षा-महोत्सव आदि सभी कार्यक्रमों में यह साड़ी पहनकर भाग लेने का लक्ष्य रखें, जिससे कार्यक्रमों में एकरूपता और अनुशासन रहे। साड़ी मंगवाने हेतु महासचिव से दूरभाष-097727-93625 पर शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क किया जा सकता है। साड़ी का मूल्य रुपये 450/- निर्धारित है।-*बीना मेहता, महासचिव*

**भोपालगढ़-** श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर का 15 जनवरी, 2015 को 87 वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रभातकुमारजी भण्डारी थे। अध्यक्षता श्री महावीरचन्द्रजी ओस्तवाल ने की। विद्यालय के अध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्द्रजी ओस्तवाल एवं अनेक अतिथियों के सान्निध्य में यह दिवस प्रभात फेरी, झण्डारोहण, परेड, सांस्कृतिक कार्यक्रम, उद्बोधन आदि के साथ उत्साहपूर्वक मनाया गया।

**जोधपुर-** श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी, जोधपुर द्वारा स्व. डॉ. बिमलाजी भण्डारी के प्रथम स्मृति दिवस पर निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर 17 फरवरी, 2015 को आयोजित किया गया। शिविर में अनुभवी एवं ख्याति-प्राप्त सर्जन डॉ. राम गोयल, एम.एस. (कमलानगर अस्पताल) द्वारा हर्निया-4, पाईल्स-5 एवं हाईड्रासिल-2 कुल 11 ऑपरेशन कर मरीजों को निःशुल्क दवाइयाँ दी गईं।

डॉ. सुरेन्द्रमल जी लोढ़ा एवं न्यायाधिपति श्री राजेन्द्रमल जी लोढ़ा इस शिविर में सपरिवार पधारे तथा न्यायाधिपति स्व. श्री श्रीकृष्णमलजी-स्व. श्रीमती उगमकंवरजी

लोढ़ा की पावन स्मृति में 1100000/- की सहयोग राशि प्रदान की। इनकी बहिन श्रीमती उमाजी धर्मपत्नी श्री सूरजराजजी मेहता-जयपुर ने 111000/- की राशि प्रदान करने की घोषणा की। न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा वर्द्धमान अस्पताल की स्थापना में प्रमुख संस्थापक रहे तथा दीर्घकाल तक वर्द्धमान अस्पताल के अध्यक्ष पद का दायित्व निर्वहन किया।

**जोधपुर-** श्री सुधर्म विद्यापीठ, जोधपुर में तीन वर्षीय पाठ्यक्रम हेतु जुलाई 2015 से प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेशार्थी को 6000/-रुपये की सहयोग राशि प्रतिमाह प्रदान की जाएगी तथा व्यावहारिक पढ़ाई का खर्च भी विद्यापीठ द्वारा वहन किया जाएगा। पाठ्यक्रम पूर्णता के पश्चात् नौकरी की भी सुनिश्चितता है। 15 जून एवं 30 जून 2015 को इच्छुक विद्यार्थियों हेतु प्रवेश शिविर आयोजित किया जाएगा। **सम्पर्क सूत्र-** श्री सुधर्म विद्यापीठ, चाँदी हॉल, जोधपुर, फोन नं.0291-2637838, मो. - 094607-74174 (पंकज जैन)

**पीपाड़ शहर-** श्री शुभ हीरा संस्थान, पीपाड़ एवं कतिपय संस्थाओं के तत्त्वावधान में निःशक्तजनों (विकलांगों) के हितार्थ एक निःशुल्क शिविर आयोजित किया गया, जिसमें निःशक्तजनों की जाँच कर जरूरतमन्दों को 24 ट्राइसाइकिल, 10 व्हीलचेयर, 30 जनों को वैसाखियाँ और 4 को श्रवणयंत्र निःशुल्क वितरित किए गए। 24 व्यक्तियों को कृत्रिम हाथ-पैर लगाए गए।

**जालोर-** कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर से सेवानिवृत्त जालोर निवासी प्रो. (डॉ.) मोहनलाल जी बोहरा (जैन) अपना आवासीय भवन एवं पॉश कॉलोनी स्थित भूखण्ड बेचकर अब किराये के मकान में रह रहे हैं। आप सेवानिवृत्ति से प्राप्त राशि से अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शांतिदेवीजी की स्मृति में आधुनिक सभी सुविधाओं से युक्त एक करोड़ रुपये की लागत से 30 शय्याओं का सुसज्जित नेत्र चिकित्सालय का निर्माण करवा रहे हैं, जिसमें 75 प्रतिशत मरीजों का निःशुल्क तथा सक्षम व्यक्तियों से रियायती शुल्क लेकर उपचार होगा।

## बधाई

**डॉ. धींग, डॉ. गोलेछा व लोढ़ा 'जैन सेवारत्न' से सम्मानित**



**मुम्बई-** साहित्यकार डॉ. दिलीपजी धींग, चिकित्सा-वैज्ञानिक डॉ. महावीरजी गोलेछा एवं तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य यू. सुधीरजी लोढ़ा को श्री जैन सेवा संघ, मुम्बई द्वारा 15 फरवरी को 'जैन



डॉ. महावीर गोलेछा

सेवारत्न' अलंकरण से सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री मनीष भण्डारी, न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय एवं विशिष्ट अतिथि श्री सुशील सोलंकी, कमिश्नर, सर्विस टैक्स, मुम्बई ने ये सम्मान प्रदान किए। डॉ. धींग, निदेशक- अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत शोध एवं अध्ययन केन्द्र ने अहिंसा के क्षेत्र में अपनी लेखनी के माध्यम से हिंसा के विरोध में जागृति के कई यत्न किए हैं। भारत सरकार के इंस्पायरफेलो एवं स्वास्थ्य-नीति विशेषज्ञ डॉ. गोलेच्छा द्वारा चिकित्सा-अनुसन्धान, स्वास्थ्य-नीति निर्धारण एवं सामाजिक सेवा में उत्कृष्ट योगदान दिया गया है।

**चित्तौड़गढ़-** श्री दिलीपजी गाँधी को राजस्थान युवा छात्र संस्थान, जयपुर द्वारा 22 फरवरी 2015 को संगीत और साहित्य के क्षेत्र में विवेकानन्द गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। आपको यह पुरस्कार बांसुरी वादन के साथ नैतिकता, परोपकार एवं अहिंसा के क्षेत्र में कविता-लेखन के लिए दिया गया।



**धनारीकलाँ-** श्रीमती गुलाबदेवीजी धर्मपत्नी श्री जम्बूकुमारजी जैन ग्राम पंचायत धनारीकलाँ (पंचायत समिति, बावड़ी) के सरपंच पद पर विजयी हुई हैं। आप श्रीमती सुवादेवी चम्पालाल जी वैद मुथा की पुत्रवधू हैं। आपका पूरा परिवार आचार्यश्री, उपाध्यायश्री व रत्नसंघ के प्रति समर्पित है।

**चेन्नई-** तमिलविद् एस. कृष्णचन्दजी चोरड़िया, महासचिव, जैनविद्या शोध प्रतिष्ठान को अमेरिका के तमिल अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय की ओर से 'डॉक्टर ऑफ लैटर्स' की मानद उपाधि 22 फरवरी 2015 को प्रदान की गई। मदुरै में आयोजित समारोह में विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. एस. सेल्विनकुमार तथा अतिथियों ने उन्हें उपाधि देकर सम्मानित किया।



चन्दाप्रभु शाकाहार ग्राम के संस्थापक चोरड़िया को यह सम्मान अहिंसा और शाकाहार के माध्यम से मानवता की उल्लेखनीय सेवाओं के लिए प्रदान किया गया।

**जयपुर-** श्री अंकित सुपुत्र डॉ. अनिलजी मेहता, वरिष्ठ आचार्य, व्यावसायिक प्रशासन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने सी.ए. परीक्षा में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान तथा राष्ट्रीय स्तर पर आठवां स्थान प्राप्त किया है।



अंकित मेहता



कपिल पटवा



श्रियाश जैन



नितिन जैन



संदीप छाजेड़



अंकित हुण्डीवाल

## सी.ए. परीक्षा में अन्य उत्तीर्ण

1. **जोधपुर-** श्री कपिल पटवा सुपुत्र श्रीमती विजयलक्ष्मीजी-पूनमचन्द्र जी पटवा एवं सुपौत्र स्व. श्रीमती उगमजी-अजमनाथजी पटवा।
2. **जोधपुर-** श्रेयांश जैन सुपुत्र श्रीमती स्नेहलताजी-रमेश जी जैन (रेड) एवं सुपौत्र श्रीमती किरणजी-सिरेहमलजी जैन
3. **जयपुर-** श्री नितिन जैन सुपुत्र श्रीमती वीणाजी-नरेन्द्रजी जैन एवं सुपौत्र श्री उम्मेदमलजी जैन।
4. **समदड़ी-** श्री सन्दीप छाजेड़ सुपुत्र श्रीमती कान्तादेवीजी-लक्ष्मीचन्द्रजी छाजेड़।
5. **जलगाँव-** श्री अंकित कांकरिया सुपुत्र श्रीमती अनिताजी-अशोकजी कांकरिया (हुण्डीवाल) भोपालगढ़ निवासी।

## श्रद्धाञ्जलि

**निमाज (पाली)-** अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी वीरदादाजी सुश्रावक श्री कनकमलजी



कोठारी का 23 फरवरी 2015 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। संघनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, विविध गुणों से सम्पन्न सुश्रावकजी का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सदगुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति, आहार-विहार एवं श्रमणोचित औषधोपचार में भी सदैव तत्पर रहते थे। आपका परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा एवं जिनशासन-सेवा में सदा अग्रणी रहा है। आदरणीय श्रावकरत्न ने अपने जीवन को सामायिक-स्वाध्याय, व्रत-प्रत्याख्यान व संघ-सेवा से विभूषित किया। शासन सेवा एवं गुरुभक्ति में उन्होंने सर्वोच्च समर्पण कर अनूठा आदर्श उपस्थित करते हुए अपने पौत्र जितेन्द्रजी की भागवती दीक्षा में अपना महनीय सहकार दिया। परम पूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. व परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की सेवा में आपके सुपौत्र श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. के रूप में अपने जीवन को भावित करते हुए रत्नसंघ व जिनशासन की शोभा बढ़ा रहे हैं।

**मण्डावर-महुआ-** स्वाध्यायी सुश्रावक श्री हरिप्रसादजी जैन का संलेखना संथारे के साथ 17 फरवरी 2015 को 84 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की निश्रामें वर्षों तक सन्तमण्डल की सेवा में समर्पित रहे। उनकी संघनिष्ठा, गुरुभक्ति एवं संघ-सेवा प्रशंसनीय रही। आपने कोटा चातुर्मास में पूज्य

आचार्यप्रवर एवं सन्तमण्डल के दर्शनों एवं सेवाभक्ति का लाभ लिया। आप पूज्य आचार्यप्रवर के पल्लीवाल क्षेत्र में पदार्पण से पुलकित थे तथा मण्डावर में फाल्गुनी पूर्णिमा के लिए प्रयासरत थे। आप स्वाध्यायशील श्रावक थे। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी आव सम्पूर्ण जीवन संत की तरह जीते रहे। नित्य सामायिक की साधना के साथ आपश्री ने कई व्रत अंगीकार किए थे। आप व्यवहार कुशल सेवाभावी श्रावक थे। आपका जीवन सहज एवं सादगी से परिपूर्ण था। आपके जीवन पर आचार्य हस्तीमलजी, आचार्य हीराचन्द्रजी, उपाध्यायप्रवर, साध्वीप्रमुखाजी का विशेष प्रभाव रहा। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

**जोधपुर-** संघ-सेवी कर्तव्यनिष्ठ सुश्रावक श्री पूनमचन्द्रजी चौपड़ा का 20 फरवरी 2015 को देहावसान हो गया। ख्यातनाम विधिवेत्ता होने के साथ उन्होंने ज्योतिष पंचांग एवं आयुर्वेद का गहन अध्ययन किया था। वे चिन्तनशील श्रावक थे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहे। आप अनन्य गुरुभक्त संघसेवी सुश्रावक माननीय पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा के अग्रज भ्राता थे। उनकी आचार्य श्री हस्ती के प्रति अगाध आस्था थी।

**फूलियाकलाँ-** धर्मानुरागी उदारहृदय सुश्राविका श्रीमती लाडदेवीजी लोढ़ा धर्म सहायिका श्री तेजमलजी लोढ़ा का 81 वर्ष की वय में 12 फरवरी 2015 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन उदारता, सरलता, विनम्रता, मधुरता, सेवा-भावना आदि गुणों से युक्त था। संघ-समाज की सामाजिक गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रही थीं। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं।



**जयपुर-** शिक्षाविद् सुश्रावक श्रीमान् प्रकाशचन्द्रजी सुराणा सुपुत्र स्व. श्री राजमलजी सुराणा का 4 फरवरी, 2015 को स्वर्गवास हो गया। आप सहिष्णुता व शिष्टाचार के धनी थे। आपमें नैतिकता के संस्कार कूटकूटकर भरे थे। शास्त्रीय संगीत के आप अच्छे ज्ञाता होने के साथ सुज्ञ श्रोता भी थे। आपके द्वार से कोई भी ज्ञात, अज्ञात याचक खाली हाथ वापस नहीं लौटता था। अपनी संस्कृति के पोषक के साथ संत व सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे।

**जयपुर-** श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शकुन्तलादेवीजी बोथरा धर्मसहायिका श्री हीराचन्द्रजी बोथरा का स्वर्गवास 26 जनवरी 2015 को हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आपके जीवन पर आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर एवं साध्वी प्रमुखा जी का विशेष प्रभाव रहा।

**पचाला (ढोक)**- दृढधर्मी सुश्रावक श्री उच्छबचंदजी जैन सुपुत्र स्व. श्री सुंदरलालजी जैन



का 82 वर्ष की आयु में 30 जनवरी 2015 को स्वर्गारोहण हो गया। आप अंतिम समय तक नित्य सामायिक-स्वाध्याय की साधना एवं रात्रि-आहार त्याग के द्वारा अपने जीवन में धार्मिक संस्कारों को पुष्ट करते रहे। आप रत्नसंघ के समर्पित श्रावक थे। आपका जीवन सादगी सरलता से

परिपूर्ण था।

**धमतरी (छत्तीसगढ़)**- सुश्राविका भीखीबाईजी कोटड़िया धर्मपत्नी श्री मदनलाल जी



कोटड़िया का 21 दिसम्बर 2014 को 55 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपने अठाई, एकाशन, उपवास, बेला, तेला की तपस्याएँ पूर्ण कीं। आपके अनेक प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान थे। आप संत-सतियों की सेवा, प्रार्थना, प्रवचन का प्रतिदिन लाभ उठाती थीं।

**सैलपुर (चेन्नई)**- तप साधिका, सुश्राविका श्रीमती उमरावबाई जी गांधी धर्मपत्नी स्व.

श्री दिलीप जी गाँधी का 45 वर्ष की अल्प आयु में 3 जनवरी 2015 को समाधिपूर्वक मरण हो गया। आपने पूरा जीवन जप-तप-त्याग के साथ संयमपूर्वक व्यतीत किया। आप संत-सतियों के दर्शन-सेवा-प्रवचन-विहार आदि कार्यों में सदैव तत्पर रहती थीं।

**रतलाम**- सुश्राविका श्रीमती शीलाजी धर्मपत्नी स्व. श्री विजयजी चौपड़ा का 59 वर्ष की



आयु में 9 फरवरी 2015 को देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. के प्रति आप की विशेष श्रद्धा थी। आपने एक सामाजिक सेवाभावी महिला के रूप में महिला उद्योग मंदिर में अपनी सेवाएँ वर्षों तक दीं। आप

श्री साधुमार्गी जैन संघ के पूर्व अध्यक्ष स्व. श्री पी.सी. चौपड़ा की पुत्रवधू थीं।

**रायपुर (झालावाड़)**- श्री प्रेमचन्दजी धूपिया का 69 वर्ष की उम्र में 1 फरवरी 2015 को



संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया। आप प्रतिदिन स्थानक में प्रार्थना, सामायिक, प्रतिक्रमण एवं स्वाध्याय करते थे। आपने 12 व्रत और शीलव्रत के नियम लिए। आप शास्त्रों के जानकार एवं निर्भीक श्रमणोपासक थे। आप सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य एवं मालवा प्रान्त के अध्यक्ष रहे। आप कई सामाजिक संस्थाओं से

जुड़े हुए थे।



**चेन्नई**- श्रीमती राजकंवरी जी चौरड़िया धर्मपत्नी स्व. श्री जीवणमलजी चौरड़िया (नागौर निवासी) का 17 जनवरी 2015 को 90 वर्ष की आयु में हृदयगति रुकने से देहावसान हो गया। आपकी सामायिक-स्वाध्याय में

विशेष रुचि थी।

**जोधपुर-** सुश्राविका श्रीमती अकलकंवरजी धर्मपत्नी श्री शेषमलजी संचेती का स्वर्गगमन



01 फरवरी, 2015 को हो गया। आपका धर्ममय जीवन सहिष्णुता, उदारता जैसे सदगुणों से ओतप्रोत था। आप नित्य व्रत-नियम एवं सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में परिवार के सभी सदस्यों सहित सदैव तत्पर रहती थीं।

**अलीगढ़ (टोंक)-** सुश्रावक श्री रामबिलास जी जैन, अध्यापक पाटोली वाले का 11 फरवरी 2015 को देहावसान हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आप एक अच्छे कवि एवं गायक थे तथा संत-सतियों के प्रति श्रद्धानिष्ठ थे।

**नागपुर-** श्रीमती हुलासीदेवी जी धर्मपत्नी श्री कांतिलाल जी कटारिया का 77 वर्ष की उम्र



में 21 फरवरी, 2015 को निधन हो गया। वे धर्मपरायण तपस्वी श्राविका थीं एवं आचार्य श्री हस्तीमल जी, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की अनन्य भक्त थीं। उन्होंने अपने जीवन काल में मासखमण, आठ बेला, तेला सहित अनेक तपस्याएँ कीं।

**बीकानेर-** सुश्रावक श्री सुरेशमल जी सुराणा सुपुत्र स्व. श्री घीसूमलजी सुराणा का 66 वर्ष



की वय में 2 फरवरी, 2015 को स्वर्गवास हो गया। उनकी गुरुभगवन्तों के प्रति असीम आस्था थी। प्रतिदिन सामायिक-साधना करने के साथ वे आजीवन शीलव्रती थे। संत-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

## तीन आँसू

संकलनकर्ता : श्री अरविन्द जैन

जीवन में तीन तरह के आँसू आगे बढ़ाते हैं-

1. उपकारी को देखकर कृतज्ञता के आँसू।
2. दूसरों को दुःखी देखकर करुणा के आँसू।
3. अपने पाप को देखकर पश्चात्ताप के आँसू।

-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, बजाज नगर, जयपुर (राज.)

## ❁ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❁

### 1000/-जिनवाणी पत्रिका की बीसवर्षीय सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15393 से 15398 तक 6 सदस्य बने।

### 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

- 21000/- श्रीमती कलाजी सिंघवी, चेन्नई द्वारा सप्रेम भेंट।
- 8100/- श्रीमती मंजूजी कोठारी जयपुर, स्व. श्री पदमचंदजी कोठारी की आठवीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।
- 5100/- श्री जौहरीलाल जी डोसी, जोधपुर, अपनी सुपौत्री सौ. कां. प्रिया सुपुत्री श्रीमती मंजू - शैलेश जी डोसी का शुभ विवाह चि. मनन सुपुत्र श्रीमती राजबालाजी-माणकजी सांड के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।
- 5100/- श्रीमती चंचलकंवरजी, श्री प्रदीपजी, श्री संजयजी भण्डारी, जयपुर, डॉ. मोहनराजजी भण्डारी की 11 वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।
- 5000/- श्री सागरमलजी, संपतमलजी, नवरतनमलजी, पवनकुमारजी एवं कमलचंदजी चोरड़िया (नागौर निवासी) चेन्नई, पूज्या माताश्री राजकंवरीजी धर्मसहायिका स्व. श्री जीवनमल जी चोरड़िया (नागौर निवासी) का 17 जनवरी 2015 को देवलोकगमन होने पर पुण्य स्मृति में।
- 2500/- श्री शम्भूराज जी, विक्रान्त जी, मनीष जी कर्नावट, मुम्बई, नवनिर्मित भवन में गृहप्रवेश के प्रसंग पर।
- 2100/- श्री बिरदीचंदजी, संजयकुमारजी, अनिलकुमारजी, सुनिलकुमारजी गाँधी, चेन्नई, खुशबू संग विशाल के विवाहोपलक्ष्य में।
- 2100/- श्री नरेशजी धूपिया, रायपुर जिला झालावाड़, श्री प्रेमचंदजी जैन का 1 फरवरी 2015 को संथारा पूर्वक देवलोकगमन हो जाने पर पुण्य स्मृति में।
- 2100/- श्री गुलाबचंद जी संजय कुमार जी लोढ़ा, अजमेर, श्री जतन कुमार जी लोढ़ा की पुण्य स्मृति में।
- 2100/- श्री इंद्रचंदजी, राजेन्द्रजी, सुरेशजी, संतोषजी सिंघवी, जोधपुर, अपनी पूजनीया माताजी श्रीमती मानकंवर धर्मपत्नी स्व. श्री किस्तूरचंद जी सिंघवी का 7 दिसम्बर 2014 को स्वर्गवास होने पर पावन स्मृति में।
- 2100/- श्री रूपराजजी जीरावला सुपुत्र स्व. श्री चम्पालालजी जीरावला, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री हितेशजी जीरावला से मिलने मलेशिया सपरिवार जाने के प्रसंग पर।
- 2001/- डॉ. तृषाजी जैन कोटा, स्व. श्रीमती पदमबाईजी सिंघवी, बकानी, जिला झालावाड़ की पुण्यस्मृति में।
- 2000/- श्रीमती उमरावबाई जी लालचंदजी कोठारी, महीपालचंदजी दिलीपजी भण्डारी, चेन्नई।

- 2000/- श्रीमती लाडकंवरजी मांगीलालजी कोठारी, चेन्नई।
- 1111/- श्री जगदीशजी ऋषभजी जैन (जरखोदा वाले), कोटा, पूज्य पिताश्री बंशीलालजी का 16 जनवरी 2015 को देवलोक गमन होने पर पुण्य स्मृति में।
- 1100/- श्रीमती अनिताजी-श्री अशोकजी हुण्डीवाल, जलगाँव, श्री अंकित हुण्डीवाल के सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री सुभाषजी हुण्डीवाल, जोधपुर-जलगाँव, श्रीमती अनिताजी-अशोकजी हुण्डीवाल, जलगाँव के विवाह की 25 वीं वर्षगांठ (31.01.2015) के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्रीमती कमलाबाई जी बंब, बैंगलुरु, मुमुक्षु ओमप्रकाशजी, रविजी की भागवती दीक्षा सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्रीमती बसंताबाईजी नाहटा, बंगारपेट, मुमुक्षु ओमप्रकाशजी, रविजी की भागवती दीक्षा सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्रीमती प्रेमकंवरजी मिलापचंदजी बुरड़, ब्यावर, अपने सुपौत्र सुमित सुपुत्र श्रीमती सुमन एवं श्री सुनीलजी बुरड़ संग रितिका के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री हरकचंदजी जैन (बिलोता वाले) महारानी फार्म जयपुर, सुपौत्री सौ. गुड़िया(नुर) सुपुत्री श्री दिनेश कुमारजी जैन का शुभ विवाह चि. अरविन्द सुपुत्र श्री लड्डूलालजी जैन, चौथ का बरवाड़ा के साथ सानन्द होने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्रीमती पानादेवीजी जैन, ग्राम-पचाला, तहसील- अलीगढ-रामपुरा, सुश्रावक श्री उच्छबचंदजी जैन सुपुत्र स्व. श्री सुन्दरलाल जी जैन पचाला का 30 जनवरी 2015 को देवलोकगमन होने पर।
- 1100/- श्री हेमराजजी, राजेन्द्रप्रसादजी, इन्द्रप्रसादजी जैन सवाईमाधोपुर, चि. दिलीप सुपुत्र श्री हेमराजजी जैन का शुभ विवाह सौ. मनीषा सुपुत्री श्री घनश्यामजी जैन के साथ सानन्द संपन्न होने पर।
- 1100/- श्री हरकचंदजी रमेशचंदजी जैन (मोहम्मदपुरा वाले) सवाईमाधोपुर, श्रीमती बसंतीदेवी जी जैन का 1 जनवरी 2015 को देवलोकगमन होने पर।
- 1100/- श्री देवकरणजी, राजेशकुमारजी जैन (अणगोरा वाले) सुमेरगंजमंडी, श्रीमती बसंती देवीजी जैन का 1 जनवरी 2015 को देवलोकगमन होने पर।
- 1100/- श्री छगनचंदजी प्रदीप कुमार जी जैन, ग्राम-पोस्ट-खोह (जिला- अलवर), चि. प्रशांत संग रुचिका का शुभ विवाह 30 जनवरी 2015 को सानन्द संपन्न होने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री महावीरचंदजी कटारिया, कर्नाटक, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री जबरचंदजी कटारिया (सुपुत्र स्व. श्री लालचंदजी कटारिया) का स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।
- 1100/- श्री महावीरप्रसादजी - मंजूजी जैन, मोहितजी जैन, पीपाड सिटी, 29 जनवरी, 2015

को आचार्यप्रवर श्री हीराचंद्र जी म.सा. के मुखारविन्द से मुमुक्षु ओमप्रकाश जी जैन (ओशो) की जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने के प्रसंग पर।

1100/- श्रीमती प्रसन्नकंवरजी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. डॉ. मदनमलजी भण्डारी, श्री मुकेशजी, श्री विनोदजी भण्डारी, जोधपुर, डॉ. मदनमलजी भण्डारी की पाँचवीं पुण्यतिथि पर स्मरणांजलि स्वरूप।

1100/- श्री चम्पालालजी, शांतिलालजी, सुरेन्द्रकुमारजी, नरेन्द्रकुमारजी, प्रवीणजी वैद मुथा, धनारीकलां, श्रीमती गुलाबदेवी धर्मपत्नी श्री जम्बुकुमारजी वैदमुथा के सरपंच बनने की खुशी में।

### अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

#### संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

- 100000/- पारसमल सुशीला बोहरा चेरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।  
 100000/- श्री सम्पतराजजी चौधरी, नई दिल्ली, संघ सहायतार्थ।  
 5100/- श्री शम्भूराजजी, विक्रान्तजी, मनीषजी कर्णावट, खारगाँव, मुम्बई, संघ सहायतार्थ।  
 3000/- श्री चन्द्रशेखरजी मेहता, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।  
 2100/- श्री प्यारचन्दजी रांका, सैलाना (मध्यप्रदेश), संघ सहायतार्थ।  
 2100/- श्री संजयजी गाँधी, जोधपुर, जीवदया हेतु।  
 1100/- श्रीमती चन्द्रकलाजी जैन, जोधपुर, जीवदया हेतु।  
 1100/- मनोहरराज कमला कांकरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई, जीवदया हेतु।  
 1100/- श्री महेन्द्रसिंहजी ढड्डा, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

#### श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

- 3500/- जैन सभा, बलरामपुर, पर्युषण सहयोग हेतु।  
 2500/- श्री शम्भूराजजी, विक्रान्तजी, मनीषजी कर्णावट, मुम्बई, अपने नवनिर्मित भवन में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में।  
 1500/- श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती केसर जी गांग के जन्म-दिवस के अवसर पर।  
 1100/- श्री छगनचंदजी प्रदीप कुमार जी जैन, ग्राम-पोस्ट-खोह, जिला- अलवर, चि. प्रशांत संग रुचिका का शुभ विवाह 30 जनवरी 2015 को सानन्द संपन्न होने के उपलक्ष्य में।  
 1100/- श्री ज्ञानराज जी अब्बानी सेवा ट्रस्ट, जोधपुर, सहयोगार्थ।  
 1100/- श्री रामलक्ष्मणजी एवं श्रीमती उषा जी कुम्भट, जोधपुर, पूज्य पिताश्री मगराजजी कुम्भट की 18 वीं एवं भ्राता श्री महावीरराजजी कुम्भट की 13 वीं पुण्यतिथि पर स्मरणांजलि।

#### अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

- 11000/- श्री हुकमीचन्दजी किशोरकुमारजी डालकिया, चेन्नई, पुस्तक प्रकाशन में सहयोग।  
 11000/- श्रीमती कमलाजी मेहता, विजयवाड़ा (आन्ध्रप्रदेश), पुस्तक प्रकाशन में सहयोग।

1100/- श्री प्रवीणजी कर्नावट, मुम्बई, अपनी सुपुत्री सुश्री प्रेक्षा कर्नावट के सी.ए. उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में।

### श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री सुमनजी कोठारी धर्मपत्नी श्री विनयजी कोठारी, जयपुर, सुपौत्र विराज कोठारी (सुपुत्र श्री विवेकजी-श्रीमती प्रियंकाजी कोठारी) पडपौत्र श्री ज्ञानचन्दजी कोठारी की प्रथम वर्षगांठ के उपलक्ष्य में।

5000/- श्रीमती कमलाजी सिंघवी धर्मपत्नी श्री नरपतचन्दजी सिंघवी, जयपुर।

### गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

### दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

12000/- श्री सुखेन्द्रजी लोढ़ा सुपुत्र स्व. श्री किरोड़ीमलजी लोढ़ा, श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, मुम्बई।

12000/- श्री अमृतराजजी पारख, चेन्नई।

12000/- श्री अशोक जी हुण्डीवाल, जलगांव, श्री अंकित हुण्डीवाल सुपुत्र श्री अशोकजी हुण्डीवाल के सी.ए. बनने के उपलक्ष्य में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- **Sh. B. Budhmal Bohra, Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., Chennai-600101 (Mob. 9543068382)**

### भूल सुधार

माह फरवरी-2015 में गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के अन्तर्गत एक अर्थ सहयोगी का नाम "श्री आई.सी. सिंघवी, जोधपुर, श्रीमती रतनकंवरजी सिंघवी द्वारा अपने पति स्व. श्री रिखबचन्दजी सिंघवी की प्रथम पुण्य स्मृति में" पढ़ा जाये।

### आगामी पर्व

चैत्र कृष्णा 8 शनिवार	14.03.2015	भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 77 वां जन्मदिवस।
चैत्र कृष्णा 14 गुरुवार	19.03.2015	चतुर्दशी, पक्खी
चैत्र शुक्ला 8 शुक्रवार	27.03.2015	अष्टमी, आयम्बिल ओली प्रारम्भ
चैत्र शुक्ला 13 गुरुवार	02.04.2015	श्री महावीर जयन्ती
चैत्र शुक्ला 14 शुक्रवार	03.04.2015	चतुर्दशी, पक्खी
चैत्र शुक्ला 15, शनिवार	04.04.2015	आयम्बिल ओली पूर्ण
वैशाख कृष्णा 8, रविवार	12.04.2015	अष्टमी
वैशाख कृष्णा 14, शुक्रवार	17.04.2015	चतुर्दशी
वैशाख कृष्णा 30, शनिवार	18.04.2015	पक्खी
वैशाख शुक्ला 3, मंगलवार	21.04.2015	अक्षय तृतीया

## जयपुर में जैन छात्रों के लिए उच्च शिक्षा में प्रवेश हेतु स्वर्णिम अवसर, 9वीं कक्षा से प्रवेश प्रारम्भ

घटते संस्कार बढ़ते साधन के इस आधुनिक युग में नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों के साथ उच्च शैक्षणिक अध्ययन के लिए आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान संचालित है। यहाँ छात्रों के अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण एवं सुविधाएँ हैं। सर्वांगीण विकास के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जैसे- भाषण, प्रश्नोत्तरी, सेमिनार, इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, मोटिवेशनल कार्यक्रम, खेलकूद एवं धार्मिक अध्ययन के साथ प्राकृत-संस्कृत भाषा का ज्ञान। नियमित दिनचर्या, अनुशासन एवं कठोर परिश्रम के साथ संस्कारित व्यक्तित्व का निर्माण करना हमारा लक्ष्य है। विगत 41 वर्षों में सैकड़ों विद्यार्थी यहाँ अध्ययन कर वर्तमान में राजकीय, प्रशासनिक सेवाओं के उच्च पदों पर कार्यरत हैं। कई छात्र व्यावसायिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित रूप में कार्यरत हैं। कक्षा 9 से स्नातक (सभी विषय) एवं प्रोफेशनल शिक्षण, प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले चयनित छात्रों को प्रवेश दिए जाते हैं।

### प्रवेश-प्रक्रिया की नियमावली:-

1. संस्थान में प्रवेश का मुख्य आधार बालकों का प्रतिभाशाली एवं शैक्षणिक स्तर पर अच्छे अंक होना प्राथमिकता रखेगा।
2. कक्षा आठवीं उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यालय, महाविद्यालय के सभी विषयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रवेश सुविधा।
3. प्राप्त आवेदनों में से शैक्षणिक व आध्यात्मिक योग्यतानुसार चयनित छात्र ही प्रवेश हेतु साक्षात्कार में आमंत्रित किये जायेंगे।

### सुविधाएँ:-

1. संस्थान में अध्ययनानुकूल उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्था।
2. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स, मोटिवेशनल कक्षाएँ, सेमिनार, शैक्षणिक भ्रमण एवं विविध विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा अभिप्रेरणा एवं कार्यशालाओं का आयोजन।
3. सुसज्जित पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण की उत्तम व्यवस्था।
4. भाषण, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी का आयोजन एवं क्रिकेट, कैरम, बेडमिंटन आदि खेलों की सुविधाएँ।
5. विद्यार्थियों को स्कूल एवं महाविद्यालय के अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन अनिवार्य।
6. संस्थान द्वारा निर्धारित अन्य नियमों एवं उपनियमों का पालन अनिवार्य।

**फार्म प्राप्ति एवं अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-** आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यानपथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.), फोन: 0141-2710946, 094614-56489, ई-मेल : [ahassansthan@gmail.com](mailto:ahassansthan@gmail.com)

# अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचियें

## काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता है :-  
हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है। यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फूलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को प्रयाप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता है। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

## समर्पण हार्ट एण्ड हेल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन  
के पास, न्यू पावर हाऊस रोड, जोधपुर (राज.)

फोन : 2432525

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

सम्पर्क : धिरेन्द्र कुम्भट  
93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

- आचार्यश्री हस्ती



जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस  
खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

# पद्मावती

## डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा

09828582391

नरेश बोथरा

09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2556767



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान



अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

- आचार्य श्री हीरा

**C/o CHANANMUL UMEDRAJ  
BAGHMAR MOTOR FINANCE  
S. SAMPATRAJ FINANCIERS  
S. RAJAN FINANCIERS**

# 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,  
Mysore-570001 (Karnataka)

*With Best Compliments from :*

*C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan  
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar*

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)

Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों  
के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

## BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)  
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road  
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050  
Phone : 044-26245855/56

## BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)  
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021  
Phone : 044-45985577/88  
Mobile : 9940051841, 9444068666

## BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)  
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081  
**Maturachaiya Shelters,**  
Annanagar  
Mobile : 9884219949

## BHAGWAN CARS

Chennai - 600053  
Phone : 044-26243455/66



*With Best Compliments from :*



**Parasmal Suresh Kumar Kothari**

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,  
Sowcarpet, Chennai - 600079  
Phone : 044-25294466/25292727

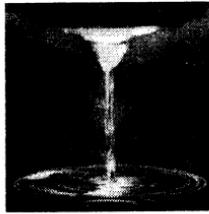
Gurudev



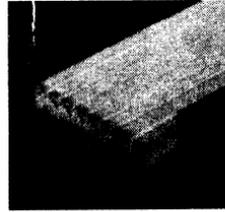
**SURANA**<sup>TM</sup>  
 — yes, the best —<sup>TM</sup> TMT RE-BARS



DRI Plant



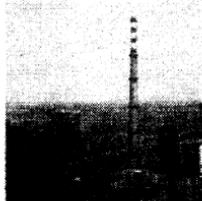
Electric Arc Furnace



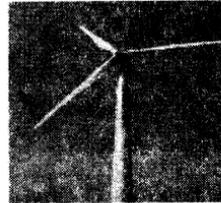
Billets



Rolling Mill



Captive Power Plant



Windmill

With best wishes from



**SURANA INDUSTRIES LIMITED**

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

# 29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines ) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: [steelmktg@suranaind.com](mailto:steelmktg@suranaind.com) / [www.surana.org.in](http://www.surana.org.in)

**STEEL | POWER | MINING**

॥ श्री महावीराय नमः ॥

हस्ती-हीरा जय जय !

हीरा-मान जय जय !



छोटा सा नियम धोवन का ।  
लाभ बड़ा इसके पालन का ॥

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008  
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण  
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार  
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,  
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.

एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

**OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS**

**PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD**

690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056

Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273



**MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD**

**GURU HASTI THANGA MAALIGAI**

(JEWELLERS & BANKERS)

5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056

Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान



**प्यास बुझाये, कर्म कटाये  
फिर क्याँ न अपनायें  
धोवन पानी**

## **Narendra Hirawat & Co.**

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,  
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707  
Opera House Office : 022-23669818  
Mobile : 09821040899



गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

# आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

## अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

॥ पूण्यार्जन का सुनहरा अवसर ॥

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है -

### आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

#### सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य  
( 5 लाख रुपये प्रति वर्ष )

स्वर्ण स्तम्भ सदस्य  
( 1 लाख रुपये प्रति वर्ष )

रजत स्तम्भ सदस्य  
( 50 हजार रुपये प्रति वर्ष )

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा। जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थसहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए बैंक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund

A/c No. 168010100120722

Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168  
PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची -

हीरक स्तम्भ सदस्य ( 5 लाख रुपये प्रति वर्ष )	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य ( 1 लाख रुपये प्रति वर्ष )	रजत स्तम्भ सदस्य ( 50 हजार रुपये प्रति वर्ष )
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारल श्री हरीशजी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् राजीव जी डगा, ह्युस्टन। श्रीमती नीता जी डगा, ह्युस्टन। श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा, जोधपुर। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेशजी कवाड़, पूनामल्लई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजेशजी विमलजी पवनजी बोहरा, चैन्नई।	श्रीमान् गणपतजी हेमन्तजी बाघमार, चैन्नई।

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.Budhmal Bohra - Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., CHENNAI-600101 (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें- मनीष जैन, चैन्नई (Mob.095430 68382)

जय गुरु हीरा

जय गुरु हस्ती

जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।

- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

**हम :**

चौबीसों तीर्थकरों के चरण  
कमलों पर मस्तक रखते हैं

और

विनम्रता तथा गौरव के साथ

जाहिर करते हैं कि

“जिनवाणी” के

उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में

हमारा सहर्ष

सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,

सौ. हेमलता मदन सांखला

मेहुल मदन सांखला

सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और

बेबी बुणम मेहुल सांखला



*Jai Guru Heera**Jai Guru Hasti**Jai Guru Maan*

शाश्वत सुख के लिए प्रतिफल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं।  
ये जीव साधक भी हो सकते हैं और श्रावक भी।  
- आचार्य श्री हीरा



# BHANSALI GROUP

*Dhanpatraj V. Bhansali*

## BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,  
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057  
Tel. : (O) 26185801 / 32940462  
E-MAIL : [bhansalidevelopers@yahoo.com](mailto:bhansalidevelopers@yahoo.com)

# DOING UP INTERIORS OF YOUR HOME OR OFFICE?

आपका फर्निचर बताता है आप कौन हैं! और कैसे जीते हैं!

शानदार अर्बन-चिक या धिंक चक चुनिए  
विश्व के सामने अपना व्यक्तित्व प्रकट कीजिए

बड़े सपने देखिए  
अपने घर, ऑफिस या फ़ार्महाउस के लिए  
आकर्षक इंटीरियर ख़रीदिए  
सिर्फ़ आधे दामों पर

Welcome To China



World's Largest Manufacturer of Interior Materials

- ▶ Anyone can now import directly from China. In fact, many of the leading brands from all over the world are importing their materials from China and selling it to you at highly marked up prices.
- ▶ Smart people are going directly to China with a reliable partner like Ushakha Overseas Inc. to get the benefits of this price difference.



USHAKHA OVERSEAS INC.,

INDIA  
+91 7299963102  
ashwin.uol@gmail.com

CHINA  
+86 15112949705  
abhi.uol@gmail.com

CANADA  
+1 6479613353  
uolcanada@gmail.com



Floorings | Furniture | Lightings | Hardware | Sanitaryware | Furnishings | Decorative Artefacts

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17  
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 मार्च, 2015  
वर्ष : 73 ★ अंक : 03 ★ मूल्य : 10 रु.  
डाक प्रेषण तिथि 10 मार्च, 2015 ★ चैत्र, 2071

 KALPARA-TARPU®



Artist's impression

**waterfront**

at KALPARU  
**river**side  
PANVEL

**Premium 2 & 3 BHK residences**

☎ 022 3064 3065

Promoters: M/S Kalparatu + Sharyans

Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. | Head Office: 101, Kalparatu Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: +91 22 3064 3065 | Fax: +91 22 3064 3131 | Email: sales@kalparatu.com | visit: www.kalparatu.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited.

The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्पत्तिसूचना प्रकाशक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द ड्राग द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जोहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्पत्तिसूचना प्रकाशक मण्डल, शांति नं. 182 के ऊपर, वापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन